छात्रोपयोगी सहायक सामग्री

कक्षा 10

हिन्दी

सत्रः 2019–20

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

STUDENT SUPPORT MATERIAL

CLASS – X

HINDI (हिन्दी)

SESSION : 2019 – 20

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
NEW DELHI

छात्रोपयोगी सहायक सामग्री

कक्षा - X

हिन्दी

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सत्र 2019 - 20

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नई दिल्ली

संतोष कुमार मल्ल, भा.प्र.से.
आयुक्त
Santosh Kumar Mall, I.A.S.
Commissioner

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
18,संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110018
दूरभाष :91-11-26512579, फैक्स: 91-11-26852680
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016 (India)
Tel:91-11-26512579, Fax:91-1126852680
E-mail : commissioner@kvsedu.org, Website: www.kvsangathan.nic.in

A WORD TO MY DEAR STUDENTS

It gives me great pleasure in presenting the Students' Support Material to all KV students of class X. The material has been prepared keeping in mind your needs when you are preparing for final exams and wish to revise and practice questions or when you want to test your ability to complete the question paper in the time allotted or when you come across a question while studying that needs an immediate answer but going through the text book will take time or when you want to revise the complete concept or idea in just a minute or try your hand at a question from a previous CBSE Board exam paper or the Competitive exam to check your understanding of the chapter or unit you have just finished. This material will support you in any way you want to use it.

A team of dedicated and experienced teachers with expertise in their subjects has prepared this material after a lot of exercise. Care has been taken to include only those items that are relevant and are in addition to or in support of the text book. This material should not be taken as a substitute to the NCERT text book but it is designed to supplement it.

The Students' Support Material has. all the important aspects required by you; a design of the question paper, syllabus, all the units/chapters or concepts in points, mind maps and information in tables for easy reference, sample test items from every chapter and question papers for practice along with previous years Board exam question papers.

I am sure that the Support Material will be used by both students and teachers and I am confident that the material will help you perform well in your exams.

Happy learning!

28/10

Santosh Kumar Mall
Commissioner, KVS

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
18,संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110018
दूरभाष :91-11-26512579, फैक्स: 91-11-26852680
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016 (India)
Tel:91-11-26512579, Fax:91-1126852680
E-mail : commissioner@kvsedu.org, Website: www.kvsangathan.nic.in

FOREWORD

The Students' Support Material is a product of an in-house academic exercise undertaken by our subject teachers under the supervision of subject expert at different levels to provide the students a comprehensive, yet concise, learning support tool for consolidation of your studies. It consists of lessons in capsule form, mind maps, concepts with flow charts, pictorial representation of chapters wherever possible, crossword puzzles, question bank of short and long answer type questions with previous years' CBSE question papers.

The material has been developed keeping in mind latest CBSE curriculum and question paper design. This material provides the students a valuable window on precise information and it covers all essential components that are required for effective revision of the subject.
In order to ensure uniformity in terms of content, design, standard and presentation of the material, it has been fine tuned at KVS HQRS level.

I hope this material will prove to be a good tool for quick revision and will serve the purpose of enhancing students' confidence level to help them perform better. Planned study blended with hard work, good time management and sincerity will help the students reach the pinnacle of success.

Best of Luck

U.N. Khaware
Additional Commissioner (Acad.)

Hindi

STUDENT SUPPORT MATERIAL

ADVISORS

Shri Santosh Kumar Mall, IAS, Commissioner,
KVS (HQ), New Delhi

Shri Saurabh Jain, IAS
Additional. Commissioner (Admn.)
KVS (HQ), New Delhi.

Shri U.N Khaware,
Additional. Commissioner (Acad.)
KVS (HQ), New Delhi.

CO-ORDINATION TEAM KVS (HQ)

- Dr. E. Prabhakar, Joint Commissioner (Training/Finance) KVS (HQ), New Delhi.
- Smt. Indu Kaushik, Deputy Commissioner (Acad.), KVS (HQ), New Delhi.
- Shri Ravindra Kumar Sharma, Assistant Education Officer, KVS (HQ), New Delhi.

CONTENT TEAM

- श्री सुशील कुमार , परास्नातक शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय क.-01, पटियाला
- श्रीमती माया देवी, परास्नातक शिक्षक (हिन्दी) के. वि. क्र.-01 अम्बाला छावनी
- डॉ. केशव दे परास्नातक शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय के॰रि॰पु॰ बल, पिंजौर
- श्रीमती सरोज वर्मा मौर्य, प्र.स्ना.शिक्षक (हिन्दी), के. वि. क्र.-02, डी.एम.डब्ल्यू पटियाला
- श्री वीना डोगरा,प्र.स्ना.शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय, हाई ग्राउंड चंडीगढ़
- श्री पी.डी. गोयल, प्र.स्ना.शिक्षक (हिन्दी) केन्द्रीय विद्यालय क्र.-1, चंडीमंदिर छावनी

REVIEW TEAM

- श्रीमती अरुणा प्रेमभल्ला, उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन, मुंबई संभाग
- श्री एस॰ पी॰ पाटिल, सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन , मुंबई संभाग
- डॉ॰ हृदय नारायण उपाध्याय , स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी, के॰ वि॰ 9 बी॰आर॰डी॰ पुणे
- श्री चंद्रभूषण आलोक, स्नातकोत्तर शिक्षक, हिन्दी, के॰ वि॰ क्र॰-2 एयर फोर्स पुणे
- श्रीमती नलिनी ओझा, प्र॰ स्ना॰ शिक्षिका , हिन्दी , के॰ वि॰ 9 बी॰आर॰डी॰ पुणे
- श्रीमती विद्युलता भाग्यवन्त, प्र॰ स्ना॰ शिक्षिका , हिन्दी , के॰ वि॰ क्र॰-1 एयर फोर्स पुणे

Typing, Type-setting & Designing
M/s Choudhary Printing Press
Near Mohanpur Devi Asthan, Punaichak, Patna
Mob.: 0943096087, 09835492012 T/F: 0612-2546751
E-mail: choudharyprintingpress@gmail.com

अनुक्रमणिका [विषय सूची]

क्रम संख्या	**विषयवस्तु**	**पृष्ठ संख्या**
01.	प्रस्तावना [संदेश आयुक्त और अपर आयुक्त]	1 - 4
02.	अनुक्रमणिका	5
03.	परीक्षा हेतु अंक विभाजन	6
04.	अपठित गद्यान्श	7 - 10
05.	अपठित पद्यान्श	11 - 13
06.	व्याकरण का प्रस्तुतीकरण एवं उदाहरण	14 - 21
	पाठ्य - पुस्तक एवं पूरक पुस्तक पर आधारित	
07.	पाठों का संक्षिप्त सारांश	21 - 26
08.	पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतीकरण, अभ्यास और प्रश्नोत्तर	26 - 62
	रचनात्मक लेखन	
09.	निबंध-लेखन	63 - 68
10.	पत्र-लेखन	68 - 72
11.	विज्ञापन	72 - 74
12.	प्राय: पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्न (प्रश्न-कोश)	75 - 80
13.	प्रश्न - पत्र प्रारूप , आदर्श प्रश्नपत्र	81 - 91

परीक्षा हेतु अंक विभाजन

		विषय वस्तु	उपभार	कुल भार
1		पठन कौशल गदयांश व काव्यान्श पर शीर्षक का चुनाव , विषय वस्तु का बोध , भाषिक बिन्दु / संचरना आदि पर अति लघूत्तरात्मक प्रश्न		15
	(अ)	एक अपठित गदयांश (100 से 150 शब्द) (1X 2 = 2) (2 X 3 = 6)	8	
	(ब)	एक अपठित काव्यान्श (100 से 150 शब्द) (1X 3 = 3) (2 X 2 = 4)	7	
2		व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विविध प्रश्न (1 x 15 = 15)		15
	1	रचना के आधार पर वाक्य भेद (3)	3	
	2	वाच्य (4 अंक)	4	
	3	पद परिचय (4 अंक)	4	
	4	रस (4 अंक)	4	
3		पाठ्य पुस्तक क्षितिज भाग 2 और पूरक पाठ्य पुस्तक कृतिका भाग 2		
	(अ)	गद्य खंड	13	26
	1	क्षितिज के पाठों से गदयांश पर आधारित बोध / भाषिक बिन्दु / संरचना पर प्रश्न (2+2+1)	5	
	2	क्षितिज के गद्य पाठों के आधार पर चिंतन मनन क्षमताओं के आकलन हेतु प्रश्न (2x4= 8)	8	
	(ब)	काव्य खंड	13	
	1	काव्य बोध एवं काव्य पर स्वयं की सोच की परख हेतु प्रश्न (2+2+1=5)	5	
	2	कविताओं के आधार पर काव्य बोध के परख हेतु प्रश्न (2x4=8)	8	
	स	पूरक पाठ्य पुस्तक कृतिका भाग 2		
		मूल्य परख 4 अंक का प्रश्न कृतिका से पूछा जाएगा	4	4
4		लेखन		20
	(अ)	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर तर्क संगत विचार की परख हेतु संकेत बिन्दुओं पर आधारित (200 से 250) शब्दों का निबंध (10x1=10)	10	
	(ब)	औपचारिक एवं अनौपचारिक विषयों मे से किसी एक विषय पर पत्र लेखन (5 x 1 = 5)	5	
	(स)	25 से 50 शब्दो के अंतर्गत एक विज्ञापन लेखन (5 x 1 = 5)	5	
		कुल		80

अपठित गदयांश

‘अपठित’ का अर्थ होता है कि जो पढ़ा नहीं गया हो, अर्थात जो पाठ्य पुस्तक से नहीं लिया गया हो । इसके अंतर्गत गदयांश और कावयांश दोनों होते हैं। इनसे संबन्धित प्रश्न छात्रों की समझ एवं उनके ज्ञान-क्षेत्र विस्तार के आकलन हेतु किया जाता है। इससे छात्रों की अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है ।

छात्रोपयोगी निर्देश

अपठित गदयांश और पदयांश पर आधारित प्रश्न को हल करते समय छात्रों को अधोलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

1 - दिये गए गदयांश और पद्यान्श को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।

2 - पढ़ते समय दिए गए प्रश्नों को ध्यान में रखें ।

3 - उत्तर की भाषा सरल एवं संक्षिप्त होनी चाहिए ।

4 - उत्तर जितना अपेक्षित हो उतना ही लिखें ।

5 - उत्तर पूर्ण वाक्यों में दीजिए ।

अपठित गदयांश

(1)

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

संसार में दो अचूक शक्तियाँ हैं—वाणी और कर्म । कुछ लोग वचन से संसार को राह दिखाते हैं और कुछ लोग कर्म से । शब्द और आचार दोनों ही महान शक्तियाँ हैं । शब्द की महिमा अपार है । विश्व में साहित्य, कला, विज्ञान, शास्त्र सब शब्द-शक्ति के प्रतीक प्रमाण हैं । पर कोरे शब्द व्यर्थ होते हैं, जिनका आचरण नहीं होता । कर्म और व्यवहार के बिना कोई भी वचन, सिद्ध और सार्थक नहीं है ।

निस्संदेह शब्द शक्ति महान है, पर चिरस्थाई सनातनी शक्ति तो व्यवहार है । महात्मा गाँधी ने इन दोनों की कठिन और अद्भुत साधना की थी । महात्मा जी का जीवन इन दोनों से युक्त था । वे वाणी और व्यवहार में एक थे । जो कहते थे वही करते थे । यही उनकी महानता का रहस्य था । कस्तूरबा ने शब्द की अपेक्षा कृति की उपासना की थी क्योंकि कृति का उत्तम व चिरस्थाई प्रभाव होता है । कस्तूरबा ने कोरी शाब्दिक, शास्त्रीय, सैद्धांतिक शब्दावली नहीं सीखी थी । वे तो कर्म की उपासिका थी । उनका विश्वास शब्दों की अपेक्षा कर्म में अधिक था । वे जो कहती थी उसे पूरा करती थी ।

(क) सज्जन व्यक्ति संसार के लिए क्या करते हैं? 2

(ख) गाँधी जी महान क्यों थे ? 2

(ग) संसार की कौन सी अचूक शक्तियाँ हैं ? 2

(घ) ‘निस्संदेह’ और ‘चिरस्थाई’ का क्या अर्थ है? 1

(च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

उत्तर

(क) सज्जन व्यक्ति संसार के लिए क्या करते हैं ? **2**

उत्तर - सज्जन व्यक्ति संसार को राह दिखाते हैं किंतु वे सिर्फ शब्दों का नहीं बल्कि आचरण का व्यवहार करते हैं । क्योंकि कर्म के बिना वचन सार्थक नहीं है ।

(ख) गाँधी जी महान क्यों थे ? **2**

उत्तर - गांधीजी महान इस कारण थे क्योंकि उन्होंने शब्द एवं आचरण दोनों की कठिन और अद्भुत साधना की थी उनका जीवन इन दोनों से युक्त था । वे वाणी और व्यवहार में एक जैसे थे।

(ग) संसार की कौन सी अचूक शक्तियाँ हैं ? **2**

उत्तर - संसार में दो अचूक शक्तियाँ हैं -वाणी और कर्म । किंतु कर्म के बिना या आचरण के बिना वाणी व्यर्थ है । दोनों के साहचर्य में ही सार्थकता निहित है ।

(घ) 'निस्संदेह' और 'चिरस्थाई' का क्या अर्थ है? **1**

उत्तर - निस्संदेह का अर्थ है 'बिना संदेह के' और चिरस्थाई का अर्थ है 'हमेशा के लिए स्थायी'

(च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए- **1**

उत्तर - वाणी और कर्म की एकता

[2]

प्रश्न 1 निम्नलिखित अपठित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

भिखारी की भांति गिड़गिड़ाना प्रेम की भाषा नहीं है । यहाँ तक कि मुक्ति के लिए भगवान की उपासना करना भी अधम उपासना में गिना जाता है । प्रेम कोई पुरस्कार नहीं चाहता । प्रेम में आतुरता नहीं होती । प्रेम सर्वथा प्रेम के लिए ही होता है । भक्त इसलिए प्रेम करता है कि बिना प्रेम किए वह रह नहीं सकता । जब हम किसी मनोहर प्राकृतिक दृश्य को देखकर उस पर मुग्ध हो जाते हैं तो उस दृश्य से हम किसी फल की याचना नहीं करते और न ही वह दृश्य ही हम से कुछ चाहता है ; तो भी वह दृश्य हमें बड़ा आनंद देता है । वह हमारे मन को पुलकित और शांत कर देता है । और हमें साधारण सांसारिकता से ऊपर उठाकर एक स्वर्गीय आनंद से सराबोर कर देता है इसलिए प्रेम के बदले कुछ मांगना प्रेम का अपमान करना है । प्रेम करना नंगी तलवार की धार पर चलने जैसा है क्योंकि स्वार्थ के लिए तो सभी प्रेम करते हैं, उसे निभाते नहीं । वे पाना चाहते हैं, देना नहीं । वे वस्तुतः प्रेम शब्द को कलंकित करते हैं ।

(क) भिखारी की भाषा और प्रेम की भाषा में क्या अंतर है ? **2**

(ख) भक्त ईश्वर से प्रेम क्यों करता है **2**

(ग) प्रेम में आतुरता होने से क्या अभिप्राय है ? **2**

(घ) प्रेम को तलवार की धार पर चलने के समान क्यों बताया गया है ? **1**

(ङ) कैसे लोग प्रेम को कलंकित करते हैं ? 1

उत्तर

(क) भिखारी की भाषा और प्रेम की भाषा में क्या अंतर है ? 2

उत्तर - भिखारी की भाषा में गिड़गिड़ाना अनिवार्य तत्व है। इसके अतिरिक्त उसमें आतुरता एवं पुरस्कार प्राप्त करने की इच्छा भी होती है। इसके विपरीत प्रेम की भाषा में न तो गिड़गिड़ाना होता है ना ही आतुरता और ना ही पुरस्कार की चाहत।

(ख)भक्त ईश्वर से प्रेम क्यों करता है ? 2

उत्तर - भक्त ईश्वर से प्रेम इसलिए करता है क्योंकि बिना प्रेम किए वह रह नहीं सकता उसे ईश्वर के प्रति प्रेम में ही अपने जीवन की सार्थकता नजर आती है

(ग) प्रेम में आतुरता होने से क्या अभिप्राय है ? 2

उत्तर - प्रेम में आतुरता होने का अभिप्राय है प्रेम में प्रतिदान शीघ्र पाने की इच्छा ।

(घ) प्रेम को तलवार की धार पर चलने के समान क्यों बताया गया है ? 1

उत्तर - प्रेम को तलवार की धार पर चलने के समान इसलिए बताया गया है क्योंकि प्रेम स्वार्थ से रहित होता है।लोग स्वार्थ के लिए तो प्रेम करते हैं परंतु उसे निभाते नहीं, वे पाना चाहते हैं देना नहीं ।

(ङ) कैसे लोग प्रेम को कलंकित करते हैं ? 1

उत्तर - वे लोग प्रेम को कलंकित करते हैं जो स्वार्थ से युक्त होकर शीघ्र ही पाने की इच्छा रखते हैं देने की नहीं ।

[3]

प्रश्न 1 - निम्नलिखित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

मनुष्य नाशवान प्राणी है | वह जन्म लेने के बाद मरता अवश्य है | अन्य लोगों की भांति महापुरुष भी नाशवान हैं | वे भी समय आने पर अपना शरीर छोड़ देते हैं, पर वे मरकर भी अमर हो जाते हैं | वे अपने पीछे छोड़े गए कार्यों के कारण अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं | उनके ये कार्य चिरस्थाई होते हैं और समय के साथ-साथ परिणाम और बल में बढ़ते जाते हैं | ऐसे कार्य के पीछे जो उच्च आदर्श होते हैं वे चिरस्थाई होते हैं जो बदली परिस्थितियों में नए वातावरण के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं | संसार ने पिछले पच्चीस शताब्दियों से भी अधिक में जितने भी महापुरुषों को जन्म दिया है, उनमें गांधीजी को आज महान माना जाता है और भविष्य में उन्हें सबसे बड़ा माना जाएगा क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की गतिविधियों को विभिन्न भागों में नहीं बांटा, बल्कि जीवनधारा को सदा एक और अविभाज्य माना | जिन्हें हम सामाजिक, आर्थिक और नैतिक के नाम से पुकारते हैं, वे वास्तव में उसी एक धारा की उपधाराएँ हैं | गांधीजी ने मानव-जीवन के इस नए विचार की व्याख्या न किसी हृदय

को स्पर्श करने वाले वीरकाव्य की भांति की और न किसी दार्शनिक महाकाव्य की भांति ही | उन्होंने केवल साध्य को ही महत्त्व नहीं दिया, बल्कि उस साध्य को पूरा करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों का भी ध्यान रखा | साध्य के साथ-साथ उसकी पूर्ति के लिए अपनाए गए साधन भी उपयुक्त होने चाहिए |

(क) सामान्य पुरुष और महापुरुष में क्या अंतर है ? **2**

(ख) गाँधीजी ने मानव जीवन की व्याख्या किस प्रकार की है ? **2**

(ग) साधन और साध्य के विषय में गाँधीजी के क्या विचार थे ? **2**

(घ) उचित शीर्षक दीजिए? **1**

(ङ) संयुक्त वाक्य बनाइए- **1**

वे अपने पीछे छोड़े गए कार्य के कारण अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं |

उत्तर

(क) सामान्य पुरुष और महापुरुष में क्या अंतर है? 2

उत्तर - सामान्य पुरुष और महापुरुष दोनों ही नाशवान होते हैं किंतु सामान्य पुरुष से विपरीत महापुरुष कुछ ऐसे कार्य कर कर शरीर छोड़ते हैं जो उनके बाद अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं । यह ऐसे कार्य होते हैं जिनके पीछे उच्च आदर्श होते हैं और वे चिरस्थाई होते हैं ।

(ख) गाँधीजी ने मानव जीवन की व्याख्या किस प्रकार की है? 2

उत्तर - गांधीजी ने मानव जीवन को समग्रता में देखा है उन्होंने उसे सामाजिक आर्थिक और नैतिक उपधाराओं में नहीं बांटा । उनके दृष्टिकोण में मानव जीवन में उचित कार्य के प्रति निष्ठा ,ध्येय की पूर्ति के लिए सेवा और किसी विचार के प्रति समर्पण आवश्यक है ।

(ग) साधन और साध्य के विषय में गाँधीजी के क्या विचार थे ? 2

उत्तर - गांधीजी ने साधन और साध्य दोनों को शुभ एवं उपयुक्त होने की बात कही है ।उनके अनुसार साध्य को पूरा करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए । इस प्रकार उन्होंने सदा साध्य को ही महत्त्व नहीं दिया बल्कि साधन पर भी उतना ही बल दिया है ।

(घ) उचित शीर्षक दीजिए? 1

उत्तर - गांधी का जीवन दर्शन या साधन एवं साध्य का महत्व

(ङ) संयुक्त वाक्य बनाइए- 1

उत्तर - वे अपने पीछे कार्य छोड़कर गए इसलिए अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं ।

अपठित काव्यान्श

[1] निम्न लिखित काव्यांश को पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

रोटी उसकी, जिसका अनाज, जिसकी ज़मीन, जिसका श्रम है;
अब कौन उलट सकता स्वतंत्रता का सुसिद्ध, सीधा क्रम है।
आज़ादी है अधिकार परिश्रम का पुनीत फल पाने का,
आज़ादी है अधिकार शोषणों की धज्जियाँ उड़ाने का।
गौरव की भाषा नई सीख, भिखमंगों की आवाज़ बदल,
सिमटी बाँहों को खोल गरुड़, उड़ने का अब अंदाज बदल।
स्वाधीन मनुज की इच्छा के आगे पहाड़ हिल सकते हैं;
रोटी क्या? ये अंबर वाले सारे सिंगार मिल सकते हैं।

(क) आज़ादी क्यों आवश्यक है ? **2**

(ख) सच्चे अर्थों में रोटी पर किसका अधिकार है ? **2**

(ग) कवि व्यक्ति को क्या परामर्श देता है ? **1**

(घ) आज़ाद व्यक्ति क्या कर सकता है ? **1**

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के आशय बताइए---- सिंगार, अंबर **1**

उत्तर

(क) आज़ादी क्यों आवश्यक है? 2

उत्तर - आजादी इसलिए आवश्यक है ताकि लोग अपने परिश्रम के अनुरूप फल प्राप्त कर सके एवं शोषण की तमाम गतिविधियों को समाप्त कर सकें ।

(ख) सच्चे अर्थों में रोटी पर किसका अधिकार है? 2

उत्तर - सच्चे अर्थों में रोटी पर उसी का अधिकार है जिसने अपने श्रम के द्वारा जमीन से अनाज का उत्पादन किया है ।

(ग) कवि व्यक्ति को क्या परामर्श देता है? 1

उत्तर - कवि व्यक्ति को परामर्श देता है कि वह अपनी गौरव की भाषा सीखे एवं भिखमंगों की भाँति गिड़गिड़ाना बंद कर दे ।

(घ) आज़ाद व्यक्ति क्या कर सकता है? 1

उत्तर -आजाद व्यक्ति अपनी इच्छा के दम पर अपने जीवन में आए तमाम समस्याओं का समाधान कर अपने फल की प्राप्ति कर सकता है ।

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के आशय बताइए---- सिंगार, अंबर 1

उत्तर - 'सिंगार' का आशय है 'सभी सुख सुविधाएँ' एवं 'अंबर' अर्थात 'आसमान' जिसका आशय है ऊँची एवं बड़ी ।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

हँसा ज़ोर से जब, तब दुनिया
बोली - इसका पेट भरा है।
और फूटकर रोया जब,
तब बोली - नाटक है, नखरा है।
जब गुमसुम रह गया, लगाई
तब उसने तोहमत घमंड की।
कभी नहीं वह समझी इसके
भीतर कितना दर्द भरा है।
दोस्त कठिन है यहाँ किसी को भी
अपनी पीड़ा समझाना
दर्द उठे, तो सूने पथ पर
पाँव बढ़ाना, चलते जाना।

(क) जब कवि गुमसुम रह गया तो उस पर क्या आरोप लगाया गया **?** **2**
(ख) दुनिया कवि के हृदयगत भावों को क्यों नहीं समझ सकी **?** **2**
(ग) जब कवि हँसा तो दुनिया ने क्या कहा **?** **1**
(घ) जब कवि रोया तो उसे लोगों ने क्या कहा **?** **1**
(ङ) सूने पथ पर पाँव बढ़ाना का क्या अर्थ है ? **1**

उत्तर

(क) जब कवि गुमसुम रह गया तो उस पर क्या आरोप लगाया गया ? **2**

उत्तर - जब कवि गुमसुम रह गया तो उस पर यह आरोप लगाया गया कि वह अत्यंत घमंडी है ।

(ख) दुनिया कवि के हृदयगत भावों को क्यों नहीं समझ सकी ? **2**

उत्तर - दुनिया कवि के हृदयगत भावों को इसलिए नहीं समझ सकी क्योंकि दुनिया के लोग अपनी -अपनी जिंदगी में व्यस्त है । इसके साथ ही अपनी पीड़ा को दूसरों को समझाना अत्यधिक कठिन कार्य है ।

(ग) जब कवि हँसा तो दुनिया ने क्या कहा ? **1**

उत्तर - जब कवि हँसा तो दुनिया ने यह कहा कि इसका पेट भरा है इसीलिए यह खुशी से हँस रहा है ।

(घ) जब कवि रोया तो उसे लोगों ने क्या कहा ? **1**

उत्तर - जब कवि रोया तो उसे लोगों ने यह कहा कि इसका रोना एक नाटक है ,नखरा है । यह सिर्फ दिखाने के लिए रो रहा है ।

(ङ) सूने पथ पर पाँव बढ़ाना-का क्या अर्थ है ? **1**

उत्तर - सूने पथ पर पाँव बढ़ाना का अर्थ है अकेले ही अपने सुख एवं दुख के साथ जीवन के रास्ते पर अग्रसर होना ।

[3]

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

मानता हूँ भूल हुई खेद मुझे इसका
सौंपे वही कार्य उसे धार्य हो जो जिसका
मानता हूँ और सब, पर हार नहीं मानता
अपनी अगति नहीं आज भी मैं जानता
गिरना क्या उसका उठा ही नहीं जो कभी ?
मैं ही तो उठा था, गिरता हूँ जो अभी
फिर भी उठूँगा और बढ़के रहूँगा मैं
नर हूँ पुरुष हूँ मैं चढके रहूँगा मैं |
तन जिसका हो मन और आत्मा मेरा
चिंता नहीं बाहर उजेला या अँधेरा है |
चलना मुझे है, बस अंत तक चलना ,
गिरना ही मुख्य नहीं मुख्य है संभलना |

(क) वक्ता क्या मानने को तैयार नहीं है ? **2**

(ख) किसका गिरना अधिक चिंताजनक है ? **2**

(ग) वक्ता के अनुसार वह क्या है और वह क्या करके रहेगा ? **1**

(घ) कवि गिरने और संभलने से क्या भाव व्यक्त करना चाहता है ? **1**

(ङ) अंत तक चलना-का अर्थ स्पष्ट कीजिए | **1**

उत्तर

(क) वक्ता क्या मानने को तैयार नहीं है ? **2**

उत्तर - वक्ता जीवन में आयी समस्याओं के सामने हार मानने को तैयार नहीं है। वक्ता को अपनी असमर्थता स्वीकार करना मान्य नहीं है ।

(ख) किसका गिरना अधिक चिंताजनक है ? **2**

उत्तर- उन व्यक्तियों का गिरना अधिक चिंताजनक है जो समस्याओं के सामने गिर कर अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं और वे उठने की कोशिश नहीं करते ।

(ग) वक्ता के अनुसार वह क्या है और वह क्या करके रहेगा ? **1**

उत्तर - वक्ता के अनुसार वह पुरुषार्थ से भरा हुआ व्यक्ति है इसलिए वह समस्याओं के समक्ष अपनी हार स्वीकार नहीं करेगा बल्कि वह पुनः उठकर उनका सामना करेगा ।

(घ) कवि गिरने और संभलने से क्या भाव व्यक्त करना चाहता है ? **1**

उत्तर - कवि गिरने से यह भाव व्यक्त करना चाहता है कि जीवन में अनेक समस्याएँ आती है जिनके सामने हम सफल नहीं हो पाते । दूसरी ओर कभी संभलने से यह भाव व्यक्त करना चाहता है कि हमें पुनः अपनी उर्जा को संकेंद्रित कर उन समस्याओं का सामना करना चाहिए ।

(ङ) अंत तक चलना-का अर्थ स्पष्ट कीजिए | **1**

उत्तर - अंत तक चलना का अर्थ है जीवनपर्यंत समस्याओं का सामना करते हुए चुनौतियों का सामना करते हुए जीवन जीना ।

व्याकरण - पद परिचय

“शब्द” भाषा की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है और यही शब्द जब वाक्यों में प्रयुक्त हो जाते हैं तो पद कहलाते हैं । इन पदों के विषय में विस्तार से जानना अर्थात इनका व्याकरणिक परिचय देना पद परिचय कहलाते है।

जैसे - **छात्र** पत्र **लिख रहा है**।

उदाहरण -

1. रमेश यहाँ तीसरे बंगले में रहता था ।

रमेश - संज्ञा व्यक्तिवाचक, कर्ता करक, एकवचन, पुल्लिंग,
यहाँ - अव्यय ,स्थानवाचक क्रिया विशेषण ,
तीसरे - विशेषण संख्यावाचक, बंगले -विशेष्य ,एकवचन, पुल्लिंग , क्रमसूचक ,
बंगले में - संज्ञा जातिवाचक, अधिकरण कारक, एकवचन, पुल्लिंग,
रहता था - क्रिया अकर्मक , पुल्लिंग एकवचन , भूतकाल

2. वे घर पहुँचे तो माला पढ़ रही थी ।

वे - सर्वनाम पुरुषवाचक, अन्य पुरुष कर्ता , बहुवचन , पुल्लिंग
घर - संज्ञा जातिवाचक , पुल्लिंग , एकवचन, कर्म कारक।
पढ़ रही थी - क्रिया अकर्मक ,एकवचन, स्त्रीलिंग, भूतकाल , कर्तृवाच्य

3. दौड़कर जाओ और बाजार से कुछ ले आओ ।

दौड़कर - पूर्व कालिक क्रिया रीतिवाचक क्रिया विशेषण,
और - समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय पद
बाजार से - संज्ञा जातिवाचक , एकवचन, पुल्लिंग,अपादान कारक
कुछ - अनिश्चयवाचक सर्वनाम ,पुल्लिंग , एकवचन,कर्मकारक

4. मीरा वहाँ पाँचवी कक्षा में पढ़ती है ।

मीरा - संज्ञा व्यक्तिवाचक, कर्ता कारक , स्त्रीलिंग , एकवचन
पाँचवी - विशेषण संख्यावाचक, क्रमसूचक , एकवचन स्त्रीलिंग
कक्षा में - संज्ञा जातिवाचक , अधिकरण कारक , एकवचन , स्त्रील्लिंग
पढ़ती है - अकर्मक क्रिया , एकवचन , स्त्रीलिंग

5. हम बाग में गए परन्तु वहाँ कोई आम नहीं मिला ।

हम - सर्वनाम पुरुषवाचक उत्तम ,पुरुष कर्ता ,पुल्लिंग ,बहुवचन ,
परन्तु - व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय पद
बाग में - संज्ञा , जातिवाचक,एक वचन, पुल्लिंग, अधिकरण कारक
नहीं - रीतिवाचक क्रिया विशेषण मिला क्रिया का दिशा निर्देशन ,
कोई - सार्वनामिक विशेषण ,पुल्लिंग एकवचन , विशेष्य -आम

अभ्यास

रेखांकित पदों का परिचय लिखिए -

1. हम अपने देश पर मर मिटेंगे ।
2. प्रतिदिन राष्ट्रीय ध्वज विद्यालय में फहराया जाता है ।
3. इतने में दो प्राणियों का पेट भर जाता है।
4. वहाँ कौन बैठा है ।
5. मैं भोजन पका रही हूँ ।
6. मैं उसे कानपुर में मिलूँगा ।
7. वह धीरे -धीरे बोल रहा था ।
8. सैनिक बहुत बहादुर था ।
9. अच्छा ! तो यह बात हुई ।
10. यह पुस्तक मेरे छोटे भाई की है ।
11. मुझे पढ़ना था ,इसलिए मैं बाजार नहीं गई ।
12. वह पिताजी के साथ जाने वाला था ।
13. मेरी बहन नौवीं कक्षा में पढ़ता है ।
14. वीर सैनिक अपनी वीरता का प्रदर्शन युद्ध भूमि में करता है ।
15. मैंने अपने पिता जी को पत्र लिखा ।
16. परिश्रम के बिना धन नहीं प्राप्त होता है ।
17. हम लोगों ने कल लाल किला देखा ।
18. मन की दुर्बलता को त्याग दो ।
19. मेरी बात भलीभांति - सुनो ।

रचना के आधार पर वाक्य भेद-

सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह जो पूर्ण अर्थ देता है ‘ वाक्य’ कहलाता है ।

- जैसे - वह बाजार जाता है ।
- पक्षी आकाश में उड़ते हैं ।

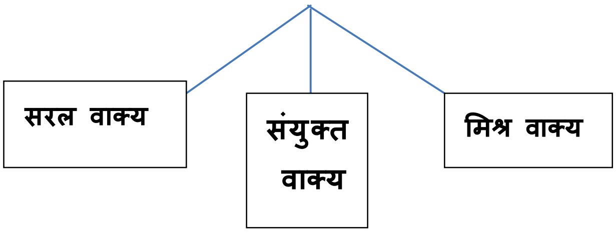

1. रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए -

क मेरी बहन दो दिन से किताब पढ़ रही है ।
ख काम किया है इसलिए पैसा मिलेगा ही ।
ग मैंने वही मकान खरीदा है जहाँ आप रहते हैं ।
घ बंजारा मस्ती में गीत गाता चला जा रहा था ।
ड. आपके लिए रोटी बनी है और मेरे लिए चावल ।
च दरवाजा बंद कर दो ताकि बिल्ली न आ जाए ।

2 . वाक्य रूपांतरण कीजिए -

क आज सुबह उठकर उसने दूध पिया । (संयुक्त वाक्य)
ख जो बहर खड़ा है वह मेरा मित्र है । (सरल वाक्य)
ग फायदे वाला कम करो । (मिश्र वाक्य)
घ जो लोग लालची होते हैं , वे सदा दुखी रहते हैं । (सरल वाक्य)
ड. मैंने शीला से अपने साथ चलने के लिए कहा । (मिश्र वाक्य)
च तबियत ख़राब होने के करण मैं नहीं आ सका । (मिश्र वाक्य)

3 . उपवाक्य के भेद लिखिए -

क रमेश ने कहा कि मैं कल दिल्ली जा रहा हूँ।
ख जो छात्र परिश्रमी होता है।वह सदा सफल होता है,
ग वह पुस्तक कौन सी है -जो आपको पसंद है।
घ जब चलोगे तभी चल पड़ूँगा ।
ड. जैसा मैं चाहता हूँ वैसा वह गाती है ।
च जिसकी कलम है वह आए ले जाए ।

.4 प्रधान उपवाक्य रेखांकित कीजिए-

क रमेश ने कहा कि मैं बाजार जा रहा हूँ ।
ख जो किसान परिश्रमी होते , वे सदा खुश रहते हैं ।
ग वह बालक कौन- सा है जो आपको पसंद है ।
घ गाड़ी तेज चल रही थी जैसे हवाई जहाज ।
ड. मैं चाहता हूँ कि तुम एक सैनिक बनो है ।
च जैसे वर्षा हुई , मोर नाचने लगे ।

वाच्य

वाच्य का शाब्दिक अर्थ है बोलने का विषय । हम जो कुछ कहते है तब हमारे ध्यान के केंद्र में कोई व्यक्ति ,वस्तु अथवा कार्य अवश्य रहता है । **अत: क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार है या कर्म के अनुसार या भाव के अनुसार उसे वाच्य कहते है।**

1. कर्तृवाच्य

2. कर्मवाच्य

3. भाववाच्य

- कर्तृवाच्य के उदाहरण-
  1. वह परिश्रम नहीं कर सकता ।
  2. गीता चल नहीं सकती ।
  3. चोर को पुलिस ने पकड़ा ।
  4. मैंने गत वर्ष कार खरीदी ।
  5. आओ , कुछ बातें करें ।

- कर्मवाच्य के उदाहरण-

  1. पुलिस के द्वारा चोर पकड़ा गया
  2. पेड़ काटा गया ।
  3. माली द्वारा पौधें लगाए गए ।
  4. छात्रों द्वारा श्रमदान किया गया ।
  5. प्रधानमंत्री द्वारा भवन का उद्घाटन किया गया ।

- भावाच्य के उदाहरण -

  1. मुझसे चला नहीं जा सकता ।
  2. मुझसे बैठा नहीं जाता है ।
  3. चलो, अब चला जाए ।
  4. अशोक से चुप नहीं बैठा जाता ।
  5. तुमसे सारी रात कैसे जागा जाएगा ।

- कर्तृवाच्य में बदलिए -

  1. राज द्वारा समस्या का हल किया गया ।
  2. रोगी से उठा नहीं जाता ।
  3. राम द्वारा पत्र लिखा गया ।
  4. पानवाले द्वारा पान खाया गया
  5. मोहिनी द्वारा गीत गाया गया ।
  6. आइए, बैठा जाए ।
  7. मालिक द्वारा झोले से फल निकाला गया ।

- कर्मवाच्य में बदलिए -

  1. राम ने बाण से रावण का वध किया ।
  2. श्यामा ने कविता लिखी ।
  3. छोटी बच्ची ने बैलों को रोटी खिलाई ।
  4. चश्मेवाला घर- घर चश्मा बेचता था ।
  5. राज ने रहस्य की सारी बात बताई ।
  6. मोहन किताब पढ़ रहा था ।
  7. बच्चे मैदान में खेल रहे थे ।

- भाव वाच्य में बदलिए-

  1. वह उठ नहीं सकता ।
  2. आओ, चले ।

3. पक्षी उड़ नहीं सका ।

4. रोगी बिस्तर से उठ गया ।

5. बच्चा रो रहा था ।

- वाच्य बताइए-

1. डॉक्टर द्वारा रोगी को दावा दी गई।
2. वह धूप में खड़ा था ।
3. वह कुर्सी पर बैठकर समाचार पत्र पढ़ रहा था ।
4. पक्षी आकाशा में उड़ रहे थे ।
5. पौधें लगाए गए ।

रस

रस वास्तव में काव्य की आत्मा है । किसी भी साहित्य में रस के बिना काव्य सत्ता की कल्पना नहीं की जा सकती है । इसीलिए संस्कृत में आचार्य विश्वनाथ ने कहा -“वाक्यम रसात्मक काव्यम” अर्थात सरस वाक्य समूह को काव्य कहते हैं । काव्य में भाव की उत्पत्ति होती है । जब किसी साहित्य को पढ़कर मनुष्य अपनी निजी समस्याओं को याद न रखकर, कविता में भावों से जुड़ जाए तो हमारे मन के स्थाई भाव रस में परिणित हो जाते हैं । जिसका अनुभव मन ही मन ही किया जा सकता है।

भरत मुनि ने रस की परिभाषा दी है -

विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है ।

क्र॰ संख्या	**स्थायी भाव**	**रस**
1	रति	श्रृंगार
2	हास	हास्य
3	शोक	करुण
4	क्रोध	रौद्र
5	उत्साह	वीर
6	भय	भयानक
7	जुगुप्सा	वीभत्स
8	विस्मय	अदभुत
9	निर्वेद	शांत

10	वात्सल्य	वात्सल्य
11	भगवत रति	भक्ति

स्थायी भाव- वास्तव में यह भाव हम सब के हृदय में पहले से ही स्थायी रूप विद्यमान रहते हैं । काव्य पढ़ने से यह भाव सुषुप्तावस्था से जागृत हो जाते है और रस में बादल जाते हैं।

संचारी भाव - ये मन में उठाने गिरने वाले भाव है । स्थायी न हो कर क्षणिक होते हैं ।ये अवसर के अनुकूल अनेक स्थायी भावों का साथ देते हैं। स्थायी भावों के साथ- साथ बीच -बीच में जो मनोभाव प्रकट होते हैं , उन्हें संचारी भाव कहते हैं ।

विभाव- भाव जागृत करने के कारण को विभाव कहते हैं। इसके दो भेद हैं -

- **आलंबन विभाव** -मूल विषय वस्तु को आलंबन विभाव कहते हैं।जैसे -रंग -विरंगी बेमेल पोशाक पहने किसी जोकर को देखकर हंसी आना स्वाभाविक है ।
- **उद्दीपन विभाव -**जो आलंबन द्वारा जागृत भावों को उद्दीप्त करते हैं । जैसे हास्यपूर्ण बातें ,उसका खुला मुँह आदि ।
- **अनुभाव -**स्थायी भाव जागृत होने पर आश्रय की बाह्य चेष्टाओं को अनुभाव कहते है । जैसे -जोकर को देख कर हँसना आदि ।

रस के भेद- रस के मुख्य 9 भेद हैं - वात्सल्य एवं भक्ति रस श्रृंगार से निकला है ।

(क) संयोग श्रृंगार - संयोग का अर्थ है - सुख या आनंद कि प्राप्ति अथवा अनुभव करना | नायक और नायिका के मिलन या संयोग में पारस्परिक रति को संयोग श्रृंगार कहा जाता है |

- उदाहरण- राम को रूप निहारत जानकी कंगन के नग में परछाँही"|
  याति सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारत नाँही"।।
- बतरस लालच लाल की मुरली धारी लुकाय।
- सौंह करें भौंहनु हँसे , दैन , कहै, नटि जाय ।।

(ख) वियोग श्रृंगार - नायक-नायिका अथवा प्रेमी-प्रेमिका के बिछड़ने पर वियोग के कारण मन में आए प्रेम के भावों को वियोग श्रृंगार कहते हैं ।

- उदाहरण - निसि दिन बरसात नैन हमारे,
  सदा रहति पावस ऋतु हमपे , जब से स्याम सिधारे ।

  बिन गोपाल बैरन भई कुंजे।

2. हास्य रस - जहाँ विचित्र स्थितियों अथवा दृश्यों को देखकर मन में हंसी का भाव पैदा

हो वहाँ हास्य रस होता है ।

उदाहरण - हाथी जैसी देह गैडे जैसी खाल
तरबूजे सी खोपड़ी खरबूजे से गाल |

3० **वीर रस** -जहाँ कोई दृश्य देखकर मन में उत्साह और वीरता का भाव उत्पन्न होता है उसे वीर रस कहते है ।

- उदाहरण - वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो
  सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो ,
  तुम निडर डटे रहो ।

4० **रौद्र रस -** जब मन में क्रोध या प्रतिशोध का भाव पैदा होता है तो रौद्र रस की अभिव्यक्ति होती है ।

उदाहरण- रे! नृप बालक कालबस , बोलत तोहि न संभार ।
धनुहि सम त्रिपुरारिधनु, बिदित सकल संसार ॥

5० भयानक रस - जहाँ किसी दृश्य को देखकर भय भाव की अभिव्यक्ति हो उसे भयानक रस कहते है ।

उदाहरण - एक ओर अजगरहि लखि ,एक ओर मृगराय ।
विकल बटोही बीच ही, परयो मूरछा खाय ॥

6० वीभत्स रस - जहाँ किसी दृश्य को देखकर मन में घृणा (जुगुप्सा) का भाव पैदा हो वहाँ वीभत्स रस होता है ।

उदाहरण - आँखें निकाल उड़ जाते , क्षण भर उड़कर आ जाते ।
शव जीभ खींचकर कौवे , चुभला-चुभला कर खाते ।।

7. करुण रस - प्रिय व्यक्ति या वस्तु की हानि पर मन में आए शोक के भाव को करुण रस कहते है।

उदाहरण - अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में है पानी ।।

8० अदभुत रस - किसी वस्तु के देखने या सुनने से जो आश्चर्य का भाव मन में पोषित होता है उसे अदभुत रस कहते है ।

उदाहरण - कहीं साँस लेते हो घर-घर भर देते हो
उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो ।
पत्तों से लदी कहीं हरी, कहीं लाल
कहीं पड़ी है ऊर में मंद-गंध-पुष्प-माल ।

9० शांत रस - संसार के प्रति वैराग्य का भाव मन में शांत रस की उत्पत्ति करता है ।

उदाहरण - मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै,
जैसे उड़ी जहाज को पंछी पुनि जहाज पर आवै

10. भक्ति रस - ईश्वर के प्रति मन में प्रेम का भाव भक्ति रस कहलाता है ।

उदाहरण - मेरो तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई

11. वात्सल्य रस - शिशु के प्रति मन में आए प्रेम के भाव को वात्सल्य रस कहते हैं ।

उदाहरण - यशोदा हरि पालने झुलावे
तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान, मृतक में भी डाल देगी जान

अभ्यास के प्रश्न-

1. स्थायी भाव किसे कहते है ?
2. करुण रस का स्थायी भाव लिखिए ।
3. हास्य रस का स्थायी भाव लिखिए ।
4. श्वानों को मिलते दूध भात भूखे बालक अकुलाते है
   माँ की छाती से लिपट लिपट जाड़े की रात बिताते है-

उपर्युक्त पंक्ति में कौन सा रस है ?

5. वीर एवं करुण रस के दो – दो उदाहरण लिखिए ।

पठित बोध (क्षितिज - भाग 2)

1 - नेताजी का चश्मा :

नेताजी का चश्मा पाठ देशभक्ति की भावना से भरपूर कहानी है | कहानी में कैप्टन चश्मेवाले के माध्मम से देश के करोंड़ो लोगों के देशभक्ति पूर्ण योगदान को उभारा गया है जो अपने - अपने तरीके से देशभक्ति तो करतें हैं परन्तु वे परदे के पीछे रह जाते हैं । देशभक्ति-भावना बड़ों में ही नहीं , बल्कि बच्चों (आने वाली पीढ़ियों) में भी भरी हुई है ।

2 - बालागोबिन भगत

बालागोबिन भगत नामक पाठ में लेखक रामबृक्ष बेनीपुरी जी ने ऐसे व्यक्ति का रेखाचित्र खींचा है जो, मानवता, लोकसंस्कृति, सामूहिक चेतना तथा करनी - कथनी में एकता रखने वाले का प्रतीक हैं । लेखक के अनुसार मनुष्य कुछ विशिष्ट गुणों के आधार पर सन्यासी हो सकता है पर वाह्य आडंबरों जैसे वेश, दिखावा युक्त कर्म करने से कोई सन्यासी नहीं होता । बालगोबिन अपने गुणों एवं कर्मों के कारण सन्यासी हैं । साथ ही लेखक ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों पर करारा प्रहार किया है ।

3 - लखनवी अंदाज़

लेखक ने इसमें उस सांमती वर्ग पर व्यंग किया है, जो सच्चाई से अंजान है और अपनी बनाई बनावटी दुनिया में जी रहे हैं । इनके लिए देश, समाज से कोई सरोकार नहीं हैं। इनके लिए इनका झूठा अभिमान सबकुछ हैं । इस पाठ के नवाब ऐसे ही हैं । अपनी झूठी शान को कायम रखने के लिए वह खीरों को बिना खाए फेंक देते हैं । नवाब स्वयं जानते थे कि उनकी हैसियत और स्थिति ऐसी है कि वह खीरों को न फेंके, परन्तु लेखक के सम्मुख अपनी शान को नष्ट होते हुए भी नहीं

देख सकते थे। अत: बिना खाए खीरों को फेंक दिया। इसलिए लेखक ने इस पाठ को उन्हीं को समर्पित कर के इसका नाम लखनवी अंदाज़ रखा।

4- मानवीय करुणा की दिव्य चमक

प्रस्तुत संस्मरण फादर कामिल बुल्के पर लिखा गया है । फादर कामिल बुल्के जन्मे तो रैम्सचैपल, बेल्जियम में परन्तु उन्होंने अपनी कर्म भूमि बनाया भारत को। फादर अपने को भारतीय कहते थे। वे एक संन्यासी थे, परन्तु पारम्परिक अर्थ में नहीं। उनकी नीली आँखे, बाँहें खोल गले लगाने को आतुर रहती थीं, ममता और अपनत्व का भाव हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था।

5. एक कहानी यह भी

आत्मकथ्य शैली में लिखे गए इस पाठ में लेखिका ने उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारें में लिखा है जिन्होंने उनके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । लेखिका काले रंग की, दुबली-पतली सी तथा मरियल थी, गोरापन तथा खूबसूरती पसंद करने वाले अपने पिता की उपेक्षा का उन्हें शिकार होना पड़ता । समाज में विशिष्ट दर्जा हासिल करने के लिए एक तरफ तो पिता ने लेखिका को उच्च-शिक्षा दिलाई तथा घर पर आने वाले बुद्धिजीवियों के बीच लेखिका को बैठकर देश - दुनिया की परिस्थितियों पर होने वाली बहस व चर्चा में शामिल किया लेकिन दूसरी तरफ सामाजिक छवि को बनाए रखने के लिए उन्होने उस स्वतन्त्रता आंदोलन का हिस्सा बन कर सड़क पर जुलूस निकालने व भाषण बाजी करने से रोका। पिता के उपेक्षित व्यवहार तथा दोहरे व्यक्तित्व ने लेखिका को विद्रोही स्वभाव का बना दिया ।

माँ का ममतालु स्वभाव, सहनशीलता, धैर्य व मजबूरी में लिपटा त्याग लेखिका का आदर्श न बन सका। कॉलेज की हिन्दी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने उन्हें जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, प्रेमचंद आदि की रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित किया । साथ ही लेखिका के मन में देश की आजादी के लिए जोश और जुनून भी पैदा क्यिा । जिससे लेखिका के व्यक्तित्व में संघर्षशीलता तथा जुझारूपन आ गया । फलस्वरूप, उन्होंने स्वतन्त्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की तथा महान साहित्यकार बनीं।

6. स्त्री- शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन [केवल पढ़ने के लिए]

इस निबंध में लेखक ने स्त्री- शिक्षा के विरोधियों को खरी-खरी सुनाई है | इसलिए स्त्री शिक्षा के विरोधियों ने स्त्री शिक्षा को गृह सुख का नाश माना है | वह प्राचीन संस्कृत नाटकों में स्त्रियों द्वारा संस्कृत न बोलकर प्राकृत बोलना, शकुन्तला के द्वारा दुष्यंत को कटु श्लोक लिखकर अनर्थ करना , स्त्री- शिक्षा के पर्याप्त प्रमाण न मिलने आदि के कारण समाज में स्त्रियों को शिक्षा प्रदान न करने की वकालत करतें हैं । लेकिन लेखक ने अपने अकाट्य तर्कों द्वारा उनकी इन सारी दलीलों का खण्डन किया है ।

7- नौबत खाने में इबादत

प्रस्तुत पाठ व्यक्ति चित्र है । इसमें बिसस्मिल्ला खान के परिचय देने के साथ ही उनकी रुचियों व उनके अन्तरमन की बुनावट, संगीत की साधना और लगन को संवेदनशील भाषा में प्रस्तुत किया है। उनके लिए अभ्यास और गुरु-शिष्य परंपरा, तन्मयता, धैर्य और संयम को जरूरी बताया है ।

8.संस्कृति [केवल पढ़ने के लिए]

संस्कृति निबंध हमे सभ्यता और संस्कृति से जुड़े अनेक जटिल प्रश्नो से टकराने की प्रेरणा देता है । इस निबंध में लेखक ने अनेक उदाहरण देकर ये बताने का प्रयास किया है कि सभ्यता और संस्कृति किसे कहते है, दोनो एक ही वस्तु है अथवा अलग-अलग। वे सभ्यता को संस्कृति का परिणाम मानते हुए कहते है कि मानव संस्कृति अविभाज्य वस्तु है। उन्हे संस्कृति का बंटवारा करने वाले लोगो पर आश्चर्य होता है और दुख भी । उनकी दृष्टि में जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी नहीं है , वह न सभ्यता है और न संस्कृति ।

काव्य खण्ड

पद -सूरदास

सूरदास के काव्य ‘सूरसागर’ से संकलित भ्रमरगीत में गोपियों की विरह पीड़ा को चित्रित किया गया है। प्रेम संदेश के बदले श्री कृष्ण के योग संदेश लाने वाले उध्द्व पर गोपियों ने व्यंग्य बाणों में अपने दुखों का हृदय स्पर्शी उलाहना दिया है और श्री कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट किया है।

राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद

यह अंश ‘रामचरितमानस’ के ‘बाल कांड’ से लिया गया है। सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव - धनुष-भंग के बाद मुनि परशुराम को जब यह समाचार मिला तो वे क्रोधित होकर वहाँ आते हैं । शिव - धनुष को खंडित देख कर आपे से बाहर हो जाते है। राम के विनय और विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंतत: उनका गुस्सा शांत होता है । इस बीच राम , लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ उस प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है । परशुराम के क्रोध भरे वाक्यों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग भरे वचनो से देते है। इस प्रसंग की विशेषता है लक्ष्मण की वीर रस से पगी व्यंग्योक्तियाँ और व्यंजना शैली की सरस अभिव्यक्ति ।

सवैया कवित्त : देव (केवल पढ़ने के लिए)

कवि ने श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन किया है जिसमें उनके सामंती वैभव का चित्रण है । साथ में ही बसंत को शिशु रूप में दिखा कर प्रकृति के साथ एक रागात्मक संबंध की अभिव्यक्ति की है । तीसरे कवित्त में पूर्णिमा की रात में चाँद तारों की आभा का चित्रण किया है।

आत्मकथ्य : (केवल पढ़ने के लिए)

यह कविता जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है । इसे सन 1932 में हंस नामक पत्रिका के आत्मकथा नामक विशेषांक में छापा गया था | उनके मित्रों ने उनसे आत्मकथा लिखने का निवेदन किया था। उसी निवेदन के उत्तर में प्रसादजी ने यह कविता लिखी थी । कवि कहता है कि - यह संसार नश्वर है। हर जीवन एक दिन मुरझाई पत्ती सा झड़कर गिर जाता है इस अनंत संसार में जितने जीवन हैं । उतनी ही उसकी कहानियाँ हैं । सबके जीवन दु:ख से भरे हैं। आत्मकथा द्वारा अपनी कहानी सुनाकर मानों स्वयं ही व्यँग करना प्रतीत होता है । तब मैं अपनी जीवन- कथा कैसे कहूँ ? उसमें दुर्बलताएँ हैं। यहाँ तक की मेरी जीवन-गगरी खाली है। आत्मकथ्य असहमति के तर्क से उत्पन्न हुई कविता है । 1932 में हंस पत्रिका में यह कविता छायावादी शैली में लिखी गई है जिसमें जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति है, उनके जीवन की कथा एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की कथा है ।

उत्साह

प्रस्तुत कविता में कवि बादल में क्रांति का स्वर सुनता है। वह गडगड़ाते स्वर पर मोहित होकर कहता है - ओ बादल ! तुम खूब गरजो, कड़को, गड़गड़ाओ। तुम अपनी भयंकर गर्जन-तर्जन से इस आकाश को घेर लो तुम्हारे केश कितने सुंदर, काले और घुंघराले हैं। ये कल्पना के विस्तार के समान घने हैं। कवि बादल को कवि की संज्ञा देते हुए कहता है - अपने हृदय में बिजली चमक छिपाए हुए ओ कवि ! संसार को नया जीवन देने वाले ओ कवि ! तुम अपनी भावनाओं में वज्र छिपाकर समूचे संचार में जोश का पौरुषमय स्वर भर दो । हे बादल ! तुम गरजो , गड़गड़ाओ।

अट नहीं रही है

'अट नहीं रही है' कविता एक प्रकृति सौन्दर्य वर्णन की छायावादी कविता है जिसमे फागुन मास की मस्ती का मनमोहक वर्णन किया गया है। निराला जी ने मानवीकरण का प्रयोग करते हुए फागुन के वासंतिक प्रभाव को अभिव्यक्ति किया है। फागुन मास में कही मादक हवाएँ चल रही हैं तो कही पक्षी आकाश में उड़ रहे है । शोभा इतनी अधिक है कि अपने आप में समा नहीं पा रही है।

यह दंतुरित मुस्कान

छोटे शिशु की दंतुरित और छलहीन मुस्कान देखकर कवि का वासल्य उमड़ पड़ा है। शिशु की प्राणवान मुस्कान का स्पर्श पाकर कठोर पाषाण भी पिघल जाते है । छविमान दंतुरित मुस्कान देखकर कठोर हृदयी भी भावुक हो उठते हैं।

फसल

फसल है क्या और उसे पैदा करने में किन-किन तत्वों का योगदान होता है ? यही इस कविता में बताया गया है कविता के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि प्रकृति एवं मनुष्य के सहयोग से ही सृजन संभव है ।

छाया मत छूना

कविता के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है की जीवन में सुख और दुख दोनों की उपस्थिति है । बीते हुए सुख को याद कर वर्तमान के दुख को और गहरा करना तर्कसंगत नहीं है। कवि अतीत की स्मृतियों के सहारे न जीकर यथार्थ और वर्तमान को अपने अनुकूल बनाने की प्रेरणा देता है और अपने मन को संबोधित करता है कि जो समय अतीत बन चुका है उसकी स्मृतियों में न जीएँ । कल्पनाओं के सहारे जीना उचित नहीं है । स्मृतियों में जीने से दुख की अनुभूति अधिक होगी । अतीत की स्मृतियों से सजी यमिनी जो चंद्रिका में फूलों से सुसज्जित केश, जिसके स्पर्श मात्र से प्रत्येक क्षण जीवंत हो उठता था, उसकी मात्र स्मृति सुगंध शेष है -। वह अब यथार्थ नहीं है । एक छाया की तरह है ।

कन्यादान

इस कविता में माँ , बेटी को परपरागत आदर्श रूप से हट कर जीने की सीख दे रही है । कवि यह मानता है कि समाज व्यवस्था द्वारा स्त्रियों के लिए व्यवहार संबंधी जो प्रतिमान गढ़ लिए जाते हैं उन्हें आदर्श के मुलम्मे में बाँध दिया जाता है । कोमलता के गौरव में कमजोरी का उपहास छुपा रहता है । बेटी माँ के सबसे निकट और उसकी सुख दुख की साथी होती है वही उसकी अंतिम पूंजी है । इस कविता में कोरी भावुकता ही नहीं बल्कि माँ के संचित अनुभवों की पीड़ा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है ।

संगतकार

इस कविता में उन व्यक्तियों को दर्शाया गया है जो मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिला कर उसके स्वर को गति प्रदान करते हैं। संगतकार मुख्य गायक को उस समय सहारा देता है जब उसका स्वर भारी हो जाता है । कभी-कभी तो मुख्य गायक को उत्साह प्रदान करता है जब उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगता है ।

कृतिका

माता का आँचल

लेखक ने 'माता का आँचल' पाठ में शैशवकाल के शैशवीय क्रिया-कलापों को रेखांकित किया है । माता पिता के स्नेह और मित्रों द्वारा मिल जुलकर खेलें जाने वाले खेलों का वर्णन किया है । लेखक ने स्पष्ट किया है कि बच्चा पिता के साथ भले ही अधिक समय बिताए किन्तु आपदाओं के समय बच्चा अपनी माँ के आँचल में ही शरण लेता है । पिता से अधिक माता की गोद प्रिय और रक्षा करने में समर्थ प्रतीत होती है ।

जार्ज पंचम की नाक

प्रस्तुत पाठ में भारतीय सरकारी मानसिकता को बहुत ही स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। वर्षों से हम जिनके गुलाम रहे हैं उन अंग्रेजों के भारत से चले जाने पर भी हमारी मानसिकता परतंत्रा की बनी हुई है । ब्रिटेन की महारानी के भारत आने पर सभी अपने काम काज छोड़ कर उनके आगमन की तैयारी एवं स्वागत में सम्पूर्ण सरकारी तंत्र जुट जाता है । ऐसी स्थिति में जार्ज पचम की टूटी नाक को लगाने के लिए भारतीय अपनी नाक काटने को तत्पर दिखाई देते है । यह एक व्यंग प्रधान कहानी है।

साना - साना हाथ जोड़ी

यह पाठ एक यात्रा वृतांत है| इसमे लेखिका पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम राज्य की राजधानी गंगटोक और उसके आगे हिमालय की यात्रा का वर्णन प्रस्तुत करती है | लेखिका हिमालय के सौन्दर्य का अदभुत और काव्यात्मक वर्णन करती है | इस पढ़कर हिमालय का पल-पल परिवर्तित होता सौन्दर्य हमारी आखों के सामने साकार हो उठता है |गंगटोक का असली नाम “गंतोक” है जिसका अर्थ होता है 'पहाड़'|

एहीं ठैया झुलानी हैरानी हो रामा (केवल पढ़ने के लिए)

इस पाठ में कजली गायिका दुलारी के स्वभाव का चित्रण किया गया है | दुलारी अपने कठोर स्वभाव के लिए जानी जाती है पर उसके हृदय में कोमल भाव भी है | वह उदार हृदय है उस पर टुन्नु के प्रेम-भावो का प्रभाव है | कहानीकार ने स्पष्ट किया है की देशप्रेम की भावना जब प्रबल होती है तो वह जिस भी स्थिति में हो देशप्रेम के रास्ते ढूंढ लेती है | देश की सीमाओं पर देश के शत्रुओं से लड़ना ही देशप्रेम नही है जबकि सम्पूर्ण कर्तव्यों का पालन भी देशभक्ति है |

मैं क्यों लिखता हूँ (केवल पढ़ने के लिए)

इस पाठ में लेखक ने स्पष्ट किया है की प्रेरणा कैसे पैदा होती है | लेखक उस पक्ष को पूरी स्पष्टता और ईमानदारी से लिख पाता है जो स्वयं अनुभव होता है | जब वह जापान गया वहाँ एक पत्थर पर आदमी की छाया देखी तो उस रेडियो धर्मी विस्फोट का भयावह रूप उसकी आखों के सामने प्रत्यक्ष हो गया जिसे उसने अपनी कविता में उतार दिया |

****

(नेताजी का चश्मा)

(1)

1 निम्नलिखित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिये-

हालदार साहब को पान वाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा | मुड़कर देखा तो अवाक रह गए | एक बेहद बूढ़ा मरियल सा लंगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आंख पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी सी संदूकची और दूसरे हाथ में बाँस में टंगे बहुत से चश्में लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था क्योंकि इस बेचारे की कोई दुकान भी नही है | फेरी लगाता है | हालदार साहब चक्कर में पड़ गए| पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते है ? क्या यही इसका वास्तविक नाम है ?

लेकिन पानवाले ने साफ बता दिया था कि वह इस बारे में और बात करने को तैयार नही | ड्राईवर भी बेचैन हो रहा था, काम भी था | हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए |

(अ) कैप्टन का मज़ाक किसने उड़ाया और बुरा किसे लगा?

(ब) वह चश्में किस तरह बेचता था ?

(स) उस बूढ़े व्यक्ति का नाम कैप्टन क्यों रखा गया था ?

उत्तर:

(अ) कैप्टन का मज़ाक पानवाले ने उड़ाया और हालदार साहब को इसका बहुत बुरा लगा|

(ब) कैप्टन फेरी लगाकर चश्मा बेचा करता था |

(स) कैप्टन की देशभक्ति की भावना के कारण लोग उसे कैप्टन कहा करते थे |

(2)

बार-बार सोचते क्या होगा उस कौम का जो देश की खातिर घर-गृहस्थी जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम कर देने वालो पर भी हँसती और अपने लिए बिकने के मौके ढूंढती है | वे दुखी हो गए | 15 दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे | कस्बे में घुसने से पहले खयाल आया कि कस्बे की हृदय स्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिस्थापित होगी परंतु सुभाष की आखों पर चश्मा नही होगा | ....क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया ...... और कैप्टन मर गया | सोचा आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नही खाएँगे, मूर्ति की तरह देखेंगे भी नहीं सीधे निकाल जाएंगे | ड्राईवर से कह दिया चौराहे पर रुकना नहीं , आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे | लेकिन ड्राईवर आदत से मजबूर था और उसकी आंखे चौराहे आते ही मूर्ति की तरह उठ गयी | कुछ ऐसा देखा की चीखे - रोको ! जीप स्पीड में थी, ड्राईवर ने ज़ोर से ब्रेक मारा | रास्ता चलते लोग देखने लगे | जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूद कर तेज़-तेज़ कदमो से मूर्ति की तरह लपके और उसके ठीक सामने जाकर एटैन्शन में खड़े हो गए | मूर्ति की आखों पर सरकंडे से बना छोटा चश्मा रखा हुआ था, जैसे बच्चे बना लेते है | हालदार साहब भावुक है, इतनी सी बात पर उनकी आखें भर आई |

(अ) हालदार साहब स्वभाव से किस प्रकार के इंसान थे ?

(ब) लोगो ने किसकी हँसी उड़ाई ?

(स) सुभाष की मूर्ति को देखकर उनकी आँखेँ क्यों भर आई?

उत्तर-

(अ) हालदार साहब स्वभाव से भावुक देशभक्त है जो स्वतन्त्रता सेनानियों का अपमान सहन नही कर सकते |

(ब) लोगो ने चश्में वाले की हँसी उड़ाई |

(स) क्योंकि सुभाष की मूर्ति पर लगा चश्मा बच्चो के हाथो से बना सरकंडे का था इसलिए उन्हे विश्वास हो गया था कि हमारे देश के व्यक्तियों में देशभक्ति की भावना अभी समाप्त नहीं हुई है, विशेषकर बच्चों में |

लघूत्तरीय प्रश्न :

(1) पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिये |

उत्तर: पानवाला स्वभाव से बहुत ही बातूनी हसोड़, और मज़ाकिया था | वह शरीर से मोटा था | उसकी तोंद निकली रहती थी | उसके मुँह में पान ठुसा रहता था | पान के कारण वह ठीक से बात

तक नहीं कर पाता था और हँसने पर उसके लाल-काले दाँत खिल उठते थे | वह बाते बनाने में उस्ताद था | उसकी बोली में हँसी और व्यंग का पुट बना रहता था |

(2) जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात देखा नही था तब तक उनके मानस पटल पर उनका कौनसा चित्र रहा होगा ?
उत्तर: जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को अपनी आँखों से देखा नही था तब तक उनके मन में कैप्टन की मूर्ति कुछ और थी, उन्होने सोचा था की कैप्टन शरीर से हट्टा-कट्टा मजबूत होगा | वह आज़ाद हिन्द फौज का सेनानी होगा | वह रोबदार, अनुशासित और दबंग मनुष्य होगा जिसकी वाणी में भारीपन होगा |

(3) चश्मेंवाला मूर्ति का चश्मा बार-बार क्यों बदल देता है?
उत्तर: सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति पर चश्मा नही था | इसी कमी की पूर्ति कैप्टन किया करता था| वह चश्में बेचा करता था| अगर कोई ग्राहक मूर्ति पर लगा फ्रेम मांग लेता तो कैप्टन वह फ्रेम उतार कर उसकी जगह अन्य फ्रेम लगा देता था | इस प्रकार मूर्ति पर चश्में बदलते रहते थे |

(4) नेताजी का चश्मा पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिये की देश प्रेम प्रकट करने के लिए सैनिक होना आवश्यक नही है?
उत्तर: देश प्रेम प्रकट करने के लिए बड़े-बड़े नारों की आवश्यकता नही है| न ही सैनिक होने की आवश्यकता है| देशप्रेम तो छोटी-छोटी बातों से प्रकट हो सकता है | यदि हमारे मन में देश के प्रति प्रेम है तो हम देश की हर छोटी से छोटी कमी को पूरा करने में अपना योगदान दे सकते है | 'नेताजी का चश्मा' पाठ में कैप्टन ने मूर्ति पर चश्मा लगाकर इसी बात को उजागर किया है

बालगोबिन भगत

(1)

बेटे के क्रिया कर्म में तूल नहीं किया; पतोहू से ही आग दिलाई उसकी | किन्तु ज्यों ही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गयी, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना | इधर पतोहू कहती - मैं चली गयी तो बुढ़ापे मे कौन आपके लिए भोजन बनाएगा , बीमार पड़े तो , कौन एक चुल्लू पानी भी देगा । लेकिन भगत का निर्णय अटल था ।

1. भगत पतोहू को अपने पास क्यों नहीं रखना चाहते थे ?
2. पुत्र की चिता की आग भगत ने किससे दिलवाई और क्यों ?
3. 'तूल न देना' मुहावरे का आशय है -

उत्तर :

1- भगत अपनी पतोहू को अपने पास नहीं रखना चाहते थे क्योंकि वे उसके भविष्य को सुखी देखना चाहते थे ।

2 - भगत ने अपने पुत्र की चिता में अग्नि अपनी पतोहू से दिलवाई क्योंकि वे कबीर अनुयायी थे और उन्हीं की तरह समाज में व्याप्त कुरीतियों को नहीं मानते थे और उनका विरोध करते थे ।

3 - 'तूल न देना' मुहावरे का अर्थ है - बढ़ - चढ़कर काम न करना ।

(2)

बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के अनुरुप हुई| वह हर वर्ष गंगा-स्नान करने जाते| स्नान पर उतनी आस्था नहीं रखते जितना संत-समागम और लोक-दर्शन पर| पैदल ही जाते| करीब तीस कोस पर गंगा थी| साधू को संबल लेने का क्या हक़ ? और, गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे ? अतः घर से खाकर चलते, तो फिर घर पर ही लौटकर खाते| रास्ते भर खंजड़ी बजाते, गाते जहाँ प्यास लगती, पानी पी लेते| चार-पाँच दिन आने-जाने में लगते; किन्तु इस लम्बे उपवास में भी वही मस्ती! अब बुढ़ापा आ गया था, किन्तु टेक वही जवानी वाली| इस बार लौटे तो तबियत कुछ सुस्त थी| खाने-पीने के बाद भी तबियत नहीं सुधरी, थोडा बुखार आने लगा| किन्तु नेम-व्रत तो छोड़ने वाले नहीं थे| वही दोनों जून गीत, स्नान ध्यान, खेतीबारी देखना| दिन-दिन छिजने लगे| लोगों ने नहाने-धोने से मना किया, आराम करने को कहा| किन्तु, हँसकर टाल देते थे | उस दिन भी संध्या में गीत गाए, किन्तु मालुम होता जैसे तागा टूट गया हो, माला का एक-एक दाना बिखरा हुआ| भोर में लोगों ने गीत नहीं सुना, जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे सिर्फ़ उनका पंजर पड़ा है !

1. भगत के गंगा-स्नान का मुख्य उद्देश्य क्या होता था ?

2. गंगा-स्नान को आते-जाते वे किसी से न सहारा लेते और न किसी से कुछ माँगते थे | क्यों ?

3. 'सौंदर्य' का विशेषण क्या होगा ?

उत्तर-

1. भगत के गंगा-स्नान का मुख्य उद्देश्य संत-समागम और लोक-दर्शन होता था |
2. क्योंकि भगत स्वभाव से स्वाभिमानी थे और वे मानते थे कि एक गृहस्थ को किसी से सहारा लेने का कोई अधिकार नहीं होता |
3. 'सौन्दर्य' का विशेषण 'सुन्दर' होगा |

लघूत्तरीय प्रश्नोतर

प्रश्न-1 बालगोबिन भगत की पुत्रबधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ?

उत्तर- भगत की पुत्रबधू जानती थी कि भगत जी संसार में अकेले हैं और उनका एकमात्र पुत्र मर चुका है| वे बूढ़े है और भक्त हैं| उन्हें घर-बार और संसार में कोई रूचि नहीं है अतः वे अपने खाने-पीने और स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दे पाएँगे| इसलिए वाह सेवा-भाव से उनके चरणों में अपने दिन बिताना चाहती थी| वह उनके लिए भोजन और दवा-पानी का प्रबंध करना चाहती थीं|

प्रश्न-2 बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी ?

उत्तर- बालगोबिन भगत की दिनचर्या का प्रत्येक कार्य आश्चर्यजनक होता था| उस दिनचर्या में कहीं भी कोई चूक उनके द्वारा संभव नहीं थी| उनकी दिनचर्या लोगों को हैरान कर देती थी| लोग भगत जी की सरलता, सादगी और निस्वार्थता पर हैरान होते थे| भगत जी भूलकर भी किसी से कुछ नहीं लेते थे| वे बिना पूछे दूसरे की किसी भी चीज़ को छूते नहीं थे| यहाँ तक कि किसी दूसरे के खेत में शौच भी नहीं करते थे| लोग उनके इस व्यवहार से मुग्ध थे| लोग भगत जी पर तब और भी आश्चर्य करते थे जब वे भोर में उठकर दो-तीन मील दूर स्थित नदी में स्नान कर आते थे| वापसी पर वे गाँव के बाहर स्थित पोखर के किनारे प्रभु -भक्ति के गीत टेरा करते थे| उनके इन प्रभावी गानों को सुनकर लोग सचमुच हैरान रह जाते थे |

प्रश्न-3 भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस प्रकार अभिव्यक्त कीं ?

उत्तर - भगत की अपने बेटे की मृत्यु पर अभिव्यक्त भावनाएँ चली आ रही परंपरा से भिन्न थीं |

- मृतक पुत्र को आँगन में चटाई पर लिटाकर सफ़ेद कपडे से ढँक दिया |
- मृतक पुत्र के ऊपर फूल और तुलसी के पत्ते बिखेर दिए और सिरहाने एक दीपक जलाकर रख दिया |
- उसके समीप आसन पर बैठकर हमेशा की तरह कबीर के पदों को गाने और पतोहू को समझाने लगे कि आत्मा, परमात्मा में मिल गई है | विरहिणी अपने प्रेमी (ईश्वर) से जाकर मिल गई है |
- पतोहू को समझाने लगे कि यह वक्त रोने का न होकर उत्सव मनाने का है |

प्रश्न-4खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधू कहलाते थे?

उत्तर - बालगोबिन भगत खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ थे | उनका साफ़-सुथरा मकान था, फिर भी सर्वथा वे साधुता की श्रेणी में आते थे, क्योंकि-

1-वे कबीर को अपना साहब मानते थे |

2-वे कबीर के पदों को ही गाते थे, और उनके आदेशों पर चलते थे |

3- वे सभी से खरा व्यवहार रखते थे, दो टूक बात कहने में न कोई संकोच करते थे, न किसी से झगड़ते थे |

4- वे अन्य किसी की चीज़ को बिना पूछे व्यवहार में नहीं लाते थे |

5- वह अपनी प्रत्येक वस्तु पर साहब का अधिकार मानते थे | परिश्रम से पैदा की गई फ़सल को पहले साहब को अर्पित करते थे, उसके बाद स्वयं प्रयोग करते थे |

इस प्रकार त्याग की प्रवृत्ति और साधुता का व्यवहार उन्हें साधु की श्रेणी में खड़ा कर देता है |

प्रश्न-5 पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है ?

उत्तर - भगत कबीर को ही अपना साहब मानते थे | उनके ही निर्देशों का यथा-संभव पालन करते थे | कबीर के प्रति उनकी श्रद्धा निम्नलिखित रूपों में प्रकट हुई है-

1- भगत सिर पर सदैव कबीर-पंथी टोपी पहनते थे, जो कनपटी तक जाती थी |
2- कबीर के रचित पदों को ही गाते थे |
3- कबीर को ही अपना ईश्वर मानते थे |
4- वे उन्हीं के बताए आदर्शों पर चलते थे |
5- उनकी कमाई से जो कुछ पैदा होता था उसे पहले कबीर के दरबार में भेंट करते थे और वहाँ से जो प्रसाद के रूप में प्राप्त होता था उससे ही निर्वाह करते थे |
6- साहब के प्रति अटूट श्रद्धा थी कि चार कोस दूर कबीर-दरबार में अपनी उपज को लादकर ले जाते थे|
7- भगत पर कबीर-विचार-धारा का इतना प्रभाव कि उन्हीं की तरह रुढियों का विरोध करते थे|
8- उनकी वेश-भूषा भी कबीर की तरह थी | कमर में एक मात्र लंगोटी, सिर पर टोपी और सर्दियों में काली कमली ओढते थे ।

लखनवी अंदाज़ - यशपाल

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए-

(1)

आराम से सेकंड क्लास में जाने के लिए दाम अधिक लगते हैं।दूर तो जाना नहीं था। भीड़ से बचकर, एकांत में नई कहानी के संबंध में सोच सकने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देख सकने के लिए टिकट सेकंड क्लास का ही ले लिया, गाड़ी छूट रही थी। सेकंड क्लास के एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर ज़रा दौड़ उसमें चढ़ गए। अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था।एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफ़ेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। सामने दो ताज़े-चिकने ख़ीरे तौलिए पर रखे थे।डिब्बे में हमारे सहसा कूद जाने से सज्जन की आँखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया।सोचा, हो सकता है, यह भी कहानी के लिए सूझ की चिंता में हों या खीरे जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में हों।

1-लेखक सेकंड क्लास के डिब्बे में क्यों यात्रा कर रहे थे?

2-लेखक के डिब्बे में चढ़ने पर नवाब साहब की क्या प्रतिक्रिया हुई?

3-'सहसा कूद जाने' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर 1-लेखक सेकेंड क्लास के डिब्बे में इसलिए यात्रा कर रहे थे क्योंकि उनका अनुमान था की सेकेंड क्लास के डिब्बे में लेखक को एकांत मिल सकता था।

2. लेखक के डिब्बे में आने से उस डिब्बे में पहले से बैठे हुए नवाब साहब को अच्छा नहीं लगा, वे उससे आँख चुराने लगे |

3-सहसा कूद जाने का आशय होता है "अचानक तीव्रता से प्रवेश करना।'

(2)

ठाली बैठे कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान लगाने लगे। संभव है नवाब साहब ने बिल्कुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफ़ेदपोश उन्हें मंझले दर्ज़े में सफ़र करता देखे। अकेले सफ़र का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएं ? हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे। "ओह" नवाब साहब ने सहसा हमें संबोधन किया "आदाब-अर्ज़" जनाब खीरे का शौक फरमाएंगे ? नवाब साहब का सहसा भाव- परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। भाँप लिया | आप शराफत का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं। जवाब दिया | "शुक्रिया किबला शौक फरमाएं ।"

1-लेखक को कौन-सी आदत है ?

2-नवाब साहब ने संवादहीनता दूर करने के लिए क्या किया?

3-'सफेदपोश से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर:-

1- लेखक को खाली बैठे कल्पना करने की पुरानी आदत है| वे ऐसे ही खाली बैठे अपनी रचनाओं के लिए विषय-वस्तु खोजते हैं |

2- नवाब साहब ने संवादहीनता दूर करने के लिए लेखक को खीरे खाने का प्रस्ताव दिया |

3- सफेदपोश का आशय भद्र पुरुष से है |

(3)

लखनऊ स्टेशन पर खीरे बेचने वाले इसका तरीका जानते हैं| ग्राहक के लिए जीरा मिला नमक एवं मिर्च की पुडिया भी हाज़िर कर देते हैं। नवाब साहिब ने बडे करीने से खीरों की फाकों पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी। उनकी प्रत्येक भाव स्फुरण से स्पष्ट था कि उनका मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से प्लावित हो रहा है हम कनखियों से देख कर सोच रहे थे, मियाँ रईस बनते हैं, लेकिन लोगों की नज़रो से बच सकने के खयाल में अपनी असलीयत पर उतर आये हैं। नवाब सहिब ने एक बार फिर हमारी ओर देख लिया।, "वल्लाह शौक कीजिये, लखनऊ का बालम खीरा है।नमक मिर्च छिडक जाने से ताज़े खीरे की पनियाती फाँकें देखकर मुँह में पानी जरूर आ रहा था, लेकिन इंकार कर चुके थे। आत्म सम्मान निबाहना ही उचित समझा, उत्तर दिया , शुक्रिया, इस वक्त तलब महसूस नही हो रही, मेदा भी कमजोर है, किबला शौक फरमाएँ !

1-लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वालों की क्या विशेषता है ?

2-नवाब साहब के हाव भावों से क्या पता चल रहा था ?

3-इच्छा होते हुए भी लेखक ने खीरा खाने के लिए मना क्यों कर दिया ?

उत्तर:

1. लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले ग्राहक के लिए जीरा मिला नमक एवं मिर्च की पुडिया भी हाज़िर कर देते हैं।

2- नवाब साहब के हाव भावों से पता चल रहा था कि वे खीरे खाने के लिए लालायित थे |

3 संकोच के कारण इच्छा होते हुए भी लेखक ने खीरा खाने के लिए मना कर दिया |

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर :

प्रश्न -1 नवाबों में एक विशेष प्रकार की नफासत और नज़ाकत देखने को मिलती है | "लखनवी अंदाज़ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- नवाब सदा से एक विशेष प्रकार की नफासत और नज़ाकत के लिए मशहूर हैं | लखनवी अंदाज़ पाठ में नवाबों की इसी नफासत और नजाकत का उदाहरण मिलता है | नवाब साहब खीरे खाने के लिए यत्नपूर्वक तैयारी करते हैं |खीरे काटकर उनपर नमक मिर्च लगाते हैं, किंतु बिना खाए ही केवल सूँघकर रसास्वादन कर खिड्की से बाहर फेंक देते हैं और फिर इस प्रकार लेट जाते हैं जैसे इस सारी प्रक्रिया में बहुत थक गये हों। ऐसी नफासत और नज़ाकत नवाबों में ही दिखाई देती है।

प्रश्न-2 आपके विचार में नवाब साहब ने नमक मिर्च लगे खीरे की फांकों को खिड्की से बाहर क्यो फेंक दिया?

उत्तर- नवाब साहब ने नमक मिर्च लगे खीरे की फांकों को खिड्की से बाहर इसलिए फेंक दिया होगा,क्योंकि वे लेखक के सामने खीरे जैसी सामान्य वस्तु का शौक करने में संकोच का अनुभव कर रहे होंगे। अपनी खानदानी रईसी और नवाबी का प्रदर्शन करने के लिये उन्होंने खीरे की फांकें फेंक दी।

प्रश्न-3 "लखनवी अंदाज़" पाठ में किस पर और क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर- "लखनवी अंदाज़" पाठ में नवाब साहब के माध्यम से समाज के उस सांमती वर्ग पर व्यंग्य किया गया है। जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन शैली का आदी है। नवाब साहब द्वारा अकेले में खीरे खाने का प्रबंध करना और लेखक के आ जाने पर खीरों को सूँघ कर खिड्की से बाहर फैंक कर अपनी नवाबी रईसी का गर्व अनुभव करना इसी दिखावे का प्रतीक है। समाज में आज भी ऐसी दिखावटी संस्कृति दिखाई देती है।

प्रश्न-4 बिना विचार घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है?लेखक के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- हम लेखक के इस विचार से बिल्कुल भी सहमत नहीं हैं कि बिना विचार घटना और पात्रों के भी कहानी लिखी जा सकती है। किसी भी कहानी के लिये उसकी आत्मा होता है- कथानक। यह कथानक अनिवार्य

रूप से किसी विचार अथवा घटना पर आधारित होता है, जिसे पात्रों के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जा सकता है।ये पात्र और घटनाएँ वास्तविक भी हो सकती हैं और काल्पनिक भी, किन्तु इनके अभाव में कहानी की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

मानवीय करूणा की दिव्य चमक - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

(1)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके लिए इस ज़हर का विधान क्यों हो? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था। वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे? एक लम्बी, पादरी के सफेद चोगे से ढकी आकृति सामने है- गोरा रंग, सफेद झाँईं मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें-बाहें खोल गले लगाने को आतुर। इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था।

1 फ़ादर किसे कहा गया है?

2 फ़ादर को 'साधु' की संज्ञा क्यों दी गई?

3 फ़ादर लेखक के साथ कैसा व्यवहार करते थे?

उत्तर-

1- फादर कामिल बुल्के को 'फादर' कहा गया है |

2- फादर कामिल बुल्के के ह्रदय में सभी के लिए प्यार, अपनत्व की भावना एवं ममता भरी थी, इसलिए उन्हें साधु कहा गया है |

3-लेखक के लिए फादर एक अभिभावक के समान थे |

(2)

उनकी चिंता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी। हर मंच से इसकी तकलीफ़ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुँझलाते देखा है और हिन्दी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर दुख करते पाया है। घर-परिवार के बारे में, निजी दुख-तकलीफ़ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े से बड़े दुख में उनके सुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है।'हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह'। मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फ़ादर के शब्दों से झरती विरल शांति भी।

1- फ़ादर की झुँझलाहट किस कारण थी?

2- दुख में फ़ादर के सांत्वना भरे दो शब्द सुनने वाले पर क्या प्रभाव डालते हैं?

3- 'उपेक्षा' का विलोम क्या है ?

उत्तर

1- हिन्दी भाषियों द्वारा ही हिन्दी की उपेक्षित स्थिति ही फादर की झुंझलाहट का कारण थी |

2- दुख में उनके सुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है |

3- 'उपेक्षा' का विलोम 'अपेक्षा' है |

(3) "भारत जाने की बात क्यों उठी? नहीं जानता बस मन में था" उनकी शर्त मान ली गई और भारत आ गए। पहले जिसेट संघ में दो साल पादरियों के बीच धर्माचार की पढ़ाई की।फिर 9-10 वर्ष दार्जिलिंग में पढ़ते रहे। कलकत्ता से बी.ए. किया और फिर इलाहाबाद से एम. ए. । इन दिनों डॉ. धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। शोध-प्रबंध प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रहकर 1950 में पूरा किया- ' रामकथा उत्पति और विकास।' परिमल में उसके अध्याय पढ़े गए थे| फादर ने मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक ब्लू बर्ड का रूपांतरण भी किया नील पंछी के नाम से| हैदराबाद में वह सैंट जेवियर कॉलेज में हिन्दी तथा संस्कृत

विभाग के विभागाध्यक्ष हो गए और यही उन्होंने अपना प्रसिद्ध अंग्रेज़ी हिन्दी शब्द कोश तैयार किया और बाइबल का अनुवाद भी किया

1- फादर की किस शर्त का उल्लेख किया है ?

2- फादर ने किसका अनुवाद किया है ?

3- फादर ने कौन सा शब्द कोष तैयार किया ?

उत्तर

1- फादर ने अध्ययन के लिए भारत जाने की शर्त रखी, उसी का उल्लेख है |

2- फादर ने मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक ब्लू बर्ड का रूपांतरण नील पंछी के नाम से किया |

3- फादर ने अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोष तैयार किया |

लघुत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न-1 आशय स्पष्ट कीजिए -

"फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है"|

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति में फादर बुल्के के व्यक्तित्व का प्रभाव दिखाया गया है| फादर की स्मृति को शांत संगीत सुनने जैसा कहा गया है| जिस प्रकार उदास और शांत संगीत हमारे मन में भी उदासी और शांति की अनुभूति उत्पन्न कर देता है उसी प्रकार फादर की स्मृति भी लेखक को उदासी और शांत भाव से भर देती है |

प्रश्न.2 फादर बुल्के के मन में सन्यास ग्रहण करने की बात क्यों उठी होगी ? अनुमान से कारण बताइए |

उत्तर- फादर बुल्के स्वभाव से साधु के गुणों से युक्त थे| वे मानव सेवा में अपना जीवन अर्पित करना चाहते थे| इसलिए उन्होंने सन्यासी जीवन ग्रहण कर भारत आने का निश्चय किया होगा संभवत वे भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति यहाँ के ज्ञान,रीतिरिवाज़,धार्मिकता,समाज आदि से प्रभावित रहे होंगे| जिसके कारण उन्होंने यहाँ आने का मन बनाया होगा |

प्रश्न3 ' नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है |"आशय स्पष्ट कीजिये|

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से फादर कामिल बुल्के की मृत्यु पर उपस्थित जन समूह के दुःख को व्यक्त किया गया है| फादर की मृत्यु से वहाँ उपस्थित सभी लोग शोक संतप्त थे |

प्रश्न-4 बुल्के की उपस्थिति लेखक को देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी ?

उत्तर- फादर हर अवसर पर लेखक के पास उपस्थित रहते थे उनके घरेलू उत्सवों संस्कारों में फादर बढ़े भाई और पुरोहित की भूमिका में होते और अपने स्नेह आशीष देते | दुःख और विपदा के समय वे लेखक को सँभालतेऔर सांत्वना देते थे | उनकी उपस्थिति देवदार वृक्ष की छाया के समान शांति एवं शीतलता प्रदान करता है |

प्रश्न 5 फादर कामिल बुल्के की चारित्रिक विशेषताएँ लिखें |

उत्तर- मित्रवत व्यवहार, ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा, सभी के लिए दया-भाव, सभी के प्रति कल्याण का भाव, सभी से मेल जोल रखना |

प्रश्न 6 लेखक ने फादर कामिल बुल्के के लिए यह क्यों कहा कि उन्हें जहरबाद से नही मरना चाहिए था।

उत्तर- फादर बुल्के ने आजीवन दूसरों के दुखों को दूर करने के लिए प्रयत्न किए ।वे सभी के प्रति प्रेम सहानुभूति करूणा का भाव रखते थे। अतः उनकी कष्टप्रद मौत को लेखक उनके प्रति अन्याय मानते है।

एक कहानी यह भी - मन्नू भण्डारी

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

1.

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें। पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फरमाइश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थी वे । उन्होंने ज़िंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा

नहीं, चाहा नहीं- केवल दिया ही दिया । हम भाई-बहनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी से लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका.........न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता ।

प्रश्न -

1. कैसे कहा जा सकता है कि लेखिका की माँ के अन्दर धरती से अधिक सहनशक्ति थी?
2. लेखिका के लिए उनकी मां की त्याग-भावना आदर्श क्यों नहीं बन सकी?
3. कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखिका की बेपढी - लिखी माँ भारतीय स्त्री की प्रतिनिधि पात्र हैं ?

उत्तर -

1- माँ पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फरमाइश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थी, इसलिए ये कहा जा सकता है कि लेखिका की माँ के अन्दर धरती से अधिक सहनशक्ति थी |

2- लेखिका के लिए उनकी मां की त्याग-भावना आदर्श क्यों नहीं बन सकी क्योंकि वह भावना मज़बूरी में लिपटी थी |

3- भारतीय नारी युगों से पुरूष के शोषण को सहते हुए आई है । उसके आश्रय में रहकर स्वयँ को कमजोर समझती रही इसलिए हर दवाब को सहन करना उसकी प्रवृत्ति बन गई है । सहनशीलता , त्याग उसके जीवन का आधार है । यही गुण लेखिका की माँ में दिखाई देता है ।

2.

सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहम्, उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना, क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थी। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी। वे जिन्होंने आंख मूंदकर सबका विश्वास करने वाले पिता के बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

प्रश्न -

1. 'सिकुड़ती आर्थिक स्थिति' का आशय क्या है ?
2. लेखिका के पिता के क्रोध का शिकार सर्वाधिक कौन होता था?
3. पिता के साथ ऐसा क्या घटित हुआ कि वे अपनों पर भी शक करने लगे -

उत्तर -

1-आर्थिक रूप से कमज़ोर होना |

2-लेखिका के पिता के क्रोध का शिकार सर्वाधिक शिकार लेखिका की माँ होती थी |

3-विश्वासघात के कारण पिता अपनों पर ही शक करने लगे |

3.

पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है.....बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक । होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी -न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं...........कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कही प्रतिच्छाया के रूप में । केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा

और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिल्कुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है । समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए........स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे,हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं ही कर सकता ।

प्रश्न - 1. लेखिका के व्यवहार में पिता के किस व्यवहार की झलक दिखाई देती थी?

2. वह कौन सी बात है जिससे हम कभी मुक्त नहीं हो पाते?

3.लेखिका का टकराव अक्सर किससे होता था?

उत्तर

1-लेखिका के व्यवहार में पिता के शक्की स्वभाव की झलक दिखाई देती है |

2-लेखिका अपने आसन्न अतीत की यादों से कभी मुक्त नहीं हो सकती थी |

3-लेखिका का टकराव अक्सर अपने पिताजी से होता रहता था |

लघूत्तरीय प्रश्न (2 अंक) -

प्रश्न 1. लेखिका ने अपने पिता को किन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते देखा था?

उत्तर- लेखिका ने अपने पिता को नाम, सम्मान, प्रतिष्ठा, समाज के काम, विद्यार्थियों को अपने घर में रखकर पढ़ाने, खुशहाल दरियादिल, कोमल और संवेदनशील होने के गुणों के भग्नावशेषों को ढोते देखा था ।

प्रश्न 2. वह कौन सी घटना थी जिसको सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर- लेखिका जिस कॉलेज में पढ़ती थी, उस कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र पिताजी के नाम आया था। उसमें पिता जी से पूछा था कि उस पर अनुशासनात्मक कार्यवाही क्यों नहीं की जाए? पिताजी को इसलिए कॉलेज बुलाया था। पिताजी उस पत्र को पढ़कर आगबबूला हो गए । उन्हें लगा कि उनके पाँच बच्चों में से लेखिका ने उनके नाम पर दाग लगा दिया। वे लेखिका पर उबलते हुए कॉलेज पहुँचे। पिताजी के पीछे लेखिका पड़ोस में जाकर बैठ गई जिससे वह लौटने पर पिता जी के क्रोध से बच सके परन्तु जब वे कॉलेज से लौटे तो बहुत प्रसन्न थे, चेहरा गर्व से चमक रहा था । वे घर आकर बोले कि उसका कॉलेज की लड़कियों पर बहुत रौब है। पूरा कॉलेज तीन लड़कियों के इशारे पर खाली हो जाता है । प्रिंसिपल को कॉलेज चलाना असंभव हो रहा है। पिताजी को उस पर गर्व होने लगा कि वह देश की पुकार के समय देश के साथ चल रही है, इसलिए इसे रोकना असंभव था। यह सब सुनकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ न ही अपने कानों पर ।

प्रश्न 3. लेखिका का 'पड़ोस कल्चर' से क्या तात्पर्य है? आधुनिक जीवन में 'पड़ोस कल्चर' विच्छिन्न होने का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर- पड़ोस कल्चर' से लेखिका का तात्पर्य है-घर के आसपास रहने वालों की संस्कृति। आधुनिक जीवन में अत्यधिक व्यस्तता के कारण महानगरों के फ्लैट में रहने वालों की संस्कृति ने परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' से बच्चों को अलग करके उन्हें अत्यधिक संकीर्ण, असहाय और असुरक्षित बना दिया है ।

प्रश्न 4. माँ के धैर्य और सहनशक्ति को लेखिका ने धरती से भी ज्यादा क्यों बताया है?

उत्तर- लेखिका ने माँ के धैर्य और सहनशक्ति को लेखिका ने धरती से भी ज्यादा बताया है क्योंकि पृथ्वी की सहनशक्ति और धैर्य तब जवाब दे देते हैं जब वह भूकंप बाढ़ आदि के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है।

लेकिन लेखिका की माँ पिताजी की प्रत्येक ज़्यादती को चुपचाप सहन कर जाती है और बच्चों को प्रत्येक उचित-अनुचित फरमाइश और ज़िद को अपना कर्तव्य मानकर सहज भाव से स्वीकार कर लेती थी ।

प्रश्न 5. लेखिका ने यह क्यों कहा कि पिताजी कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे?

उत्तर- लेखिका के पिताजी में विशिष्ट बनने और बनाने की प्रबल लालसा थी, दूसरी ओर उनमें अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर भी सजगता थी । वे आधुनिकता और परंपरा दोनों का निर्वाह करना चाहते थे । एक ओर लेखिका के जलसे-जुलूसों में नारे लगवाने-लगाने, हड़ताल करवाने और भाषण देने के विरूद्ध थे तो दूसरी ओर लेखिका के इन्हीं कार्यों पर गर्व से फूल उठते थे इसलिए लेखिका ने कहा कि पिताजी एक साथ कितनी तरह के अंतर्विराधों में जीते थे ।

प्रश्न 6. लेखिका मन्नू भंडारी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

उत्तर- लेखिका स्वतंत्र विचारों की पक्षधर थी जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया । वह साहसी और जुझारू व्यक्तित्व की घनी थी ।

प्रश्न 7. लेखिका की साहित्य के प्रति रूचि जागृत होने का प्रमुख कारण क्या है?

उत्तर -लेखिका की अध्यापिका शीला अग्रवाल के प्रोत्साहन व मार्गदर्शन में उन्होंने हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों की कृतियों का अध्ययन किया । साथ ही वे अपनी अध्यापिका के साथ साहित्यिक चर्चाएँ भी करती रहीं ।

प्रश्न 8. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में लेखिका का क्या सक्रिय योगदान रहा?

उत्तर- लेखिका स्थानीय स्तर पर धरने, प्रदर्शन, हड़ताल कराती व अंग्रेजी सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करती व सार्वजनिक सभाओं में भाषण प्रस्तुत करती ।

प्रश्न 9. लेखिका के पिता के क्रोधी और शक्की होने के क्या कारण थे?

उत्तर- लेखिका के पिता महत्वाकांक्षी थे, उनमें नवाबी आदतें थीं तथा वे सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठा पाने व शीर्ष पर रहना चाहते थे । इस क्षेत्र में असफल रहने व आर्थिक रूप से पिछड़ने पर वे क्रोधी हो गए । साथ ही अपनों ही के द्वारा विश्वासघात किए जाने पर वे शक्की हो गए ।

प्रश्न 10. लेखिका के पिता उन्हें सामान्य लड़कियों से कैसे भिन्न बनाना चाहते थे?

उत्तर- लेखिका के पिता चाहते थे कि उनकी बेटी सामान्य लड़कियों की तरह गृहस्थी के कार्यों में अपनी प्रतिभा धूमिल न कर रचनात्मक, सृजनात्मक कार्यों एवं सामाजिक, राजनैतिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी करें तथा जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी छवि स्थापित करें ।

नौबत खाने में इबादत - यतींद्र मिश्र

निम्नलिखित गद्यांश में से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए -

1.

सचमुच हैरान करती है काशी - पक्का महल से जैसे मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गई। एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक की शांति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है। काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं, उसी तरह मुहर्रम -ताजिया और होली-अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा। पिफर भी कुछ बचा है जो सिर्फ काशी में हैं। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है। काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज सिखाने वाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा ।

प्रश्न -

1. गंगा-जमुनी संस्कृति का क्या आशय है?
2. काशी में मरण को कैसा माना गया है?
3. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को किसके समान बताया गया है?

उत्तर -

1- मिली-जुली संस्कृति
2- काशी में मरण को मंगल माना गया है |
3- उस्ताद बिस्मिल्लाह को नायाब हीरे के समान बताया गया है |

2.

काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनन्दकानन के नाम से प्रतिष्ठित। काशी में कलाध्र हनुमान व नृत्य विश्वनाथ है। काशी में बिस्मिल्ला खाँ हैं। काशी में हजारों सालों का इतिहास है जिसमें पंड़ित कंठे महाराज हैं, विद्याधी हैं, बड़े रामदास जी हैं, मौजुद्दीन खाँ हैं व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जनसमूह है। यह एक अलग काशी है जिसकी अलग तहजीब है, अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हैं। इनके अपने उत्सव हैं, अपना सेहरा-बन्ना और अपना नौहा। आप यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से, बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते।

प्रश्न -

1. काशी किसकी पाठशाला है?
2. शास्त्रों में काशी किस नाम से प्रसिद्ध है?
3. काशी का जनसमूह कैसा है?

उत्तर -

1- काशी को संस्कृति की पाठशाला कहा गया है ।
2- काशी आनन्द कानन के नाम से प्रसिद्ध है |
3- काशी का जनसमूह रसिकों से उपकृत है ।

3

शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे थे। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त बाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती थी। लाखों सजदें इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते थे। वे नमाज के बाद सज़दे में गिड़गिड़ाते थे- मेंरे मालिक सुर बख्श दें। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आए।

प्रश्न -

1. शहनाई की मंगल ध्वनि के नायक कौन थे ?
2. पाँचों वक्त की नमाज़ किसे पाने में खर्च हो जाती थी?
3. बिस्मिल्ला खाँ नमाज के बाद सज़दे में गिड़गिड़ाते हुए क्या माँगते थे?

उत्तर

1- शहनाई की मंगल ध्वनि के नायक उस्ताद बिस्मिल्लाह खान थे |

2- पाँचों वक्त बाली नमाज सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती थी।

3-वे सज़दे में गिड़गिड़ाते थे - मेंरे मालिक सुर बख्श दें। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आए |

4.

अमीरुद्दीन की उम्र अभी 14 साल है। मसलन बिस्मिल्ला खाँ की उम्र अभी 14 साल है। वही काशी है। वही पुराना बाला जी का मंदिर जहाँ बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज़ के लिए जाना पड़ता है। मगर एक रास्ता है बालाजी मंदिर तक जाने का। यह रास्ता रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से होकर जाता है। इस रास्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनाव कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा के मार्फत ड्योढ़ी तक पहुँचते रहते हैं। रसूलन बाई और बतूलन बाई जब गाती है तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती है। अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर मिली है। एक प्रकार से उनकी अबोध् उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलन बाई और बतूलन बाई ने उकेरी है।

प्रश्न -

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का क्या नाम था?
2. बालाजी मंदिर जाने का रास्ता किसके यहाँ से होकर गुजरता था?
3. रसूलन बाई एवं बतूलन बाई कौन थी?

उत्तर -

1- उनके बचपन का नाम अमीरुद्दीन था ।

2- बालाजी मंदिर जाने का रास्ता रसूलन बाई एवं बतूलन बाई नामक गायिका बहनों के यहाँ से होकर गुजरता था |

3- रसूलन बाई एवं बतूलन बाई को गायिका बहनें थीं |

लघूत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1. शहनाई और डुमराँव एक दूसरे के लिए उपयोगी कैसे है?

उत्तर शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग किया जाता है। रीड 'नरकट' नामक एक घास से बनाई जाती है जो मुख्य रूप से डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है। इसी के कारण शहनाई जैसा वाद्य बजता है।

प्रश्न 2. संगीत में सम का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि बिस्मिल्ला खां को सम की समझ कब और कैसे आ गई थी?

उत्तर संगीत में सम का आशय है संगीत का वह स्थान जहाँ लय की समाप्ति और ताल का आरंभ होता है। बिस्मिल्ला खां में सम की समझ बचपन में ही आ गई थी। जब वह अपने मामा अलीबख्श खां को शहनाई बजाते हुए सम पर आते सुनता तो धड से पत्थर ज़मीन पर मारकर दाद देता था।

प्रश्न 3 काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा गया है?

उत्तर काशी संस्कृति की पाठशाला है यहाँ भारतीय शास्त्रों का ज्ञान है, कलाशिरोमणि यहाँ रहते हैं, यह हनुमान और विश्वनाथ की नगरी है यहाँ का इतिहास बहुत पुराना है, यहाँ प्रकांड ज्ञाता, धर्मगुरू और कलाप्रेमियों का निवास है।

प्रश्न 4. बिस्मिला खां दो कौमों में भाईचारे की प्रेरणा कैसे देते रहे?

उत्तर॰ बिस्मिल्ला खां जाति से मुसलमान थे और धर्म की दृष्टि से इस्लाम धर्म को भेजने वाले पाँच वक्त नमाज पढ़ने वाले सच्चे मुसलमान। मुहर्रम से उनका विशेष जुड़ाव था। वे बिना किसी भेदभाव के हिन्दू, मुसलमान दोनों के उत्सवों में मंगल ध्वनि बजाते थे। उनके मन में बालाजी के प्रति विशेष श्रद्धा - थी। वे काशी से बाहर होने पर भी विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते और शहनाई बजाते थे। इस प्रकार वे दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे।

प्रश्न 5. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर हमें बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की सादगी, फकीरी स्वभाव, स्वाभिमान तथा कला की प्रति उनकी अनन्य भक्ति और समर्पण ने प्रभावित किया है। वे अपने जीवन में अपने मज़हब के प्रति अत्यधिक समर्पित होते हुए भी किसी धर्म और जाति की संकीर्णताओं में नहीं बंधे । सच्चे मुसलमान होते हुए भी काशी के बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति श्रध्दा - रखना उनके व्यक्तित्व की अन्यतम विशेषता है। भारत रत्न जैसी सम्मानित उपाधिमिलने के बाद भी उनके व्यक्तित्व में किसी प्रकार का अहंकार नहीं आने पाया। फटा हुआ तहमद बाँधकर ही वे सभी आगंतुकों से मिलते थे यह उनके व्यक्तित्व की सादगी और फकीराना स्वभाव का ही परिचायक है।

प्रश्न 6. काशी में सब कुछ एकाकार कैसे हो गया है?

उत्तर काशी में संगीत भक्ति से, भक्ति कलाकार से, कजरी चैती से, विश्वनाथ विशालाक्षी से, और बिस्मिल्ला खाँ गंगाद्वार से मिलकर एक हो गए हैं, इन्हें अलग-अलग करके देखना संभव नहीं है।

प्रश्न 7. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर 1. डुमराँव गाँव की सोन नदी के किनारों पर पाई जाने वाली नरकट घास से शहनाई की रीड बनती है।

2. प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराँव गाँव ही है।

3. बिस्मिल्ला खाँ के परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के ही निवासी थे। इन्हीं कारणों से शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किया जाता है।

प्रश्न 8. सुषिर वाद्यों से क्या अभिप्राय है?

उत्तर सुषिर वाद्यों से अभिप्राय है-फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य। जैसे - शहनाई, बीन, बाँसुरी आदि।

प्रश्न 9. शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाध् क्यों दी गई होगी?

उत्तर शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि देने के कारण निम्नलिखित रहे होंगे -

1. फूँककर बजाए जाने वाले वाद्यों में शहनाई सबसे अध्कि सुरीली है।
2. मांगलिक विधिविधानों में इसका उपयोग होता है।

प्र.10. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक निम्नलिखित कारणों से कहा गया है -

1. अपना सानी न रखने के कारण।
2. मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करवाने वाले होने के कारण।

प्रश्न 11. बिस्मिल्ला खाँ की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर 1. ईश्वर में आस्था 2. कला प्रेमी 3. भावुक
4. सादा जीवन उच्च विचार वाले 5. संगीत प्रेमी 6. लग्नशील, मानवता प्रेमी

प्रश्न 12. बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई में क्या-क्या समाया हुआ है?

उत्तर. बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई में संगीत के सातों सुर, स्वयं परवरदिगार, गंगा माँ तथा उनके उस्ताद की नसीहतें समाई हुई है।

प्रश्न 13. काशी में हो रहे कौन-कौन से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे -

1. संगीत साहित्य और अदब की बहुत-सी परम्पराओं का लुप्त होना।
2. खान-पान संबंधी पुरानी चीजें न मिलना।
3. गायकों के मन में संगतियों के प्रति आदर न रहना।
4. गायक द्वारा रियाज़ करने में कमी।
5. सांप्रदायिक सद्भाव का कम होना।

सूरदास

(1)

ऊधो, तुम हो अति बडभागी,
अपरस रहत सनेह तगा तै, नाहिन मन अनुरागी ।
पुरईन पात रहत जल भीतर , ता रस देह न दागी ।
ज्यों जल माँह तेल की गागरि , बूँद न ताकौ लागी।
प्रीति-नदी मैं पाऊँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी ।
सूरदास अबला हम भोरी , गुर चाँटी ज्यौं पागी ।

क- गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान क्यों कहती हैं ?
ख- उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है ?
ग- "गुर चाँटी ज्यौं पागी" में कौन किसका प्रतीक है ?

उत्तर-

क- अनुराग न होने के कारण उन्हें किसी की विरह वेदना नहीं झेलनी पड़ी|

ख - उद्धव के व्यवहार की तुलना पानी में पड़े रहने वाले कमल के पत्ते से की गई है। जल में पड़ी तेल की गागर से की गई है।

ग- गुड़ - कृष्ण का, चीटियाँ- गोपियों की ।

(2)

मन की मन ही माँझ रही ।
कहिए जाए कौन पै उधौ, नाही परत कही ।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही ।
अब इस जोग संदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही ।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तै, उत तै धार बही ।
सूरदास अब धीर धरहिं क्यों, मरजादा न लहि ।।

प्रश्न क- मरजादा न लहि ' के माध्यम से कौन -सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है ?

ख- गोपियाँ अब धैर्य धरने को तैयार क्यों नहीं है ?

ग- उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया ?

उत्तर क- कृष्ण ने अपने लोक - मर्यादा का पालन नही किया।अपने दिए हुए वचन का निर्वाह नही किया । योग संदेश भेजकर हमारे दुख को और बढा दिया ।

ख- गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण ने ही मर्यादा नहीं रखी तो वे किसके सहारे धैर्य धारण करें। जिस पर हमें विश्वास था, उसी ने हमें धोखा दे दिया ।

ग-गोपियों के मन में कृष्ण के आगमन की आशा विद्यमान थी। इसी आशा के बल पर वह वियोग की वेदना सह रही थीं, पर उद्धव के संदेश ने उस आशा को नष्ट कर दिया। जिससे उनका रहा-सहा धैर्य भी जाता रहा और उनकी विरह व्यथा और भी बढ़ गई ।

(3)

हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर , यह दृढ़ करि पकरी ।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री ।
सुनत जोग लागत है ऐसौ , ज्यों करूई ककरी ।
सु तौ ब्याधि हमकौ लै आए , देखी सुनी न करी ।
यह तौ सूर तिनहिं लै सौंपौं, जिनके मन चकरी ।

प्रश्न क-'हारिल की लकड़ी' किसे कहा है ?

ख- योग को गोपियों ने कड़वी ककड़ी क्यों कहा है ?

ग- उद्धव गोपियों के लिए किस तरह की व्याधि लेकर आए हैं ?

उत्तर :

क- कृष्ण के नाम को 'हारिल की लकड़ी' कहा गया है |

ख- जिस प्रकार मनुष्य कड़वी ककड़ी को अपने मुँह में एक क्षण के लिए भी नहीं रखता और तुरंत ही उसे फेंक देता है, उसी प्रकार गोपियाँ भी एक क्षण के लिए भी योग को नहीं अपनाना चाहतीं हैं ।

ग- उद्धव योग रूपी व्याधि लेकर आए हैं। योग रूखा तथा उन्हें कृष्ण से अलग करने वाला है । इसलिए वे इसे व्याधि कहती हैं ।

लघुत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1- उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है ?

उत्तर - उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है -

1-कमल के पत्ते से , जो जल में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होता ।

2. जल में पड़ी तेल की बूंद से , जो जल में घुलती-मिलती नहीं है ।

प्रश्न 2- गोपियाँ द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित हैं ?

उत्तर -यह व्यंग्य निहित हैं कि उद्धव कृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रभाव से सर्वथा अछूते हैं। उनके मन में अनुराग भाव उत्पन्न नहीं हुआ है। यह स्थिति उद्धव के लिए भाग्यशाली हो सकती है,गोपियों के लिए नहीं

प्रश्न 3 - गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने के लिए कहा है ?

उत्तर - गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने के लिए कहा है जिनके मन चकरी के समान घूमते रहते हैं । उन्हें ही योग के द्वारा मन एकाग्र करने की आवश्यकता है ।

प्रश्न 4 - सूरदास किस भक्ति मार्ग के समर्थक थे ?

उत्तर - सूरदास सगुण भक्ति मार्ग के समर्थक थे। इस मार्ग में भगवान के साकार रूप की उपासना की जाती है। इसलिए वे अपने पदों में योग मार्ग के विरूद्ध अपनी बात कहते हुए दिखाई पड़ते हैं ।

प्रश्न 5 - उद्धव गोपियों की मनोदशा क्यों नहीं समझ सके ?

उत्तर - उद्धव को निर्गुण ज्ञान पर अभिमान था। ज्ञान के दर्प में वे गोपियों के आदर्श प्रेम को नहीं समझ पाए।

प्रश्न 6 - भ्रमरगीत की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर - भ्रमरगीत में निर्गुण ब्रह्म का विरोध,सगुण की सराहना, वियोग श्रृंगार का मार्मिक चित्रण है । इसमें गोपियों की स्पष्टता, वाकपटुता,सहृदयता,व्यंग्यात्मकता सराहनीय है और एकनिष्ठ प्रेम, योग का पलायन, स्नेहासिक्त-उपालंभ अवलोकनीय हैं ।

प्रश्न 7 - गोपियों को राजधर्म की याद क्यों दिलानी पड़ी ?

उत्तर - प्रेम आदि की पवित्र नीतिपरक बातें भूलकर कृष्ण अनीति पर उतार आए हैं। अत: योग-संदेश को भेज कर प्रेम की मर्यादा के विरूद्ध कार्य कर रहे हैं । इसलिए उन्हें राजधर्म की याद दिलाकर प्रेम-नीति पर लाने का प्रयास किया गया ।

प्रश्न 8 - सूरदास के पढ़े गए पदों के आधार पर सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ बताइए ।

उत्तर - क- एकनिष्ठ प्रेम
ख- वाकपटुता
ग- गीत शैली
घ- व्यंग्यात्मक शैली

प्रश्न 9 - गोपियों के वाक चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर - स्पष्टता व व्यंग्यात्मक प्रयोग ।

प्रश्न 10 - योग संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - विरहाग्नि बढ़ गई । उनका मन दु:खी हो गया । उद्धव को उलाहने देने लगीं ।

पद-तुलसीदास

पद-1

नाथ संभु धनु भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ।।
आयसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाई बोले मुनि कोही ।।

सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई ।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा । न त मारे जैहंहि सब राजा ।।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने । बोले परसु धरहिं अवमाने ।।
बहु धनुहीं तोरी लरिकाई । कबहूँ न असि रिस कीन्हि गोसांई ।।
एहि धनु पर ममता केहि हेतु । सुनि रिसाई कह भृगुकुलकेतू ।।
रे नृपबालक कालबस, बोलत तोहि न संभार ।
धनुहीं सम त्रिपुरारि धनु, बिदित सकल संसार ।।

1. पद की भाषा और छंद के नाम लिखिए ।

उत्तर-अवधी भाषा तथा दोहा और चौपाई छंद ।

2. राम, लक्ष्मण और परशुराम के वचनों में कैसे मनोभाव है?

उत्तर- राम के वचनों में - विनम्रता
लक्ष्मण के वचनों में - व्यंग्य
परशुराम के वचनों में - क्रोध

3. सेवक का क्या गुण होता है? क्या परशुराम के अनुसार राम सच्चे सेवक थे?

उत्तर- सेवक का गुण होता है सेवा करना । परशुराम के अनुसार राम सच्चे सेवक नहीं थे, क्योंकि उन्होने शिव का धनुष तोड़कर शत्रुओं जैसा व्यवहार किया है ।

4. काव्यांश में प्रयुक्त अलंकार लिखिए ।

उतर प्रमुख अलंकार - अनुप्रास, अतिशयोक्ति

5-"सेवक सो जो करे सेवकाई" का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- इस पंक्ति का तात्पर्य है कि सेवक वह है जो सेवा करता है । प्रस्तुत पद में इस पंक्ति को व्यंग्य रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

पद-2

लखन कहा हंसि हमरे जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ।।
का छति लाभु जून धनु तोरे । देखा राम नयन के भांैरे ।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू । मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ।।
बोले चितै परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ।।
बालकु बोलि बधौं नहिं तोही । केवल मुनि जड़ जानहि मोही ।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही ।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही । बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ।
सहसबाहु भुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ।।
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर ।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ।।

प्रश्न 1. कवि व कविता का नाम लिखिए ।

उतर तुलसीदास। राम-लक्ष्मण, परशुराम संवाद ।

प्रश्न 2. लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के क्या क्या तर्क दिए?

उतर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर परशुराम से कहा-

- हमारी दृष्टि में सभी धनुष एक समान हैं
- पुराने शिव धनुष के टूटने पर क्या हानि-लाभ इत्यादि।

प्रश्न 3. काव्यांश में परशुराम ने अपने विषय में क्या-क्या कहा?

उतर परशुराम ने कहा मैं बाल ब्रहमचारी हूं, महाक्रोधी हूं, क्षत्रिय कुल संहारक हूं ।

प्रश्न 4. परशुराम ने लक्ष्मण को धमकाते हुए क्या कहा?

उतर लक्ष्मण को धमकाते हुए कहा कि मैं निरा मुनि नहीं हूं। मैने अनेक बार इस पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन किया है । मै सहस्रबाहु से लोहा लेने में समर्थ हूं । तुम्हें बालक समझकर छोड़ रहा हूं ।

प्रश्न 5. काव्यांश में प्रयुक्त अलंकार लिखिए ।

उतर प्रमुख अलंकार - अनुप्रास, अतिशयोक्ति ।

पद-3

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महाभट मानी ।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । चहत उड़ावन फूँक पहारू ।
इहा कुम्हड़बतिया कोऊ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।
देखि कुठारू सरासन बाना । मैं कुछ कहा सहित अभिमाना ।
भृगु सुत समुझि जनेऊ बिलोकी । जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी ।
सुर महिसुर हरिजन अरू गाई । हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ।
बधें पापु अपकीरति हारें । मारतहू पा परिअ तुम्हारे ।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा । व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ।
जो विलोकि अनुचित कहेऊँ छमहु महामुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर ।।

1 "कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं" कहकर लक्ष्मण क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर- लक्ष्मण कहना चाहते हैं कि हम कमजोर या कायर नहीं हैं कि आपके इस क्रोध से डर जाएँगे ।

2 'पुनि-पुनि' में कौन सा अलंकार है?

उत्तर-पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

3 लक्ष्मण ने मुनि से कठोर वचन क्या सोच कर कहे थे?

उत्तर-लक्ष्मण ने परशुराम के हाथ मे कुल्हाड़ा और कंधों पर धनुष-बाण देखकर सोचा कि वे कोई वीर योद्धा होंगे अतः यही सोचकर लक्ष्मण ने मुनि से कठोर वचन कहे थे ।

4-पठित कविता के आधार पर तुलसीदास की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर- तुलसीदास की भाषा अवधी है । इसमें दोहा, चौपाई शैली को अपनाया गया है।

5 कवि व कविता का नाम लिखिए ।

उतर तुलसीदास। राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

पद-4

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहि जान विदित संसारा ।
माता पितहि उरिन भये नीके । गुररिनु रहा सोचु बड़ जी के ।।
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा । दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा ।
अब आनिअ व्यवहरिआ बोली । तुरत देउँ मैं थैली खोली।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाय हाय सब सभा पुकारा ।।
भृगुबर परसु देखाबहु मोही । बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही ।
मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े । द्विजदेवता घरहि के बाढ़े ।।
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे । रघुपति सयनहि लखनु नेवारे ।।

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ।

1 लक्ष्मण जी ने परशुराम जी की प्रशंसा करते हुए क्या व्यंग्य किया?

उत्तर- लक्ष्मण जी ने परशुराम जी पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आपके शील के बारे में कौन नहीं जानता कि आपका कितना अच्छा शील है, सारा संसार इसके बारे में जानता है ।

2 लक्ष्मण के अनुसार परशुराम माता-पिता के ऋण से कैसे मुक्त हुए?

उत्तर- परशुराम अपने पितृहन्ता सहस्रबाहु की भुजाओं को काटकर पितृऋण से मुक्त हुए थे ।

3. लक्ष्मण किस ऋण की और किस ब्याज की बात कर रहे थे?

उत्तर- लक्ष्मण परशुराम के गुरूजन के ऋण की और उसके ब्याज की बात कर रहे हैं। उनके अनुसार परशुराम अपने गुरू शिव को प्रसन्न करना चाहते हैं इसलिए शिव धनुष तोड़ने वाले का वध करना चाहते हैं ।

4. लक्ष्मण की कटु बातें सुन कर परशुराम ने क्या प्रतिक्रिया की?

उत्तर- लक्ष्मण की कटु बातें सुनकर परशुराम ने तुरन्त अपना फरसा संभाल लिया और क्रोधित और आक्रामक मुद्रा में खड़े हो गए ।

5. परशुराम को फरसा संभालते देखकर सभा और लक्ष्मण की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर- सारी सभा त्राहि-त्राहि के कोलाहल से गूँज उठी । लक्ष्मण परशुराम के प्रति अधिक क्रूर और आक्रामक हो गए ।

प्रश्न उत्तर-

प्रश्न 1-परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए।

1. सभी धनुष तो एक समान होते हैं, फिर इस धनुष का इतना हो-हल्ला क्यों?
2. इस पुराने धनुष को तोड़ने पर हमें क्या मिलता है?
3. राम के छूने भर से ही वह धनुष टूट गया, इसमें राम का क्या दोष ?

प्रश्न 2. इस पाठ के आधार पर परशुराम के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर- पाठ को पढ़कर हमें परशुराम के स्वभाव की निम्नलिखित विशेषताएं पता लगती हैं-

1. वे महाक्रोधी थे ।
2. वे बड़बोले तथा अपनी वीरता की डींग हांकने वाले थे ।
3. वे जल्द ही उत्तेजित हो जाते थे ।
4. उन्हें अपने पूर्व के कृत्यों का बड़ा घमंड था ।

प्रश्न 3-"सेवक सो जो करे सेवकाई" का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- इस पंक्ति का तात्पर्य है कि सेवक वह है जो सेवा करता है । प्रस्तुत पद में इस पंक्ति को व्यंग्य रूप में प्रस्तुत किया गया है । परशुराम कहते हैं कि शिव धनुष तोड़कर तुमने काम तो शत्रुओं जैसा किया है । अपने आपको तुम मेरा दास कहते हो यह दोहरा व्यवहार नहीं चलेगा ।

प्रश्न 4-लक्ष्मण ने वीर योद्धा की कौन-कौन सी विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- लक्ष्मण द्वारा वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताओं पर प्रकाश डाला कि शूरवीर युद्ध -भूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करता है । वह आत्म-प्रशंसा नहीं करता, वह कर्म पर आधारित होता है, वीरता का परिचय देता है ।

प्रश्न 5-पठित कविता के आधार पर तुलसीदास की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर- तुलसीदास की भाषा अवधी है । इसमें दोहा, चौपाई शैली को अपनाया गया है । गेय पद है उनकी भाषा में संस्कृत के द्वारा काव्य को कोमल और संगीतात्मक बनाने का प्रयास किया है।कोमल ध्वनियों का प्रयोग किया है ।

प्रश्न 6-पदों के आधार पर लक्ष्मण व राम के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- काव्यांश के आधार पर राम विनयशील, कोमल, गुरूजनों का आदर करने वाले, वीर, साहसी हैं। लक्ष्मण- उग्र, उद्दण्ड, वीर, साहसी, भाषा में व्यंग्य का भाव, स्वभाव से निडर हैं।

प्रश्न 7-किस कारण लक्ष्मण क्रोध को रोककर परशुराम के वचनों को सहन कर रहे थे?

उत्तर- लक्ष्मण क्रोध को रोककर परशुराम के वचनों को इसलिए सह रहे थे क्योंकि उनके कुल की परम्परा है। उनके यहां गाय, ब्राह्मण, हरिभक्त और देवताओं पर वीरता नहीं दिखाई जाती।

प्रश्न 8 लक्ष्मण की बढ़ती हुई उच्छंखृलता पर अब तक मौन रहे राम ने अंत में लक्ष्मण को क्यों रोक लिया?

उत्तर- यद्यपि लक्ष्मण की उच्छंखृलता रघुवंश के अनुकूल नहीं थी फिर भी राम समझ रहे थे कि मुनिवर को हमारी वास्तविकता का ज्ञान हो जाए। परन्तु उपस्थित लोगों की पुकार से स्थिति बिगड़ती देख उन्होंने लक्ष्मण को आँखों के संकेत से रोका।

बादल (सूर्य कांत त्रिपाठी 'निराला')

(1)

विकल विकल , उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा जल से फिर
शीतल कर दो-
बादल, गरजो!

प्रश्न 1- तप्त धरा से क्या आशय है ?

उत्तर- इसका प्रतीकार्थ है कि धरती के मनुष्य दुखों से पीड़ित, व्याकुल हैं तथा वे दिन प्रतिदिन के शोषण का शिकार हैं |

प्रश्न 2- इस कविता में बादल को किसका प्रतीक माना है ?

उत्तर- नव सृजन एवं नव- चेतना का ।

प्रश्न 3- कवि ने बादल से क्या प्रार्थना की है ?

उत्तर- कवि ने बादल से प्रार्थना करता है कि वह खूब बरसे और इस जग और धरा को शीतल कर दे अर्थात उनके कष्टों को हर ले ।

प्रश्न 4 बादल का अस्तित्व कैसा होता है ?

उत्तर- बादल का आस्तित्व क्षण भंगुर होता है, बाल कल्पना के समान |

प्रश्न 5 - कवि बादल से गरजने के लिए क्यों कह रहा है?

उत्तर- नया उत्साह एवं जोश भरने के लिए और सुखमय जीवन के लिए |

(2)

बादल गरजो! -
घेर घेर घोर गगन, धराधार ओ !
ललित ललित , काले घुँघराले
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत -छवि उर में, कवि नव जीवन वाले
वज्र छिपा , नूतन कविता
फिर भर दो-
बादल, गरजो!

प्रश्न.1 इस पद का मुख्य स्वर क्या है ?

उ- प्रकृति के माध्यम से जीवन में उत्साह का संचार |

प्रश्न-2 ललित काले घुँघराले में प्रयुक्त अलंकार बताइए |

उ- मानवीकरण एवं पुनरुक्ति प्रकाश |

प्रश्न.3 कविता में किस छंद एवं शैली का प्रयोग किया गया है ?

उ- मुक्तक छंद एवं संबोधन शैली |

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1-कविता मे बादल किन- किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर- बादल प्यासों की प्यास बुझाने तथा खेतों में जल पहुँचाने वाला है । इन अर्थों में वह निर्माण का प्रतीक है। बादल क्रांति का संदेश लाकर शोषकों का अंत करता हैं । इस अर्थ मे वह विनाश का प्रतीक है।

प्रश्न 2- कवि बादल से फुहार रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए क्यों कहता है ?

उत्तर- कवि बादलों को क्रांति या बदलाव का प्रतीक मानता है। बदलाव हेतु तीव्र प्रहार की आवश्यकता होती है। यह कार्य धीमे-धीमे या मृदुता से नही हो सकता । बादलों के गर्जन-तर्जन में ही यह शक्ति निहित है । अतः कवि बादल से फुहार रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहता है।

प्रश्न 3- कवि ने बादलों को नवजीवन वाले क्यों कहा है?

उत्तर- बादल तप्त धरा पर जल बरसा कर धन-धान्य को संभव बनाते हैं साथ ही बादल प्यासों की प्यास बुझाते है।इस तरह एक अर्थ में वे लोगों को नवजीवन प्रदान करते हैं।इसलिए कवि ने उन्हें नवजीवन वाले कहा है।

अट नही रही सूर्यकांत त्रिपाठी “निराला”

(1)

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर पर कर देते हो
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।

प्रश्न 1- उपर्युक्त पंक्तियों में कवि किसका वर्णन कर रहा हैं ?

उत्तर- फागुन के सौंदर्य ।

प्रश्न 2-‘अट नहीं रही है’ का प्रयोग यहाँ किसके लिए हुआ है ?

उत्तर- प्रकृति- सौंदर्य के लिए, क्योंकि प्रकृति की शोभा अद्वितीय हैं।

प्रश्न 3- फागुन के साँस लेते ही प्रकृति में क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं ?

उत्तरः-संपूर्ण वातावरण सुवासित हो उठा है। प्रकृति पल्लवित,पुष्पित हो गई है।

प्रश्न 4- प्रकृति के परिवर्तन का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

उत्तरः- कवि का मन कल्पना की उड़ान भरने लगता है।

प्रश्न 5-’घर- घर’ व ‘पर-पर’ शब्द के द्वारा कवि क्या व्यक्त करना चाहता है ?

उत्तरः- ’घर- घर’ से तात्पर्य है संपूर्ण धरा । ‘पर-पर’ शब्द कवि की अति उत्त्साह की मनोवृति को व्यक्त करता है।

(2)

पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध -पुष्प-माल,
पाट- पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।

प्रश्न 1-पाट- पाट में कौन सा अलंकार है ?

उत्तरः -पुनरूक्तिप्रकाश अलंकार

प्रश्न 2-उर में पुष्प माल पड़ने का क्या अर्थ है ?

उत्तरः- कवि कहना चाहता है कि फागुन के आगमन से वृक्ष पुष्पों से लद गए हैं।

प्रश्न 3- फागुन की शोभा का वर्णन कीजिए ?

उत्तरः- फागुन की शोभा सर्वत्र व्याप्त है।वृक्ष पत्तों एवं पुष्पों से लद गए हैं।उसकी शोभा प्रकृति मे समा नही रही है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1- कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नही हट रही है ?

उत्तर- फागुन मास , वसंत ऋतु का , होली के विभिन्न रंगों की निराली शोभा का मनमोहक दृश्य ।

यह दंतुरित मुसकान- नागार्जुन

(1)

तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात...
छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजात
पारस पाकर तुम्हारा ही प्राण ,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण

प्रश्न 1- जलजात का पर्यायवाची लिखिए।

उत्तर- कमल

प्रश्न 2- दंतुरित मुस्कान से क्या आशय है?

उत्तर- नन्हे बालक जिसके अभी दाँत निकल रहे हैं, उस बालक की मुस्कान को दंतुरित मुस्कान कहा गया है।

प्रश्न 3- " पारस पाकर तुम्हारा ही प्राण" पंक्ति का भाव लिखिए।

उत्तर- नन्हें बालक का स्पर्श पाते ही पाषाण हृदय भी द्रवित हो जलधारा के समान हो जाता है ।

प्रश्न 4- बालक की मुस्कान की क्या विशेषता है?

उत्तर- बालक की मुस्कान मृतक में भी जान डालने की क्षमता रखती है।

(2)

तुम मुझे पाए नहीं पहचान ?
देखते ही रहोगे अनिमेष !
थक गए हो ?
आँख लूँ मैं फेर ?
क्या हुआ यदि हो सके न परिचित पहली बार ?
यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज
मैं न सकता देख
मैं न सकता जान
तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान

प्रश्न 1- शिशु द्वारा कवि को अनिमेष देखने का कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बालक ने कवि को प्रथम बार देखा है और उसे पहचानने के प्रयास में पलक नहीं झपका रहा।

प्रश्न 2- कवि शिशु से अपनी नजर हटाने की अनुमति क्यों चाहता है?

उत्तर- कवि को लगता है कि लगातार देखने से शिशु थक जाएगा इसलिए विराम देना चाहिए।

प्रश्न 3- माँ के माध्यम न बनने पर कवि क्या देखने और जानने को वंचित रह जाता?

उत्तर- माँ के माध्यम न बनने पर कवि शिशु के बाल सौन्दर्य और बाल सुलभ क्रियाओं को देखने से वंचित रह जाता।

(3)

धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य !
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य !
इस अतिथि से प्रिय क्या रहा तुम्हारा सम्पर्क
उँगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होती जब की आँखें चार
तब तुम्हारे दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान!

प्रश्न 1- कवि ने स्वयं को प्रवासी, इतर, अतिथि जैसे संबोधनों से क्यों संबोधित किया है?

उत्तर- कवि आजीविका हेतु बाहर रहता है कभी-कभी ही उसका घर आना हो पाता है अत: बच्चे से उसका संपर्क नाममात्र को ही हो पाता है। इसलिए कवि ने स्वयं को प्रवासी, इतर, अतिथि जैसे संबोधनों से संबोधित कियाहै।

प्रश्न 2- प्रस्तुत पद में मधुपर्क का सांकेतिक अर्थ क्या है?

उत्तर- प्रस्तुत पद में मधुपर्क का सांकेतिक अर्थ है माँ की ममता तथा वात्सल्य जो वह अपने बच्चे पर लुटाती है।

प्रश्न 3- कवि बच्चे की माँ को धन्य क्यों कह रहा है?

उत्तर- कवि बच्चे की माँ को धन्य कह रहा है क्योंकि उसे सदा ही बच्चे का सामीप्य सुख मिलता है जबकि कवि इससे वंचित है।

प्रश्न-उत्तर

1. दंतुरित मुस्कान से क्या तात्पर्य है, इसकी क्या विशेषता है?

उत्तर- नन्हा बालक जिसके अभी दाँत निकल रहे हैं उस बालक की मुस्कान को दंतुरित मुस्कान कहा गया है। यह मुस्कान बहुत ही निर्मल और निश्छल है जो देखने वाले के ह्रदय में आनंद और उत्साह का संचार करती है।

2. मुस्कान एवं क्रोध भिन्न भाव हैं। आपके विचार से हमारे जीवन में इनके क्या प्रभाव पड़ते हैं?

उत्तर- मुस्कान और क्रोध भिन्न भाव हैं, मुस्कान प्रसन्नता को व्यक्त करती है और क्रोध असन्तोष और उग्रता प्रकट करता है।

3. दंतुरित मुस्कान कविता में किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

उत्तर- संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली।

4. इस कविता में किस शैली का प्रयोग किया गया है?

उत्तर- आत्मकथात्मक, प्रश्न एवं संबोधन शैली।

5. दंतुरित मुस्कान कविता किस युग की है?

उत्तर- आधुनिक काल (नई कविता)।

6. धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर- अनुप्रास

7. शिशु कवि को किस प्रकार देख रहा है, उस रूप पर कवि की क्या प्रतिक्रिया होती है?

उत्तर- अनिमेष (एकटक/लगातार) कवि को छवि मान (सौन्दर्य पूर्ण) लगती है।

8. "थक गए हो" यहाँ कवि भावुक हो उठा है कैसे?

उत्तर- शिशु के लगातार देखने से कवि भावुक हो उठा, उसे यह स्थिति कष्टप्रद लगती है इसलिए कवि ने ऐसा कहा है।

9. कवि ने स्वयं को इतर और अन्य क्यों कहा है?

उत्तर- क्योंकि वह प्रवासी है और शिशु कवि को प्रथम बार देख रहा है।

10. 'देखते तुम इधर कनखी मार' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- मुहावरे का प्रयोग -तिरछी नजर से देखना।

11. कवि ने स्वयं को प्रवासी क्यों कहा है?

उत्तर- प्राचीन काल से ही पुरुष आजीविका के लिए अपने घरों-गाँवों को छोड़कर बाहर जाता रहा है। बच्चे की माँ ही उसका पालन-पोषण करती है। पिता से बच्चों का संपर्क कभी-कभी ही हो पाता है, इसलिए कवि ने स्वयं को प्रवासी कहा है।

12. भाव स्पष्ट कीजिए- 'छू गया तुम से कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल।'

उत्तर- शिशु का सौन्दर्य ऐसा अद्‌भुत है कि उसके स्पर्श मात्र से कठोर या रसहीन व्यक्ति के हृदय में भी रस उमड़ आता है, उसका हृदय वात्सल्य से भर जाता है।

13.भाव स्पष्ट कीजिए-'छू गया तुम से कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल।'

उत्तर:- बच्चे की मनमोहक मुस्कान जादूभरी होती है | यह पाषाण हृदय में भी फूलों जैसी कोमलता एवं भाव प्रवणता उत्पन्न कर सकती है |

फसल-नागार्जुन

(1)

फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्‌टी का गुण धर्म है
रूपान्तरण है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का|.

प्रश्न 1- पद की भाषा पर टिप्पणी करें।

उत्तर- भाषा खड़ी बोली हिंदी है तथा तत्सम शब्दावली है।

प्रश्न 2- फसल को नदियों के पानी का जादू क्यों कहा गया है?

उत्तर- बिना नदियों के पानी के फसल का उत्पादन संभव नहीं है इसलिए फसल को नदियों के पानी का जादू कहा गया है।

प्रश्न 3- फसल को हाथों के स्पर्श की महिमा क्यों माना गया है?

उत्तर- फसलों को उगाने के लिए किसान दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं तब कहीं जाकर खेतों में फसललहलहाती है। किसानों के इसी श्रम को सम्मान देने के लिए फसल को हाथों के स्पर्श की महिमा माना गया है।

प्रश्न-उत्तर

1. कविता में फसल उपजाने के लिए किन आवश्यक तत्वों की बात कही गई है?

उत्तर- कविता में फसल उपजाने के लिए निम्न आवश्यक तत्वों की बात कही गई है-

* पानी * मिट्टी * धूप * हवा * मानव श्रम

2 . कवि ने फसल को जादू क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने फसल को जादू इसलिए कहा है क्योंकि फसल मिट्टी, हवा, पानी, धूप और मानव श्रम के मेल से बनी है।

3 किन-किन तत्वों के योगदान से फसल की उत्पत्ति होती है?

उत्तर- मिट्टी, पानी, धूप, हवा और मानव श्रम से फसल की उत्पत्ति होती है।

4 . फसल कविता का वर्तमान संदर्भ में महत्व बताइए?

उत्तर- प्रकृति और मानव श्रम का साकार और सार्थक रूप फसल है। आज भी परिश्रम का महत्व और प्रकृति का योगदान अपेक्षित है।

6. छाया मत छूना - गिरिजाकुमार माथुर

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए:-

1.

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया है
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया है
प्रभुता का शरण बिम्ब केवल मृगतृष्णा है
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन
छाया मत छूना । मन होगा दुःख दूना।।

प्रश्न1- मृगतृष्णा का क्या अर्थ है?

उत्तर- मृगतृष्णा का अर्थ है भ्रम , छलावा। मनुष्य जीवन भर वस्तुओं, मान-सम्मान के पीछे दौड़ता फिरता है। परंतु उसके हाथ कुछ भी नहीं लगता ।

प्रश्न2- यथार्थ के पूजन का क्या अर्थ है?

उत्तर- यथार्थ के पूजन का अर्थ है अतीत और भविष्य के दुखों और सपनों से मुक्त होकर वर्तमान में जो कुछ भी है उसे स्वीकार करना ।

प्रश्न3- 'चंद्रिका में छिपी रात कृष्णा है' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि सुख शाश्वत नही है वरन् प्रत्येक सुख का अंत निश्चित है और उसके साथ दुःख भी बांहों में बाहें डाले चलता है ।

प्रश्न.4 कवि एवं कविता का नाम बताओ.

उत्तर. छाया मत छूना -गिरिजाकुमार माथुर |

प्रश्न.5"छाया मत छूना" से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर- "अतीत की स्मृतियों को स्पर्श मत करो" ।

2.

दुविधा हत साहस है दिखता है पंथ नहीं
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नही ।
दुख है न खिला चांद शरद रात आने पर
क्या हुआ जो खिला फूल रस बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण
छाया मत छूना । मन होगा दुख दूना ।

प्रश्न1- पद की भाषा पर टिप्पणी कीजिए ।

उत्तर- भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा तत्सम शब्दावली है ।

प्रश्न2- कवि ने साहस को दुविधा हत क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने साहस को दुविधा हत कहा है क्योंकि व्यक्ति का साहस आशंकाओं और दुविधाओं के चलते नष्ट हो गया है । उसे यह सूझता नहीं है कि जीवन में क्या करना है ।

प्रश्न3- कवि ने पद में क्या संदेश दिया है?

उत्तर- पद में कवि ने अतीत की असफताओं और दुःख से उबरकर वर्तमान को अपनाने की सलाह दी है ।

प्रश्न 4 कवि ने यश, वैभव, मान आदि को किसके समान बताया है?

उत्तर- कवि ने यश, वैभव मान आदि को भ्रमित करने वाली मृगतृष्णा के समान बताया है । मनुष्य यश वैभव मान सम्मान के लिए भागता रहता है, किंतु वह केवल भ्रमित होकर भटकता ही रहता है ।

प्रश्न.5 कवि एवं कविता का नाम बताइए ?

उत्तर. छाया मत छूना मन -गिरिजाकुमार माथुर |

प्रश्न उत्तर-

प्रश्न 1- कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

उत्तर- कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात कही है क्योंकि वस्तुतः वर्तमान ही वास्तविक सत्य है । व्यक्ति को वर्तमान में ही जीना पड़ता है हम अपने वर्तमान से भाग नहीं सकते हैं। अतीत की मधुर यादें या भविष्य के मोहक सपने कुछ समय तक तो हमारा साथ दे सकते है पर अंततः हमें यथार्थ के धरातल पर ही लौटना पड़ता है ।

प्रश्न 2- कवि ने यश, वैभव, मान आदि को किसके समान बताया है?

उत्तर- कवि ने यश, वैभव मान आदि को भ्रमित करने वाली मृगतृष्णा के समान बताया है । मनुष्य यश वैभव मान सम्मान के लिए भागता रहता है, किंतु वह केवल भ्रमित होकर भटकता ही रहता है ।

प्रश्न 3- कवि ने छाया छूने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर- कवि ने छाया छूने के लिए मना किया है क्योंकि जो बीत गया है वह पुनः लौट कर आने वाला नहीं है अतः उसकी याद करने के बजाए हमें वर्तमान में अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए । अतीत की याद हमें दुःख ही देगी ।

प्रश्न 4- "देह सुखी हो पर मन के दुःख का अंत नही" का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य चाहे कितनी ही भौतिक सुख-सुविधाएं जोड़ ले, पर इससे केवल इसकी देह ही सुखी होगी मन नहीं । मन में जो दुःख मौजूद है वह इन कृत्रिम उपायों से मिटने वाला नहीं है ।

प्रश्न 5- कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर- कवि का संदेश है कि वर्तमान में जीवन जीने की कला विकसित करनी चाहिए । वर्तमान को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करना चाहिए । कल्पना लोक में विचरने से कोई लाभ नहीं ।

प्रश्न 6- 'छाया' शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है कवि ने उसे छूने के लिए क्यों मना किया है ।

उत्तर- 'छाया' शब्द अतीत की दुविधापूर्ण या भ्रमपूर्ण स्थितियों के लिए प्रयुक्त हुआ है । साथ ही अतीत की स्मृतियों के लिए भी । छायाएं वास्तविकता से दूर होती हैं इनके पीछे भागना दुख को बढ़ावा देना है ।

प्रश्न 7- कविता में व्यक्त दुख के कारण है?

उत्तर- 1. पुरानी खुशियों (सुखों) को याद कर वर्तमान को दुखी करना ।

2. वास्तविकता से मुख मोड़कर कल्पना में जीना ।

3. समय का सही उपयोग न जानना ।

4. वर्तमान जीवन के सुअवसरों का लाभ न उठाना ।

5. दुविधा और भ्रम की मृग तृष्णा में भटक कर दुविधाग्रस्त जीवन बिताना ।

8. कन्यादान - ऋतुराज

काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1.

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए हैं
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

प्रश्न 1. लड़की होने से क्या आशय है?

उत्तर - लड़की होने से आशय है, लड़की जैसे गुणों का होना। मन से सरल, भोली, समर्पणशील होना।

प्रश्न 2. माँ ने यह क्यों कहा कि आग रोटियाँ सेंकने के लिए हैं जलने के लिए नहीं?

उत्तर- माँ ने यह इसीलिए कहा क्योंकि उसके मन में वे पुरानी घटनाएँ मौजूद रहीं होगी जिनमें घर की बहुओं को जलाकर मार डाला गया था। इसलिए वह अपनी बेटी को समझा रही है।

प्रश्न 3. लड़की जैसी दिखाई मत देना का क्या आशय है?

उत्तर- आशय है कि अपने ऊपर किए जाने वाले अत्याचार को मत सहना। अपना शोषण मत होने देना।

प्रश्न 4. पद की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर - भाषा खड़ी बोली हिंदी है तथा तत्सम शब्दावली है।

प्रश्न.5 कवि एवं कविता का नाम बताओ.

उत्तर. ऋतुराज- कन्यादान |

2.

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पक्तियों की।

प्रश्न 1. 'लड़की अभी सयानी नहीं थी' -से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि लड़की अभी भोली तथा सरल है उसे दुनिया के छल-प्रपंचों की जानकारी नहीं है।

प्रश्न 2. 'लड़की को दुख बाँचना नहीं आता था' इसका क्या तात्पर्य है?

उत्तर- 'लड़की को दुःख बाँचना नहीं आता था' का तात्पर्य है कि लड़की जीवन की आनेवाली जिम्मेदारियों और कष्टों से भली-भांति परिचित नहीं थी।

प्रश्न 3-'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की'- से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि उसे उसके आगामी जीवन का एक धुंधला -सा अहसास था कि उसका जीवन अब कैसा होने वाला है, किंतु वह सभी बातों से परिचित नहीं थी। उसे केवल आने वाले सुख का अहसास था।

प्रश्न 4. कन्यादान देते वक्त माँ के दुःख को प्रामाणिक क्यों कहा गया है?

उत्तर कन्यादान देते वक्त माँ के दुःख को प्रामाणिक कहा गया है क्योंकि एक नारी होने के नाते अपने घर छोड़ने का दुःख वह सबसे अच्छी तरह से जानती है। वह जानती है कि उसकी लड़की के जीवन में कैसे-कैसे मोड़ आने वाले हैं।

प्रश्न 5. 'कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पक्तियों की' - आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इसका तात्पर्य है कि बेटी अभी केवल सहज भावों को ही समझ पाती है। स्नेह में पली बढ़ी बेटी को अभी दुखों को सहन करने की सामर्थ्य नहीं है।

लघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी?

उत्तर - माँ ने बेटी को निम्नलिखित सीख दी -

1. कभी अपनी सुंदरता और प्रशंसा पर मत रीझना।
2. गहनों और कपड़ों के बदले अपनी आजादी मत खोना।
3. त्यागी, सरल, भोली, स्नेही होना, पर अत्याचार न सहना।

प्रश्न 2. माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना?

उत्तर - माँ चाहती थी कि उसकी बेटी लड़की होने का, बहू होने का हर फर्ज़ निभाए, पर साथ-साथ वह यह भी चाहती थी कि उसकी बेटी कोई अत्याचार न सहे और कोई उसका फायदा न उठाए। इसलिए उसने कहा कि लड़की होना पर लड़की पर जैसी मत दिखाई देना।

प्रश्न 3. 'कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पक्तियों की' - आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इसका तात्पर्य है कि बेटी अभी केवल सहज भावों को ही समझ पाती है। स्नेह में पली बढ़ी बेटी को अभी दुखों को सहन करने की सामर्थ्य नहीं है।

प्रश्न 4. कन्यादान देते वक्त माँ के दुःख को प्रामाणिक क्यों कहा गया है?

उत्तर- कन्यादान देते वक्त माँ के दुःख को प्रामाणिक कहा गया है क्योंकि एक नारी होने के नाते अपने घर छोड़ने का दुःख वह सबसे अच्छी तरह से जानती है। वह जानती है कि उसकी लड़की के जीवन में कैसे-कैसे मोड़ आने वाले हैं।

प्रश्न 5. वैवाहिक जीवन की त्रासदी क्या है? नव-विवाहिता को ऐसा कब लगने लगता है कि वैवाहिक जीवन मर्यादाओं का बंधन मात्र है?

उत्तर- विवाह से पूर्व लड़की अनेक कल्पनाओं को संजोए रहती है। वर्तमान के अभावों में रहकर वह अपेक्षा करती रहती है कि विवाहोपरान्त मेरे जीवन में परिवर्तन आएगा। अपनी सभी अपेक्षाओं की पूर्ति होगी। यह धारणा बनाए रखती है और माँ के घर अभावों में रह रही बेटी विवाह के बाद सुख की ऊँची-ऊँची कल्पना, कामना करती है। विवाह के बाद उसकी कामनाओं पर पानी फिरता दिखाई देता है तो उसे जीवन त्रासदियों से भरा प्रतीत होने लगता है। यही उसके वैवाहिक जीवन की त्रासदी है। उसकी अपेक्षाओं के अनुसार वैवाहिक-जीवन नहीं होता है और पारिवारिक, सामाजिक मर्यादाओं के बंधन में इतना जकड़ दिया जाता है कि पितृगृह में स्नेह

से पल रही लड़की घुटन का अनुभव करने लगती है। उस समय ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण परिवार की मर्यादा नव-विवाहिता के मर्यादा पालन में है। परिवार का प्रत्येक जन उसे ही सीख देता दिखाई देता है। तब लगता है कि वैवाहिक जीवन मर्यादाओं का बन्धन मात्र है।

9. संगतकार - मंगलेश डबराल

काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1.

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था

प्रश्न 1. पद में 'अनहद' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'अनहद' का अर्थ है सीमा से परे, असीम या दिव्य लोक जहाँ स्वर्गिक आनंद की अनुभूति हो।

प्रश्न 2. अंतरे की तानों को जंगल क्यों कहा गया है?

उत्तर - अंतरे की तानों को जंगल कहा गया है क्योंकि गाते वक्त गायक अंतरे में ही उलझकर रह जाता है और स्थायी को भूल जाता है।

प्रश्न 3. 'स्थायी' का क्या अर्थ होता है?

उत्तर - स्थायी का अर्थ है किसी भी गाने की मुख्य पंक्ति या टेक, जो गीत को गाते वक्त बीच-बीच में दोहराई जाती है।

प्रश्न 4. संगतकार क्या कार्य करता है?

उत्तर- जब मुख्य गायक अपने गीत में ही डूब जाता है तब संगतकार उसे वापस मूल स्वर में ले आता है और उसे भटकने नहीं देता।

प्रश्न.5 कवि एवं कविता का नाम लिखो.

उत्तर. मंगलेश डबराल एवं संगतकार |

2.

कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज में जो एक हिचक साफ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

प्रश्न 1. संगतकार की अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की कोशिश को उसकी मनुष्यता क्यों समझा जाना चाहिए?

उत्तर क्योंकि संगतकार स्वयं को पीछे रखकर तथा गुमनाम रहकर मुख्य गायक को आगे बढ़ाने का काम कर रहा है। जितनी भी प्रशंसा होगी वह मुख्य गायक को मिलेगी और संगतकार को कोई जानेगा तक नहीं फिर भी वह अपने स्वर को नीचा रखता है।

प्रश्न 2. संगतकार मुख्य गायक का साथ क्यों देता है?

उत्तर- संगतकार मुख्य गायक को भटकने से बचाने के लिए तथा उसका उत्साह बढ़ाने के लिए उसका साथ देता है।

प्रश्न 3. कविता की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर भाषा सरल खड़ी बोली हिंदी है।

प्रश्न 4. 'संगतकार' कविता के आधर पर स्पष्ट कीजिए कि संगतकार जैसे व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होकर भी समाज में अग्रिम न आकर प्रायः पीछे ही क्यों रहते हैं?

उत्तर 'संगतकार' प्रवृत्ति के लोग छल-प्रपंच से दूर होते हैं। वे मुख्य कलाकार के सहयोगी होते हैं। अपने प्रति विश्वास को खत्म नहीं करना चाहते है। दूसरे की विशेषताओं को तराशने और सुधरने में लगे रहते हैं और इसे ही अपना कर्तव्य समझते हैं।

प्रश्न 5. संगतकार की आवाज में एक हिचक क्यों सुनाई देती है?

उत्तर - संगतकार की आवाज में एक हिचक साफ सुनाई देती है क्योंकि वह जान बूझकर अपनी आवाज को मुख्य गायक से ऊपर नहीं उठने देता। क्योंकि उसका कर्तव्य मुख्य कलाकार को सहारा प्रदान करना है, अपनी कला का प्रदर्शन करना नहीं।

लघूत्तरीय प्रश्न -

प्रश्न 1. संगतकार के माध्यम से कवि किन प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर - संगतकार के माध्यम से कवि सहायक कलाकारों के महत्त्व की ओर संकेत कर रहा है। ये सहायक कलाकार खुद को पीछे रखकर मुख्य कलाकार को आगे बढ़ने में योगदान देते है। यह बात जीवन के हर क्षेत्र में लागू होती है।

प्रश्न 2. सफलता के चरम-शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है, तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?

उत्तर - सफलता के चरम-शिखर पर पहुँचने के दौरान लड़खड़ाते व्यक्ति को उसके सहयोगी विषम परिस्थितियों में उसके साथ रहने का विश्वास देकर उसका आत्मबल बनाए रखने का भरसक प्रयास करते हैं। स्वयं आगे आकर सुरक्षा-कवच बनकर उसके पौरुष की प्रशंसा करते हैं। उसके लड़खड़ाने का कारण ढूँढ़ते हैं और उन कारणों का समाधान करने के लिए सहयोगी अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं। आत्मीयता से पूर्णरुपेण सहयोग करते हैं।

प्रश्न 3. 'संगतकार' कविता में कवि क्या सन्देश देना चाहते हैं?

उत्तर - कवि की संगतकार के प्रति सहानुभूति है। उसकी दृष्टि में संगतकार मुख्य गायक के समान ही सराहनीय है। मुख्य-गायक की सफलता में संगतकार का श्रेय कम करके नहीं देखना चाहिए। यद्यपि मुख्य गायक के बिना संगतकार का अस्तित्व नहीं है। किन्तु मुख्य गायक की सफलता अधिकांशतः संगतकार के सफल सहयोग पर निर्भर है। मुख्य गायक के निराश होने पर, विश्वास लड़खड़ाने पर, स्वर बिगड़ने पर, उसके तारसप्तक में चले जाने पर संगतकार ही उसे संभालता है। संगतकार के बिना मुख्य-गायक की सफलता संदिग्ध् रहती है। अतः मुख्य गायक की सफलता में दोनों ही समान रूप से सम्माननीय और प्रशंसनीय हैं।

प्रश्न 4. संगतकार किन - किन परिस्थितियों में स्थायी को सँभालता है ?

उत्तर- जब मुख्य गायक या गायिका इसी अंतरे को गाते समय अपने स्वर को बहुत ऊँचा स्वर में गाते हैं , तब संगतकार उनके स्वर को सँभालेने के लिए स्थायी का स्वर पकड कर रखता है ।

पूरक पुस्तक (कृतिका से)

माता का आँचल- शिवपूजन सहाय

प्रश्न- 1:- माँ के प्रति अधिक लगाव न होते हुए भी विपत्ति के समय भोलानाथ माँ के आँचल में ही प्रेम और शांति पाता, इसका आप क्या कारण मानते हैं?

उत्तर:- यह बात सच है कि बच्चे (लेखक) को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन पालन ही नहीं करते थे, उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परंतु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी अत्यधिक ममता और माँ की गोद की जरूरत थी उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती है, पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी की याद आती है, बाप या नाना की नहीं। माँ का लाड़ घाव भरने वाले मरहम का काम करता है।

प्रश्न 2:- भोलानाथ और अपने साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर :- आज जमाना बदल चुका है। आज माता-पिता अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं वे उसे गली मोहल्ले में बेफिक्र खेलने घूमने की अनुमति नहीं देते। जब से निठारी जैसे कांड होने लगे हैं, तब से बच्चे भी डरे-डरे रहने लगे हैं। न तो हुल्लड़बाजी, शरारतें और तुकबंदियाँ रही हैं न ही नंग-धड़ंग घूमते रहने की आजादी। अब तो बच्चे प्लास्टिक और इलेक्ट्रोनिक्स के महंगे खिलौनों से खेलते हैं। बरसात में बच्चे बाहर रह जाएं तो माँ-बाप की जान निकल जाती है।आज न कुएँ रहे, न रहट, न खेती का शौक। इसलिए आज का युग पहले की तुलना में आधुनिक, बनावटी, रसहीन हो गया है।

प्रश्न 3:- बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर :- बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को उनके साथ रहकर, उनकी सिखाई हुई बातों में रुचि लेकर, उनके साथ खेल कर, उन्हें चूमकर, उनकी गोद में या कंधे पर बैठकर प्रकट करते हैं।

मेरे माता-पिता की बीसवीं वर्षगाँठ थी। मैंने बीस वर्ष पुराने युगल चित्र को सुन्दर से फ्रेम में सजाया और उन्हें भेंट किया उसी दिन मैं उनके लिए अपने हाथों से सब्जियों का सूप बनाकर लाई और उन्हें आदर पूर्वक दिया। माता-पिता मेरा वह प्रेम देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

प्रश्न 4:- आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर :- घर में माँ के लाख मना करने पर भी सिर में कड़वा तेल लगाकर ही छोड़ती है। माथे पर काजल की बिंदी लगाकर फूलदार लट्टू बाँधकर। कुर्ता-टोपी पहना देती है। इस प्रकार माँ के हठ से तंग आकर बच्चे सिसकने लगते। पर बाहर आकर जब बालकों का झुंड मिल जाता था। वह साथियों की हुल्लड़बाजी, शरारतें और मस्ती देखकर सब कुछ भूल जाता था। हमारे विचार से वह खेलने का अवसर पाकर सिसकना भूल जाता था।

प्रश्न 5:- 'माता का आँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

उत्तर :- इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई, वह 1930 के आसपास की है, तब बच्चे घर के सामान से, साधारण सी चीजों से खेलने का काम चला लेते थे। वे प्रकृति की गोद में रह कर खुश थे। आज हमारी दुनिया पूरी तरह से भिन्न है। हमें ढेर सारी चीजें चाहिए। खेल सामग्री में भी बदलाव आ गया है। खाने-पीने की चीजों में भी काफी बदलाव आया है। हमारी दुनिया टी.वी., कोल्डड्रिंग, पीजा, चॉकलेट के इर्द-गिर्द घूमती है।

जॉर्ज पंचम की नाक - कमलेश्वर

प्रश्न 1:- सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है?

(अथवा)

जॉर्ज पंचम की नाक को लेकर सरकारी सरकारी क्षेत्र की बदहवासी किस मानसिकता की द्योतक है?

उत्तर:- सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता और बदहवासी दिखाई देती है, उससे उनकी गुलाम मानसिकता का बोध होता है। इससे पता चलता है कि वे आजाद होकर भी अंग्रेजों के गुलाम है। उन्हें अपने उस अतिथि की नाक बहुत मूल्यवान प्रतीत होती है जिसने भारत को गुलाम बनाया और अपमानित किया। वे नहीं चाहते कि वे जॉर्ज पंचम जैसे लोगों के कारनामों को उजागर करके अपनी नाराजगी प्रकट करें, वे उन्हें अब भी सम्मान देकर गुलामी पर मोहर लगाए रखना चाहते हैं।

इस पाठ में "अतिथि देवो भव" की परम्परा पर भी प्रश्न चिह्न लगाया गया है। लेखक कहना चाहता है कि अतिथि का सम्मान करना ठीक है, किन्तु वह अपने सम्मान की कीमत पर नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 2:-रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस-किस तरह तर्क-संगत ठहराएँगे?

उत्तर:- रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी यह थी कि रानी भारत, पाकिस्तान और नेपाल के शाही दौरे पर कौन-सी वेशभूषा धारण करेंगी। उसे लगता था कि रानी की आन-बान-शान भी बनी रहनी चाहिए और उसकी वेशभूषा विभिन्न देशों के अनुकूल भी हो। दरजी की परेशानी जरूरत से अधिक है किसी देश में घूमते वक्त अपने कपड़ों पर आवश्यकता से अधिक ध्यान देना, चकाचौंध पैदा करना आवश्यक है, परंतु यदि रानी अपने कपड़ों को लेकर परेशान है तो दर्जी बेचारा क्या करे? उसे तो रानी की शान और वातावरण के अनुकूल वेशभूषा तैयार करनी ही पड़ेगी।

प्रश्न 3:- "और देखते ही देखते नई दिल्ली का कायापलट होने लगा"- नई दिल्ली की कायापलट के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए होंगे?

उत्तर:- नई दिल्ली के कायापलट के लिए सबसे पहले गंदगी के ढेरों को हटाया गया होगा। सडक़ों, सरकारी इमारतों और पर्यटन स्थलों को रंगा पोता और सजाया संवारा गया होगा। उन पर बिजलियों का प्रकाश किया गया होगा। सदा से बंद पड़े फव्वारे चलाए गए होंगे। भीड़भाड़ वाली जगह पर ट्रैफिक पुलिस का विशेष प्रबंध किया गया होगा।

प्रश्न 4:- लेखक ने ऐसा क्यों कहा कि "नई दिल्ली में सब था,......सिर्फ नाक नहीं थी।"

उत्तर:- 'नाक' मान-सम्मान और आत्म-गौरव का प्रतीक है। दिल्ली में सब कुछ था किंतु नाक नहीं थी, इसका सामान्य अर्थ है कि जॉर्ज की लाट में नाक नहीं थी, किंतु इसका व्यंग्यात्मक अर्थ यह है कि दिल्ली में गुलामों की कमी नहीं थी। नाक नहीं थी अर्थात् गुलामी के कारण सरकारी तंत्र की इज्जत नहीं थी। उनकी गुलामी की मानसिकता प्रकाशित हो रही थी। उन्हें चिंता आत्मसम्मान की नहीं थी। उन्हें तो गुलामी कायम रखने की चिंता सता रही थी।

प्रश्न 5:- जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है?

उत्तर:- नाक की चर्चा द्वारा लेखक ने भारतीयों की गरिमा का परिचय दिया है। नाक मान-सम्मान और स्वाभिमान का प्रतीक है। इसके द्वारा लेखक यह संकेत देना चाहता है कि भारतीय नेताओं की बात कौन कहे, बच्चों की नाक भी जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली। अर्थात् भारतीय बच्चों का मान-सम्मान उनकी प्रतिष्ठा भी चॉर्ज पंचम से अधिक है। जॉर्ज की नाक सबसे छोटी निकली, कहने का अर्थ यह है कि जॉर्ज का कोई महत्त्व नहीं है, उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं।

प्रश्न 8:- जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे?

उत्तर :- उस दिन सभी अखबार वाले इसलिए चुप थे क्योंकि भारत में न तो कहीं कोई अभिनंदन कार्यक्रम हुआ, न सम्मान पत्र भेंट किए गए, न ही नेताओं ने उद्घाटन किया, न कोई फीता काटा गया, न सार्वजनिक सभा हुई, इसलिए अखबारों को चुप रहना पड़ा। यहाँ तक कि हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत समारोह भी नहीं हुआ, इसलिए किसी स्वागत समारोह का कोई समाचार, और चित्र अखबारों में नहीं छपा था।

साना साना हाथ जोड़ि-मधु कांकरिया

प्रश्न 1- गन्तोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?

उत्तर- 'मेहनतकश का अर्थ है-कड़ी मेहनत करने वाले। 'बादशाह' का अर्थ है-मन की मर्जी के मालिक। गंतोक एक पर्वतीय स्थल है। पर्वतीय क्षेत्र होने के नाते यहां स्थितियां बड़ी कठिन है। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोगों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहां के लोग इस मेहनत से घबराते नहीं और ऐसी कठिनाइयों के बीच भी मस्त रहते हैं। इसलिए गन्तोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया।

प्रश्न 2- जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहां की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में क्या महत्वपूर्ण जानकारी दी, लिखिए ।

उत्तर- जितेन नार्गे उस वाहन (जीप) का गाइड-कम-ड्राइवर था, जिसके द्वारा लेखिका सिक्किम की यात्रा कर रही थी। जितेन एक समझदार और मानवीय संवेदना से युक्त व्यक्ति था। उसने लेखिका को सिक्किम की प्राकृतिक व भौगोलिक स्थिति तथा जन जीवन के विषय में अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां दी। उसने बताया कि सिक्किम बहुत ही खूबसूरत प्रदेश है और गन्तोक से युमथांग की 149 किलोमीटर की यात्रा में हिमालय की गहनतम घाटियां और फूलों से लदी वादियां देखने को मिलती हैं। सिक्किम प्रदेश चीन की सीमा से सटा है ।

पहले यहां राजशाही थी । अब यह भारत का एक अंग है । सिक्किम के लोग अधिकतर बौद्ध - धर्म को मानते हैं और यदि किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शांति के लिए एक सौ आठ पताकाएं फहराई जाती हैं । यहां के लोग बड़े मेहनती हैं । इसलिए गन्तोक को 'मेहनतकश बादशाहों का नगर' कहा जाता है और यहां की स्त्रियां भी कठोर परिश्रम करती हैं । वे अपनी पीठ पर बंधी डोको (बड़ी टोकरी) में कई बार अपने बच्चे को भी साथ रखती है । यहां की स्त्रियां चटक रंग कपड़े पहनना पसंद करती है और उनका परम्परागत परिधान 'बोकू' है ।

प्रश्न 3- "कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं " इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?

उत्तर- लेखिका ने देखा कि आदिवासी औरतें पहाड़ों के बीच सड़कें चौड़ी करने हेतु अत्यंत दुसाध्य कार्य, पत्थर तोड़ रही है । जरा- सी चूक होने पर उनकी जान भी जा सकती है । लेखिका ने ऐसा दृश्य देखकर यह विचार

प्रकट किया कि ये आदिवासी औरतें कितना कम लेकर कितना अधिक वापिस लौटा देती है । इतना जोखिम भरा काम और उनका पारिश्रमिक इतना कम । यह बात आम जनता पर भी लागू होती है। हमारेमजदूर , किसान , जो खेतों में काम कर अन्न पैदा करते है , मजदूर, सड़कें,पुल , इत्यादि बनाने काकठिन कार्य करते हैं , उसके बदले उन्हें उनकी मजदूरी भी पूरी नहीं दी जाती । यदि पहाड़ों में ये लोग अपना कार्य करना बंद कर दें तो पर्यटन विभाग ठप्प हो जाएगा । इस प्रकार हमारे देश की आम जनता अपने जीवन की विवशताओं के कारण इतना कम लेकर बहुत कुछ वापस दे देते हैं ।

प्रश्न 4 - आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए?

उत्तर - आज की पीढ़ी पहाड़ी स्थलों में अपना विहार स्थल बना रही है । वहां भोग के नए-नए साधन पैदा किए जा रहे हैं। इसलिए जहां एक ओर गन्दगी बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर तापमान में वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप पर्वत अपनी स्वाभाविक सुंदरता खो रहे हैं । इसे रोकने में हमे सचेत होना चाहिए । हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे पहाड़ों का प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो, गन्दगी फैले और तापमान में वृद्धि हो।

प्रश्न 5 - लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर - सिक्किम में एक जगह का नाम है - 'कवी-लोंग स्टाक' । कहा जाता है कि यहाँ गाइड फिल्म की शूटिंग हुई थी । वहीं एक घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्मचक्र है । इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं । जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है । इस स्थिति को देखकर लेखिका को लगता है कि धार्मिक आस्थाओं, पाप-पुण्य और अंधविश्वासों के बारे में सारे भारत में एक जैसी मान्यताएँ है ।

प्रश्न 6 - कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उत्तर - यहाँ पहाड़ी रास्तों पर कतार में लगी श्वेत (सफेद) पताकाएँ दिखाई देती हैं । ये सफेद पताकाएँ शांति और अहिंसा की प्रतीक है । इस पर मंत्र लिखे होते हैं । ऐसी मान्यता है कि श्वेत पताकाएँ किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर फहराई जाती हैं उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से बाहर किसी पवित्र स्थान पर 108 श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती है, जिन्हें उतारा नहीं जाता । वे धीरे-धीरे स्वयं नष्ट हो जाती हैं । किसी शुभ कार्य को आरम्भ करने पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं ।

निबंध

निबंध का अर्थ - सम्यक रूप से बंधा हुआ या कसा हुआ| निबंध में भाव या विचार पूर्णतया एक सूत्र में बंधे हुए रहते हैं| निबंध एक बैठक में सरलता से पढ़ा जा सकता है| इसमें कहानी की तरह विषय की किसी एक पक्ष का निरूपण होता है| कहानी की भाँति निबंध में भी पूर्णता होती है |

निबंध का गठन-

निबंध लिखने से पूर्व उसकी रुपरेखा निर्धारित करना आवश्यक है | इसके तीन अंग होते हैं:

1- प्रस्तावना (प्रारम्भ) 2- विषय-प्रतिपादन 3- उपसंहार

1प्रस्तावना- प्रस्तावना में निबंध लेखक पाठक का विषय से परिचय करता है| अतः प्रस्तावना अत्यंत आकर्षक,सारगर्भित और प्रभावपूर्ण होनी चाहिए| प्रस्तावना का अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए |

2विषय-प्रतिपादन-विषय का सम्यक प्रतिपादन करने के लिए विषय को विचार को क्रमिक इकाइयों में विभाजित करते हैं| इन विचार-बिन्दुओं को श्रृंखलाबद्ध तथा तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए|

3 उपसंहार- उपसंहार निबंध की चरमावस्था का द्योतक है | उपसंहार इतना प्रभावी होना चाहिए कि पाठक के मन पर अपनी छाप छोड़ सके |

निबंध लेखन

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा हैं – "गद्य यदि लेखकों की कसौटी हैं तो गद्य की कसौटी हैं निबंध। " निबंध से ही भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास संभव हैं। एक अच्छे निबंध के गुण हैं :

1) कसावट, 2) विषयानुकूलता, 3) प्रभावशाली भाषा।

निबंध के प्रकार: सामान्यतः तीन प्रकार हैं: 1) विवरणात्मक, 2) विचारात्मक, 3) भावात्मक

रचना की दृष्टि से निबंध के तीन अंग होते हैं: 1) भूमिका, 2) विषय-वस्तु, 3) उपसंहार

भूमिका : निबंध की भूमिका रोचक,आकर्षक, विषय-वस्तु को स्पष्ट करनेवाली तथा संक्षिप्त होनी चाहिए।

विषय-वस्तु : इसमें विषयसारिणी को क्रमबद्ध अनुच्छेदों में व्यक्त किया जाता हैं। इस में भावों,विचारों का क्रम बना रहना चाहिए। विषय विवेचन सरल,शुद्ध और सधी हुई भाषा में होना चाहिए।

उपसंहार : इस में लेखक अपना मत प्रस्तुत करता हैं जो कि पाठकों पर अपनी छाप छोड़ सके।

……

1) साइबर अपराध का आतंक

संकेत बिन्दु: हैकिंग में मददगार उपलब्ध कराने वाली अनेक वेबसाइटे , साइबर अपराधों से होनेवाला नुकसान, इंटरनेट की असुरक्षा , साइबर अपराधियों की पहचान , उन्हे कड़ा दंड देने की व्यवस्था

भूमिका:- सूचना क्रांति ने पूरे विश्व को बादल दिया हैं। सारी दुनिया इंटरनेट के जरिए ऐसे जुड़ी हैं , जैसे एक ही परिवार के सदस्य हों। जहां इंटरनेट ने हमें अनेक सुविधाए दी हैं, वहीं "साइबर अपराध

“का आतंक भी दिया हैं। जैसे-जैसे इसका प्रसार बढ़ रहा हैं उसी तीव्रता से साइबर अपराध का खतरा भी बढ़ रहा हैं। साइबर अपराधी संगणक वाइरस के माध्यम से इंटरनेट से जुड़े हुए संगणकोसे संचित सूचनाएँ, आंकड़े, प्रोग्राम को खत्म कर देते हैं। इस प्रकार से देशों और नस्लों की पारस्परिक दुश्मनी निकाली जाने लगी हैं। कोई पाकिस्तानी हैकर भारतीय वैबसाइटों को हैक कर देता है तो कोई चीनी हैकर अमरीकी वैबसाइटों पर डांका डाल रहे हैं।

विषय-वस्तु : साइबर अपराध के क्षेत्र में किए गए परीक्षण से पता चलता हैं कि हैकिंग की अधिकतर घटनाएँ पूर्व कर्मचारियों के सहयोग से ही होती हैं। लगभग अस्सी प्रतिशत बातों में पूर्व कर्मचारियों का हाथ था, वे इन हैकरों को कंपनी के “आँकड़ा कोश” तक पहुँचा देते हैं और इसके बाद पासवर्ड, क्रेडिट कार्ड नंबर आदि चुरा कर उन्हे खत्म कर देते हैं। कुछ ऐसी वेबसाइट्स हैं जो डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराती हैं जो हैकिंग में मददगार होती हैं। इनकी सहायता से दूसरे संगणकों कों जाम किया जाता हैं या नियंत्रण में लिया जाता हैं।

साइबर अपराधों से करोड़ों डॉलर का नुकसान होता हैं, अपराधी ई-मेल सिस्टम को जाम करते हैं, मोबाइल टेलीफोन कंपनियों के संगणकों में घुसपैठ कर वहाँ से कॉलिंग कार्ड चुरा कर लाखों का नुकसान पहुँचाते हैं कुछ वर्ष पूर्व अमेरिका में साइबर अपराधियों ने “मेलिसा” नामक वाइरस इंटरनेट पर फैला कर ई-मेल कम्पनियों को आठ करोड़ डॉलर का नुकसान दिया था। जानकार कहते हैं कि ब्रॉडबैंड के बढ़ते प्रचलन से साइबर अपराधी अपनी मर्जी से जब चाहें तब किसी भी संगणक तक पहुँच सकेंगे।

इस से समाज के सभी वर्ग के लोग चिंतित हैं, व्यापारी आज इंटरनेट से ही पूरी दुनिया से जुड़े हैं, इंटरनेट की इस असुरक्षा ने उनकी नींद हराम कर दी हैं। कई कंपनियों का मानना हैं कि उनके संगणकों के प्रयोग के बिना उनकी जानकारी अपराधियों ने प्राप्त की हैं। सरकारी विभागोंकी गोपनीय सूचनाएँ भी अब इन अपराधियों के पास हैं। इस अपराध को रोकने के लिए कई देशों को संधि करने पर विवश होना पड़ा हैं। यूरोपीय परिषद की एक समिति ने एक संधि मसौदे पर हस्ताक्षर किए हैं, जिस का उद्देशय साइबर अपराधों की रोकथाम करना हैं। इसके तहत इंटरनेट पर अधिक प्रभावी व्यवस्था करने, सुरक्षा उपाय बढ़ाने और साइबर अपराधियों की पहचान कर उन्हे कडा दंड देने की व्यवस्था की गयी हैं।

वर्ष 2000 में संसद में आई॰ टी॰ बिल 2000 के नाम से विधेयक लाकर एक नया कानून बनाया गया हैं। इसमें सूचना तकनीकी के क्षेत्र में गतिविधियों , अंतर्राष्ट्रीय व्यापार , आई॰टी॰ उपकरणों के आयात-निर्यात, बुनियादी ढ़ाचे के विकास और साइबर अपराध रोकने के उपाय के लिए विस्तृत प्रावधान किए गए हैं। यह कानून साइबर अपराध के मामले में अदालत और पुलिस को एक ठोस कानूनी ढाँचा देता हैं। कोई भी नेटवर्क में वाइरस नहीं डाल सकेगा।

आईबी साइबर अपराधों की नकेल कसने के लिए भारत समेत नौ एशियाई देशों ने वर्ष 2000 में एक सहयोग समझोता किया कि यह देश ऑनलाइन नेटवर्किंग शुरू करेंगे। इन अपराधों की रोकथाम के लिए विश्व के सभी देशों के बीच सहयोग की आवश्यकता हैं।

उपसंहार : इसी तरह, यदि दुनिया के अन्य देश भी सुरक्षा उपायों को मजबूत करें तथा नई तकनीकी का विकास करे तो इन अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सकता हैं। इसे रोकने में इंटरपोल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं।

2) बेरोजगारी की समस्या

संकेत बिन्दु : 1) बेरोजगारी की भयावह स्थिति, 2) बेरोजगारी के कारण, 3) निवारण

भूमिका : प्रत्येक देश की आर्थिक व्यवस्था का एक ही प्रमुख उद्देश्य होता हैं कि उस देश का प्रत्येक नागरिक अपनी आवश्यक्ताओं की पूर्ति करते हुए देश की परिस्थितियों के अनुसार रहन्सहन का न्यूनतम स्तर प्राप्त कर सके। इसके लिए रोजगार पाना प्रथम आवश्यकता हैं। यदि किसी को काम करना है और उसे कोई योग्य कार्य नहीं मिले, तो देश को आर्थिक हानि उठानी पड़ती हैं। यदि देश मांग के अनुसार रोजगार न पैदा कर सके तब तो भयावह स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं।

विषय-वस्तु : भारत में बेरोजगारी की समस्या गंभीर रूपधारण कर चुकी हैं। भारत की आबादी सवा सौ करोड़ से भी अधिक हैं। यहाँ प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन हैं, 4 * 8कमी हैं-संसाधनों के उपयोग की समुचित नीति की। हमारे यहाँ छिपी हुई बेरोजगारी हैं। कृषि क्षेत्र से अतिरिक्त व्यक्ति के हटा देने से कृषि क्षेत्र के उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

बेरोजगारी से आर्थिक नुकसान के साथ समाज में अव्यवस्था भी फैलती हैं। आए दिन अपहरण, फिरौती, लूटपाट की घटनाएँ अखबारों में छाई रहती हैं। इस से समाज में असुरक्षा की भावना घर कर जाती हैं। बेरोजगार युवक को समाज घृणा की नजर से देखता हैं, परिवार के लोग भी उसे घृणा की नजर से ही देखते हैं।

बेरोजगारी के अनेक कारण हैं, जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण की धीमी गति, दोषपूर्ण प्रणाली, नेताओं की गलत नीतियाँ। जनसंख्या के मामले में हम विश्व में दूसरे पायदान पर हैं। किसी जनसंख्या का आकार, संरचना और उसकी सामाजिक व सांस्कृतिक विशेषताएँ आर्थिक विकास की गति के मूल नियामक तत्व हैं। बड़े परिवारों के कारण बचत कम होती हैं, निवेश कम होता हैं तथा रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं।

सरकार की गलत नीतियाँ भी इसके लिए ज़िम्मेवार हैं, सरकार के अधिकतर निर्णय अदूरदर्शितापूर्ण होते हैं। वर्ष 1962 के चीन आक्रमण के बाद सरकार ने बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग कॉलेज खोले। युवा पढ़ - लिख लिए, पर रोजगार उपलब्ध नहीं हो सका। आज भी सरकार बिना सोचे-समझे तकनीकी संस्थाओं व विश्वविद्यालय खोलती जा रही हैं, पर योग्य रोजगार देने में असमर्थ हैं। बेरोजगारी का एक मुख्य कारण यह भी हैं - सरकारी नौकरियों के प्रति अधिक आकर्षण। युवक अपना रोजगार करने की अपेक्षा सरकारी नौकरियों में जाना चाहते हैं, वहाँ उन्हे अच्छी आमदनी मिलने की उम्मीद हैं।

उपसंहार : बेरोजगारी के कारण चाहे कुछ भी हो, आज जरूरत हैं उसके समाधान की। योजना आयोग व सरकारने इसे गंभीरता से लिया हैं तथा अनेक योजनाएँ प्रारम्भ की हैं। सरकार कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दे रही हैं, ताकि अधिक संख्या में लोगों को काम मिल सके। इसके लिए सस्ती दर पर पूंजी

देना का प्रयास किया जा रहा हैं। इसके अतिरिक्त उद्योगों की स्थापना ,परिवार नियोजन जैसे प्रयासों से भी इस गंभीर समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता हैं।

कंप्यूटर : आज के युग की ज़रूरत

संकेत बिंदु :

- भूमिका
- मानव मस्तिष्क से भी तेज़
- अनेक विस्मयकारी सुविधाएँ
- इंटरनेट
- इसका ज्ञान आज की आवश्यकता

प्रस्तावना-

आज के युग को विज्ञान का युग माना जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, क्योंकि आज विश्व विज्ञान दृढ स्तम्भ पर टिका है| विज्ञान ने मानव को अनेक प्रकार की शक्तियां,सुख-सुविधाएँ तथा क्रांतिकारी उपकरण दिए हैं, जिनके कारण काल और स्थान की दूरियाँ मिट गई हैं| विज्ञान के अनेक विस्मयकारी तथा महत्त्वपूर्ण उपकरणों में कंप्यूटर का विशेष स्थान है|

विषय-वस्तु-

•मानव मस्तिष्क से भी तेज़

कंप्यूटर की तुलना यदि मानव मस्तिष्क से की जाए तो गलत नहीं होगा | इसकी उपयोगिता को देखते हुए आज देश के लगभग हर विद्यालय में इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है| यह एक ऐसी मशीन है जो कठिन से कठिन जोड़,बाकी,गुना, भाग आदि को अत्यंत शीघ्रता से तथा शत-प्रतिशत शुद्धता से करने में समर्थ है तथा स्थान-स्थान पर इसके प्रशिक्षण की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं| यह प्रशिक्षण दो प्रकार का होता है- हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर |

•अनेक विस्मयकारी सुविधाएँ-

आजकल कम्प्यूटरों का प्रयोग बैंकों, रेलवे स्टेशनों, विद्यालयों तथा कार्यालयों आदि में बड़े पैमाने पर किया जा रहा है| रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों पर आरक्षण के लिए कम्प्यूटरों का प्रयोग किया जाता है| चिकित्सा के क्षेत्र में कंम्प्यूटर के प्रयोग से रोगी की चिकित्सा करने में बहुत मदद मिलती है| बड़े-बड़े कारखानों में मशीनों को चलने में कंप्यूटर अत्यंत उपयोगी है |

•इंटरनेट-

आजकल कंप्यूटर पर इंटरनेट सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं, जिनके द्वारा विश्व के किसी भी कोने में कुछ ही क्षणों में समाचारों तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान संभव हो गया है| आजकल के युद्ध कंप्यूटर के सहारे जीते जाते हैं |

•इसका ज्ञान आज की आवश्यकता -

शिक्षा के क्षेत्र में भी कंप्यूटर की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है | अनेक विषयों की पढाई कंप्यूटर के द्वारा की जा सकती है | इस प्रकार कंप्यूटर ज्ञान-विज्ञानं का एन्साइक्लोपीडिया बन गया है| आज का कंप्यूटर मानव के लिए कल्पतरु और कामधेनु के समान बन गया है क्योंकि मानव मस्तिष्क का काम कंम्प्यूटर करने लगा है | लगभग हर क्षेत्र में इसका उपयोग किया जा रहा है | आप अपना व्यवसाय करें या नौकरी आपको इसका ज्ञान होना आवश्यक है अन्यथा आप अपने व्यवसाय में दूसरों से पीछे रह जाएँगे और नौकरी पाने वालों को नौकरी मिलने में समस्या होगी, इसलिए इसका ज्ञान आज के समय में आती आवश्यक है | अनेक क्षेत्रों में मनुष्य के मस्तिष्क को मात देने वाले कंप्यूटर का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है|

दस संभावित निबंधों के विषय तथा उनके लेखन के संकेत बिन्दु

1)**शिक्षा का गिरता स्तर** :

* शिक्षा का अर्थ,
* वर्तमान शिक्षा,
* बौद्धिक श्रम को महत्व,
* दोषी कौन?

2)**भारत पाक संबंध**:

* भारत पाक के जटिल संबंध,*पाकिस्तान का इतिहास
* पाकिस्तान की भारत विरुद्ध नीति
* पाकिस्तान के षड्यंत्र
* भारत का शांति प्रयास

3)**मोबाइल फोन : कितना सुखद** ? :

* **मोबाइल फोन**- एक सुविधा या संपत्ति,
* संपर्क का सस्ता और सुलभ साधन,
* विपत्तियाँ - अनचाहा खलल डालने का साधन,
* अपराधियों के लिए वरदान,
* निष्कर्ष

4)**इंटरनेट -सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति**:

* प्रस्तावना
* आरंभ
* इंटरनेट के मुख्य भाग
* लाभ , उपयोग , हानि
* उपसंहार

5)**देश की राजनीति में महिलाओं की सहभागिता** :

* अंधविश्वास और अज्ञान से मुक्ति पा चुकी नारी,
* अपने दायित्व का निर्वाह करने में सक्षम नारी,
* राजनीति में पुरुष और नारी की समान भागीदारी पर विचार।
* महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता समय की मांग

6)**ऊर्जा की बढ़ती मांग** : **समस्या और समाधान :**

* नए स्त्रोतों की आवश्यकता,
* ऊर्जा के पारंपारिक स्त्रोतों का समाप्त होना एक भयावह बात,
* हमारी ऊर्जा पर निर्भरता

7)**युवाओं में भटकाव :कारण और निवारण**:

- * दिन ब दिन भटकता युवा वर्ग,
- * सामाजिक, आर्थिक व नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन,
- * बेरोजगारी, युवाओं में भरी निराशा , कुंठा
- * युवाओं में सृजनात्मकता व रचनात्मकता का ह्रास ,
- * युवा वर्ग ही देश के भावी कर्णधार ।

8)**अन्तरिक्ष अनुसंधान और हम**:

- * अन्तरिक्ष में भारतीय उपग्रह,*चंद्रमा की यात्रा,
- * भारत का मंगल अभियान,
- * नासा में भारतियों की सहभागिता,
- * उपसंहार

9)**मनोरंजन का महत्व** :

- * प्रस्तावना,
- * विविध प्रकार,
- * स्वस्थ मनोरंजन ही वास्तविक,
- * समयावधि और महत्व,
- * उपसंहार ।

10)**ग्राम्य जीवन**:

- * भूमिका,
- * गाँव का जीवन,
- * प्रकृति से सहचर्य,*वर्तमान गाँव प्रगति की ओर,
- * उपसंहार

पत्र-लेखन

पत्र लेखन एक महत्वपूर्ण कला हैं। इसका व्यावहारिक पक्ष अत्यंत सबल हैं। यह कला जन-सामान्य के जन-जीवन से सुसंबंधित हैं।

पत्रों के दो प्रकार हैं 1)औपचारिक पत्र - प्रार्थना पत्र, आवेदन पत्र, शिकायती पत्र आदि।

2)अनौपचारिक पत्र - बधाई पत्र, शुभकामना पत्र, धन्यवाद पत्र ।

औपचारिक पत्र

1)किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए,जिसमें सामान्य नागरिक की कठिनाइयों का वर्णन किया गया हों।

सेवा में, दिनांक :-

श्रीमान संपादक महोदय,
नवभारत टाइम्स ,
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग,
दिल्ली ।

विषय: सामान्य नागरिक की कठिनाइयों से अवगत करना।

मान्यवर,

मै श्री॰अ॰ब॰स, आप के लोकप्रिय समाचार पत्र के माध्यम से संबन्धित अधिकारियों और सरकार का ध्यान सामान्य नागरिकों की कठिनाइयों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

मैं दिल्ली के बापा नगर का निवासी हूँ। हमारी यह कॉलोनी नई बनी है। नए फ्लैटों मैं अधिकतर परिवार आ गए हैं, लेकिन सुविधाएं नाम-मात्र की भी नहीं हैं। यहाँ कोई पार्क नहीं हैं, सड़कें टूटी-फूटी हैं। नालियों में गंदा पानी भरा रहता हैं। चारों तरफ गंदगी के ढ़ेर पड़े हुए हैं। मच्छर, माखियाँ, चूहे तो भरे पड़े हैं। यहाँ आने के लिए नागरिक बहुत प्रसन्न थे, लेकिन जब से यहाँ आए हैं, चारों ओर परेशानियाँ ही है। पीने के लिए स्वच्छ जल की आपूर्ति नहीं हैं। बिजली भी बार-बार चली जाती हैं। लोगों को लगता हैं कि वे नरक में निवास करते हैं। मैं इस संबंध में सरकार तथा उसके अधिकारियों से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि वे इस दिशा में उचित कदम उठाएँ ताकि लोग चैन से रह सके।

आशा हैं कि आप मेरे विचारों को अपने प्रसिद्ध समाचार-पत्र में प्रकाशित कर के अनुगृहीत करेंगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय,
अ॰ब॰स॰
5/4, बापा नगर, नई दिल्ली।

……

पत्र **2)** गत कुछ दिनों से आप के क्षेत्र में अपराध बढ़ने लगे हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए ।

सेवा में, दिनांक :-
थानाध्यक्ष महोदय,
गांधी नगर,
नई दिल्ली।

विषय:अपराधों की रोकथाम के लिए पत्र।

महोदय,

मै, श्री॰कृष्ण गोपाल, गांधी नगर का निवासी, अत्यंत खेद के साथ लिख रहा हूँ कि हमारी कॉलोनी, जिसकी शांति प्रियता पर हम सबको नाज़ था, आजकल अपराधियों का बोलबाला हैं। महिलाएँ तो घर से बाहर निकालने में कतराती हैं। अभी कुछ ही दिन पहले एक महिला के गले से बदमाश ने चेन झपट ली, एक लड़की का पर्स छीन लिया। राह चलती लड़कियों को छेड़ना तो आम बात हो गयी हैं। परसों ही एक आभूषण की दुकान को लूट लिया गया, जब बदमाशों का मुक़ाबला करने की कोशिश की गयी तो सरे आम बीच बाजार में गोली मार कर उनकी हत्या कर दी गयी। इसी कारण हर व्यक्ति अपनी तथा अपने परिवार की सुरक्षा को लेकर चिन्तित हैं।

अत: आप से विनम्र निवेदन है कि हमारी कॉलोनी में उचित सुरक्षा का प्रबंध करके पुलिस की गश्त बढ़ाए और तेजी से बढ़ते हुए अपराधों की रोकथाम करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,
श्री॰कृष्ण गोपाल॰
5/4 ,गांधी नगर,
नई दिल्ली।

अनौपचारिक पत्र

पत्र 1) अपने बड़े भाई को पत्र लिखिए, जिसमें उनके द्वारा दी गईं सीख पर आचरण करने का आश्वासन दिया गया हो।

परीक्षा भवन,
नई मुंबई ।
दिनांक : -

पूज्य भाई साहब,

सादर नमस्कार,

आप का स्नेह भरा पत्र मिला। आपने और भाभीजी ने मेरा आत्मबल बढ़ाते हुए छात्रावास में रहते हुए ध्यानपूर्वक पढ़ने, अध्यापकों के प्रति श्रद्धा, सहपाठियों से मधुर व्यवहार तथा बड़ों का आदर करने की सीख दी हैं। पत्र पढ़कर आप दोनों के प्रति मेरे दिल में श्रद्धा और आदर के भाव और अधिक बढ़ गए हैं। माता-पिता के बाद आप ही दोनों मेरे माता-पिता हैं।

भाईसाहब, जिन आकांक्षा और उत्साह के साथ आपने मुझे छात्रावास के लिए भेजा हैं, उसे पूर्ण करने में कोई कसर नहीं छोड़ूँगा। दिन-रात एक करके एकाग्र चित्त होकर अध्ययन करूंगा। आवश्यकतानुसार कुशाग्र-बुद्धि छात्रों से मित्रता कर, उनके बुद्धि-बल का लाभ उठाकर और पूज्य अध्यापकों के मार्ग-दर्शन से प्रथम आने का प्रयत्न करूंगा।

अत: मैं आप को विश्वास दिलाना चाहूँगा कि मेरे किसी भी कार्य से आप के मन को ठेस नहीं पहुंचेगी और मैं आपकी आकांक्षाओं पर खरा उतरूँगा। मेरी तरफ़ से भाभीजी को चरण स्पर्श और नन्हें अंकुर को ढ़ेर सारा प्यार।

आपका अनुज,
कृष्णगोपाल।

……………………………………………………………………………………………………

पत्र 2) पिता की ओर से पत्र लिखकर पुत्र को धूम्रपान छोड़ने की सलाह दीजिए।

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली ।
दिनांक : -

प्रिय पुत्र पंकज,
चिरंजीव रहों,

घर में सब कुशलपूर्वक हैं और आशा करता हूँ कि छात्रावास में तुम भी कुशलतापूर्वक होंगे और अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारियों में एकाग्रचित्त लगे होंगे।

बेटा, कल तुम्हारे सहपाठी का भाई मिला था और बातों ही बातों में धूम्रपान पर बात चली, तो उसने बताया कि आज कल तुम भी धूम्रपान करने लगे हों। पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि तुम व्यसन करने लगे हों, पर जब उसने बताया की उसने अपनी आखों से तुम्हें धूम्रपान करते देखा हैं, तो मेरा मन तुम्हारे प्रति चिन्तित हो उठा।

बेटा, धूम्रपान स्वास्थ के लिए हानिकारक हैं, जिसके सेवन से खांसी, टी॰बी, फेफड़ों की खराबी तथा कैंसर जैसे असाध्य रोग भी हो सकते हैं। जब उसका धुआं दिमाग में पहुँचता हैं, तो छात्र नशे का आदी हो जाता हैं, तब फिर शराब की लत लग जाती हैं। इस लिए तुम धूम्रपान छोड़कर आपने मन पर नियंत्रण रखो, योगाभ्यास का सहारा लों, ऐसे मित्रों से दूर रहों। शक्तिवर्धक, संतुलित आहार का सेवक करो। अगर इस के बारे में तुम्हारे छोटे भाई को पता चला तो वह भी इसका अनुकरण करेगा, तो क्या तुम्हें अच्छा लगेगा ?

आपने स्वास्थ का ध्यान रखना। मेरी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा पिता,
क॰ख॰ग॰

……………………………………………………………………………………………………

अभ्यास हेतु पाँच संभावित पत्रों के विषय।

1) अपने विद्यालय के प्राचार्य को एक पत्र लिखिए, जिस में आपके सहपाठी के साहसिक कार्य के लिए उसे सम्मानित करने का अनुरोध हो।

2) समय के सदुपयोग और परिश्रम पर बल देते हुए अपने छोटे भाई को एक प्रेरणादायक पत्र लिखे।

3) आप एक सजग नागरिक हैं, आपके क्षेत्र में पेड़ों की कटाई हो रही है, इसे रोकने के लिए जिलाधिकारी को एक पत्र लिखे।

4) किसी कंपनी के क्लर्क के रिक्त पद की पूर्ति के लिए आवेदन पत्र लिखे।

5) आप केंद्रीय विद्यालय,आर॰ के॰ पुरम,नई दिल्ली,के छात्र हैं। आप का नाम पंकज खरे हैं। आप अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु पत्र लिखिए ।

……

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन का अर्थ है सूचना का प्रचार अथवा प्रसार करना सरकार या अन्य सामाजिक संस्थाएं अपनी सूचनाओं को विज्ञापनों के माध्यम से प्रसारित करती हैं । व्यापार और उद्योक जगत , समाचार पत्र दूरदर्शन और इंटरनेट सब जगह विज्ञापनो का ह बोल - बाला हैं ।

श्रेष्ठ विज्ञापन के लक्षण

1. उसमे मूल विषय वस्तु का ही प्रचार प्रसार होना चाहिए |
2. संदेश बहुत स्पष्ट होना चाहिए |
3. भाषा संक्षिप्त और रोचक होनी चाहिए ।
4. विज्ञापन में कोई आपत्ति जनक या भटकाव की बात नहीं होनी चाहिए |
5. जिसका विज्ञापन किया जा रहा है उसका उल्लेख बार - बार होना चाहिए |

उदाहरण -1

आप एक विक्रेता है- नीम साबुन की विशेषता बताते हुए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

Organic
Neem Soap
Neem Soap

तन की दुर्गन्ध हटाए

त्वचा को स्वस्थ बनाए

खुजली से रखे कोसो दूर

तन और मन दोनों रहें सदा मस्त

तो आइए देर मत कीजिए नीम साबुन के लिए,

केवल रुपए में 10

एक साबुन के साथ एक साबुन फ्री 9850269923पर संपर्क कीजिए ।

उदाहरण 2-

आपके शहर में जल बचाओं पर कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है -इस आयोजन पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

पानी बचाओपानी है अनमोल,पानी बचाओं,
बहने मत देना पानी को जानो इसका मोल ,

कार्यक्रम का आयोजन स्थल सेवा नगर -
समय प्रात 10-:बजे

” जल बिन जीवन विकल है“

उदाहरण - 3 आपके कालोनी में एक विद्यालय खुल रहा है -इस पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए-

आदर्श विदयालय -

आपकी कालोनी सेवा नगर में खुल रहा है जहाँ पढ़ाई के साथ वे -

सारी सुविधाएँ उपलब्ध है जिससे आपका शारीरिक एवं मानसिक विकास होगा -

अनुभव की पहचान करके सीखो ज्ञान

तो देर किस बात की जल्दी कीजिए आज ही खुला है प्रवेश ।लीजिये

उदाहरण -4 "पर्यावरण बचाओ" पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

पर्यावरण से धरती
और धरती से हम,
धरती को हरित बनाए
ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाए।

काटो नहीं पहाड़ को
धरती रही पुकार
पर्यावरण कवच है
हो मेरी पुकार ।

उदाहरण - 5 आपके नगर में साइकलों की नई दुकान खुली है - गुरुप्रीत साइकल स्टोर |एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

साइकिलें ही साइकिलें
एटलस - हीरो - कैनेटिक सभी कंपनियो के नए मॉडल
- आसान किश्तों पर भी उपलब्ध
- गारंटी के साथ

- आज ही पधारें
गुरुप्रीत साइकल स्टोर
543 मुख्य बाजार , दिल्ली | दूरभाष : 09487699757

प्राय: पूछे जाने वाले प्रश्न (प्रश्न कोश)

1. नगरपालिका के क्या - क्या कार्य होते हैं ? पाठ में ऐसा क्यों कहा गया है कि नगरपालिका थी तो कुछ - न - कुछ करती भी रहती थी ?

2. सड़कों अथवा चौराहों पर नेताओं कि लगी उपेक्षित मूर्तियों को देखकर आप क्या सोचते हैं ?

3. कस्बे के इकलौते ड्राइंग मास्टर को नेताजी कि मूर्ति बनाने का कार्य क्यों सौंपा गया , यह हमारी सरकारी व्यवस्था किस कमी को दर्शाता हैं?

4. मूर्ति को देखकर हालदार साहब के चेहरे पर कौतुक भरी मुस्कान क्यों फैल गई ?

5. हालदार साहब को ऐसा क्यों लगा कि कैप्टन चश्मे वाला किसी सेना का सिपाही होगा

6. खेती बाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे ?

7. भगत कि पुत्र वधू उन्हे अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थीं ?

8. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी ?

9. लेखक को समाज का सबसे घृणित रूप किन बातों में नजर आता हैं?

10. मृत्यु के बारे में बालगोबिन भगत जी के विचार कैसे थे ?

11. नवाब साहब ने खीरे को यत्न से काटकर अन्त में सूंघकर खिड़की से बाहर क्यों फेक दिया ?

12. लेखक ने नवाब साहब के भाव परिवर्तन के कारण का अनुमान कैसे लगाया ?

13. नवाब साहब के किन हावभाव से महसूस हुआ कि लेखक से बातचीत करना वे नहीं चाहते ?

14. लेखक ने नवाब साहब कों नई कहानी का पात्र क्यों कहा हैं ?

15. क्या विना विचार घटना और पात्रों के कोई कहानी लिखी जा सकती है ?

16. फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा क्यों हैं ?

17.फादर बुल्के ने सन्यासी की परंपरागत छवि से अलग अपनी नई छवि किस रूप में प्रस्तुत की हैं?

18. फादर कों छाया दार और फल फूल से भरा वृक्ष क्यों कहा गया ?

19. 'नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है' - कैसे ?

20. लेखक फादर की बाहों का दबाव अपनी छाती पर कैसे महसूस कर रहा हैं ?

21. मन्नू भण्डारी ने अपने व्यक्तित्व के बारे मे बताते समय अपने पिता के स्वभाव का उल्लेख क्यों किया ?

22. मन्नू भण्डारी एवं उनके भाइयों का लगाव माता के प्रति क्यों अधिक था ?

23. लेखिका ने अपनी माँ को अपना आदर्श क्यों नहीं माना ?

24. लेखिका को शीला अग्रवाल से क्या प्रेरणाएँ मिली ?

25. काशी में हो रहे कौन से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को दुखी करते थे ?

26. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है ?

27. बिस्मिल्ला खाँ ने काशी को नहीं छोड़ने के लिए क्या – क्या तर्क दिया ?

28. मजहब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ की काशी विश्वनाथ के प्रति अपार श्रद्धा क्यों थी ?

29. कुलसुम की कड़ाही में छनती कचौड़ियाँ बिस्मिल्ला खाँ को संगीतमय क्यों लगती थीं ?

30. 'उधो तुम हो अति बड़भागी' पद में गोपियाँ क्या संदेश देना चाहती हैं ?

31. उधो द्वारा दिये गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह की आग में घी का काम कैसे किया ?

32. ' मरजादा न लही ' के माध्यम से कौन सी मर्यादा न रहने की बात की गई हैं ?

33. गोपियाँ प्रेम की पीड़ा के द्वारा क्या बताना चाहती हैं ?

34. योग साधना के प्रति गोपियों का दृष्टिकोण कैसा हैं ?

35. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार व्यक्त किया हैं ?

36. उधो की चतुराई बढ़ाने के क्या कारण हैं ?

37. गोपियों ने कृष्ण में कौन कौन से परिवर्तन देखें जिसके कारण वे अपना मन वापस लेना चाहती हैं?

38.गोपियों ने क्यों कहा कि 'जो दूसरों को अनीति से दूर करते हैं वे हम पर क्यों अनीति कर रहें है?

39. राजा का क्या धर्म हैं इसके द्वारा गोपियों की कौन-सी विशेषताएँ उभरकर सामने आई हैं ?

40. गोपियों ने अपनी वाणी की चतुराई से किस प्रकार ज्ञानी उधो को हरा दिया ?

41. धनुष तोड़ने वाले को परशुराम सहस्त्रबाहु के समान अपना शत्रु क्यों मानते हैं?

42. आपकी दृष्टि से परशुराम का क्रोध उचित है अनुचित तर्क सहित लिखें ।

43. लक्ष्मण ने धनुष टूटने के संदर्भ में क्या-क्या तर्क दिया ?

44. क्रोधित परशुराम ने लक्ष्मण को छोड़ने के विषय में क्या कहा ?

45. परशुराम द्वारा बार-बार कुठार दिखाने पर लक्ष्मण ने क्या व्यंग किया ?

46. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या विशेषताएँ बताईं ?

47. 'उत्साह' कविता में बादल किन किन अर्थो की ओर संकेत करता है ?

48. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही हैं ?

49. धूल मिट्टी से सने बच्चे झोपड़ी मे खेलते हुये कैसे लगते हैं?

50. यदि बच्चे की माँ माध्यम न होती तो कवि किस किस से वंचित रह जाता ?

51. कवि ने फसल को हजार - हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म क्यों माना है ?

52. मिट्टी के गुणधर्म को पोषित करने मैं हमारी क्या भूमिका हो सकती हैं ?

53. फसल हाथों के जादू की गरिमा कैसे हैं ?

54. कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है ?

55. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं? कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ?

56. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि "लड़की होना पर लड़की जैसा दिखाई मत देना" ?

57. 'आग रोटी सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं' में क्या व्यंग है?

58. 'कन्यादान' कविता का व्यङ्गार्थ लिखिए ।

59. 'संगतकार' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि किन-किन अन्य क्षेत्रों में भी संगतकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ?

60. गायन में संगतकार किस प्रकार की मदद करते हैं ?

61. कविता संगतकार के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने वाले लड़खड़ाते कदमों को संगतकार किस प्रकार सहयोग प्रदान करता है ?

62. प्रतिभावन होते हुए भी संगतकार जैसे लोग अपने को शीर्ष पर क्यों नहीं रखना चाहते ?

63. भोलानाथ का अधिक समय अपने पिता जी के साथ कैसे बीतता था ?

64. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने कि सामाग्री आपके खेल और उसकी सामाग्री से कैसे भिन्न है ?

65. ‘ माता का आँचल ’ कहानी पढ़ते समय आपको अपनी माता - पिता का प्रेम किस प्रकार याद होता है?

66. ‘माता का आँचल’ में बच्चों कि जो दुनिया रची गई हैं वह आपके बचपन की दुनिया से किस प्रकार भिन्न है ?

67. ‘ नाक ’ मान सम्मान और प्रतिष्ठा सूचक कैसे है यह बात इस पाठ में व्यंग के रूप में कैसे उभरी है?

68. जार्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे ?

69. मूर्तिकार ने नाक लगाने के लिए क्या क्या प्रयास किए ?

70. गंतोक को ‘ मेहनतकश बादशाहों का शहर ’ क्यों कहा गया है ?

71. गंतोक में श्वेत और रंगीन पताकाओं को किन–किन अवसरों पर फहराया जाता है ?

72. प्रकृति के विराट रूप को देखकर लेखिका की अनुभूति कैसी थी ?

73. गंतोक में प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है ?

74. गंतोक को क्यो कहा गया है कि आकाश और तारे लगता है धरती पर उतार आए हैं ?

75. आपको प्रकृति की सुंदरता देखकर कैसा अनुभव होता है ?

व्याकरण

रेखांकित पदों का परिचय दीजिये -

1. **जल्दी** चलो वरना गाड़ी छूट जाएगी |

2. लोग **धीरे-धीरे** उस सँकरे रास्ते से ताज महल की ओर बढ़ रहे थे |

3. कल हमने **ताजमहल** देखा |

4. **यह** विद्यालय हमारा है ।

5. **सफलता** परिश्रम से मिलती है ।

6. दिनेश कक्षा **दसवीं** में पढ़ता है ।

7. मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ जिसने तुम्हारी सायकल चुराई है| (रचना के आधार पर वाक्य)

8. प्रात: काल होता है और चिड़िया चहचहाने लगती हैं | (रचना के आधार पर वाक्य)

9. जो सबकी भलाई करता है वह सबका प्रिय होता है | (रचना के आधार पर वाक्य)

10. जब भी जाना चाहो , आप चले जाओ | (रचना के आधार पर वाक्य)

11. जो समुद्र मे गोता लगाएगा वह ही मोती पाएगा | (रचना के आधार पर वाक्य)

12. मजदूर मेहनत करता है लेकिन उसे उसका लाभ नहीं मिलता | (रचना के आधार पर वाक्य)

13. जो लोग परिश्रम करते हैं उन्हे कभी निराश नहीं होना पड़ता | (सरल वाक्य में बदले)

14. चातक थोड़ी देर चुप रह कर बोला | (मिश्र वाक्य में बदले)

15. किवाड़ खुलने की आवाज सुनकर लोग जग गए | (मिश्र वाक्य में बदले)

16. मैंने उसे पढ़ा कर नोकरी दिलवाई | (संयुक्त वाक्य में बदले)

17. कम रोशनी में पढ़ने के कारण विद्यार्थी अपनी आंखे गवा बैठा | (संयुक्त वाक्य में बदले)

18- निर्देशानुसार वाक्य को परिवर्तित कीजिए-

1- आप विद्यालय जाकर पढ़ाई करें । [संयुक्त वाक्य]

2- यह कलम मैंने बाजार से खरीदा है । [मिश्र वाक्य]

3- भारत ऐसा देश है जिसे सोने का चिड़िया कहा जाता था। [सरल वाक्य]

4- सत्य बोलने वाला व्यक्ति किसी से नाही डरता है ।

5- दिनेश घर जाकर सो गया। [संयुक्त वाक्य]

6- जहां दो नदियां मिलती हैं उसे संगम कहते हैं । [सरल वाक्य]

7- जो व्यक्ति ईमानदार होता है उसकी इज्जत सब कराते हैं ।

[आश्रित उपवाक्य को छांटिए और उसका प्रकार भी लिखिए]

8-शिक्षक ने कहा कि कल विद्यालय बंद रहेगा।[आश्रित उपवाक्य छांटकर नाम लिखें]

9- तुम जहां जा रहे हो मैं वहाँ जा चुका हूँ।[आश्रित उपवाक्य छांटकर नाम लिखें]

10 जब मैं यहाँ आया वह सो रहा था । [आश्रित उपवाक्य छांटकर नाम लिखें]

11- मैं लिख रहा हूँ । [वाच्य का नाम लिखें]

12- सरकार ने बाढ़ पीड़ितों को सहायता दी। [कर्म वाच्य में बदलें]

15- माली के द्वारा पौधों को पानी दिया गया। [कर्तृ वाच्य में बदलें]

16- चलो अब सोते हैं । [भाव वाच्य में बदलें]

17- आभा लिखती है। [भाव वाच्य में बदलें]

18- ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक लगाया । [कर्म वाच्य मे बदलें]

19- रमेश के द्वारा पढ़ा जाता है। [वाच्य का नाम]

20- माँ बैठ नहीं सकती। [भाव वाच्य में बदलें] ।

21- रे नृप बालक कल बस, बोलत तोहि न सँभार । [रस का नाम]

22- वीर और करुण रस का स्थायी भाव क्या है ?

23- हास्य रस का कोई उदाहरण लिखिए।

24- 'यशोदा हरि पालने झुलावें' रस का नाम लिखिए।

25- आलंबन, आश्रय और उद्दीपन से आप क्या समझते हैं ?

****

प्रश्न - पत्र प्रारूप BLUE PRINT कक्षा - दसवीं (10) कोड 002 - अ

क्र..	विषय - विस्तार	बोधात्मक			ज्ञानात्मक			रचनात्मक			पू.
		अ.ल	लघु	दीर्घ	अ.ल	लघु	दीर्घ	अ.ल	लघु	दीर्घ	
1	अपठित गदयांश	2(1)	2(1)			2(1)			2(1)		**08**
2	अपठित पदयांश	1(1)	2(2)		1(1)	2(1)		1(1)			**07**
3	वाक्य भेद	1(1)			1(1)			1(1)			**03**
4	वाच्य	2(2)			2(2)						**04**
5	पद परिचय				2(2)			2(2)			**04**
6	रस	1(1)			2(2)		1(1)				**04**
7	पाठित गदयांश पर आधारित प्रश्न		2(2)		2(2)			1(1)			**05**
8	गद्‌य पाठों से प्र.		4(2)			4(2)					**08**
9	पदयांश पर अर्थ ग्रहण के प्रश्न	2(2)			2(2)		1(1)				**05**
10	पदयांश पाठों से प्र.		4(2)			4(2)					**08**
11	पूरक पुस्तिका (मूल्यपरक)						4(1)				**04**
12	निबंध			2(-)			3(-)			5(1)	**10**
13	पत्र	1(-)			1(-)					3(1)	**05**
14	विज्ञापन	1(-)				2(1)				2(1)	**05**
	कुलभार:	**11**	**14**	**2**	**13**	**14**	**9**	**5**	**2**	**10**	**80**

नोट : कोष्ठक के बाहर अंक तथा भीतर प्र. संख्या दी गई है ।

आदर्श प्रश्नपत्र 2018 - 2019

विषय :हिन्दी **कक्षा :दसवीं** **समय :3.00 घंटे** **पूर्णांक :80**

निर्देश - (क) इस प्रश्न-पत्र में चार खंड हैं |

(ख) सभी खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देने अनिवार्य हैं,उत्तर यथा संभव क्रमानुसार दें |

(ग) लेख सुंदर एवं सुस्पष्ट हो,वर्तनी का उचित ध्यान रखें |

"खण्ड -क"

प्रश्न :-1) निम्नलिखित गदयांश को ध्यान से पढ़कर नीचे दिये गए प्रश्नों उत्तर लिखिए |

जब मनुष्य सोया रहता है ,वह कलियुग में होता है । जब वह बैठ जाता है ,तब द्वापर में होता है । जब वह उठ खड़ा होता है ,तब त्रेता में होता है और जब चलने लगता है, तो सतयुग में पहुँच जाता है । इसीलिए बार - बार कहा गया है कि चलते रहो । जीवन चलने और आगे बढ़ने का नाम है । पर्यटन भी तो चलने , निरंतर आगे बढ़ने और नित नई खोज करने की प्रक्रिया है। पर्यटन अपने आप में योग साधना भी है -यम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि । पतंजलि ने योग के आठ अंग बताएं हैं । ये सभी पर्यटन में सम्मिलित हैं । पर्यटन का आरम्भ होता है ,शारीरिक काम से । हमारे देश में पर्यटन माध्यम है - एकता के सूत्र में पिरोने की कोशिश का । अनेकता में एकता की स्थापना हेतु मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरूद्वारे, दरगाह सभी धर्मों के लोगों को एक सूत्र में बांधते हैं । देश के चारों कोनों में आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ धर्म के माध्यम से देश को जोड़ते हैं ।

(1) 'बार -बार चलते रहो' क्यों कहा गया है? (2)

(2) पतंजलि ने योग के कितने अंग बताए हैं ? किन्ही चार के नाम लिखें । (2)

(3) एकता में अनेकता की स्थापना कौन करते हैं ? (2)

(4) पर्यटन की तुलना किस साधना से की गई है ? (1)

(5) धर्म के माध्यम से देश को कौन जोड़ते हैं ? (1)

प्रश्न :-(2) निम्नलिखित पदयांश को ध्यान से पढ़कर नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

अरे चाटते जूठे पत्ते जिस दिन मैंने देखा नर को
उस दिन सोचा ; क्यों ना लगा दूं आज आग इस दुनिया भर को
यह भी सोचा : क्यों न टेंटुआ घोटा जाए जगतपति का ?
जिसने अपने ही स्वरुप को दिया रूप घृणित विकृति का ।
जगपति कहाँ ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढ़ेरी,
वरना समता संस्थापन में लग जाती क्यों इतनी देरी ?

(1) कवि के क्रोध का क्या कारण है ? (2)

(2) कवि किसका टेंटुआ दबाने की बात करते हैं और क्यों ? (2)

(3) टेंटुआ घोटने से कवि का क्या तात्पर्य है ? (1)

(4) काव्यांश में कैसे भाव व्यक्त हुए हैं? (1)

(5) जगतपति शब्द में कौन सा समास है ? (1)

“खण्ड - ख ”

प्रश्न 3:- निर्देशानुसार उत्तर दें - (1x3=3)

(i) रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं ? नाम लिखें ।

(ii) जो लोग ईर्ष्या करते हैं ,मुझे पसंद नहीं । (सरल वाक्य में बदलें)

(iii) कहानी मज़ेदार और दिलचस्प थी । (मिश्र वाक्य में बदलिए)

प्रश्न 4-: निर्देशानुसार उत्तर दीजिये - (1x4 =4)

(i) निशा ने कहानी की पुस्तक खरीदी । (कर्मवाच्य में बदलें)

(ii) पिताजी से अखबार पढ़ा जाता है । (कर्मवाच्य में बदलें)

(iii) सरिता नाच रही है । (भाववाच्य में बदलें)

(iv) माताजी मंदिर जाती हैं । (वाच्य भेद बताएं)

प्रश्न:-5 रेखांकित पदों का पद-परिचय दें । (1X4=4)

(i) सफलता परिश्रम करने वालों के चरण चूमती है |

(ii) वह नित्य घूमने जाता है।

(iii) यह किताब मेरी है |

(iv) लता मंगेशकर प्रसिद्ध गायिका हैं |

प्रश्न :-6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (1X4 =4)

(i) वीभत्स रस की परिभाषा दीजिये ।

(ii) श्रृंगार रस का स्थायी भाव क्या है ।

(iii) ‘प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी’ काव्य पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखें।

(iv) वीर रस का एक उदाहरण दें ।

“खंड-ग ”

प्रश्न (7) :- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़कर नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे ‘परिमल’के वे दिन याद आते हैं जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बंधे जैसे थे, जिसके बड़े फ़ादर बुल्के थे। हमारे हंसी-मज़ाक में वे निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वे गंभीर बहस करते। हमारी रचनाओं पर बेबाक राय देते और हमारे संस्कारों और उत्सवों में वे बड़े भाई और पुरोहित की तरह खड़े होकर हमें आशीषों से भर देते।

(i) लेखक की दृष्टि में फ़ादर को याद करना, उन्हें देखना और उनसे बात करना किन अनुभवों के समान था ? (2)

(ii) लेखक को परिमल के दिनों के कौन से घटनाक्रम याद आते हैं ? (2)

(iii) घर के उत्सवों में फ़ादर की क्या भूमिका होती थी ? (1)

प्रश्न 8 :- निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें । (2X4=8)

(i) बालगोबिन भगत को गृहस्थ और सन्यासी क्यों कहा गया ?

(ii) कैप्टन कौन था और उसे क्या बात आहत करती थी ?

(iii) लेखिका मन्नू भंडारी अपने पिताजी की किस विरोधाभासी प्रवृति पर विचार करती है ?

(iv) सुषिर वाद्यों से क्या अभिप्राय है ? शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि क्यों दी गई होगी ?

प्रश्न (9) :- निम्नलिखित पठित पदयांश को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों के संक्षेप उत्तर लिखिए-

यश है या ना वैभव है , मां है ना सरमाया ;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया ।
प्रभुता का शरण - बिम्ब केवल मृगतृष्णा है ,
हर चन्द्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है ।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन ,
छाया मत छूना मन, होगा दुःख दूना ।

(i) मृगतृष्णा से कवि का क्या अभिप्राय है, यहाँ मृगतृष्णा किसे कहा गया है ? (2)

(ii) छाया शब्द से कवि का क्या तात्पर्य है ? (2)

(iii) 'हर चन्द्रिका में छुपी एक रात कृष्णा है '-पंक्ति से कवि किस तथ्य से अवगत करवाना चाहता है ? (1)

प्रश्न 10:- पठित कविताओं के आधार पर निम्न प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें - (2X4=8)

(क) लक्ष्मण ने धनुष खंडित होने के क्या-क्या कारण बताए हैं ?

(ख) गोपियों ने योग साधना को अपने लिए किस तरह अनुपयुक्त बताया ?

(ग) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को ' लड़की होना पर लड़की जैसे दिखाई मत देना' सीख क्यों दी है ?

(घ) कवि निराला ने फागुन का सौन्दर्य वर्णन किस प्रकार किया है ?

प्रश्न-11 माता का आँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक समझाइए।

अथवा

'नाक' मान सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है| यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है? (4)

“खंड- घ”

प्रश्न:-12 दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए - (10)

(क) पर्वतीय सौन्दर्य :

संकेत बिंदु- भूमिका, मानव प्रेम, मानव के चहुंमुखी विकास में सहायक , संरक्षण के प्रति जनता के कर्तव्य , सौन्दर्य को बचाये रखने के उपाय, उपसंहार

(ख) इंटरनेट का प्रभाव :

संकेत बिंदु - भूमिका, इतिहास और विकास , इंटरनेट संपर्क, इंटरनेट सेवाएं, भारत में इंटरनेट, भविष्य की दिशाएं, उपसंहार |

(ग) व्यायाम और स्वास्थ्य

संकेत बिंदु - भूमिका, अर्थ, स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास, व्यायाम से शरीर तथा मन पर नियंत्रण के क्षमता का विकास, अनेक प्रकार के व्यायाम और इनके लाभ ,उपसंहार ।

(घ) मेरे जीवन का आदर्श :

संकेत बिंदु - भूमिका, आदर्श कौन, शैक्षिक उपलब्धियां, जीवन की सफलताएँ, प्रेरणा का स्रोत, उपसंहार ।

प्रश्न-13 :- आये दिन चोरी और झपटमारी के समाचारों को पढ़कर जो विचार आपके मन में आते हैं, उन्हें किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र के रूप में लिखें ।

अथवा

प्रभात आपका मित्र है और उसने नेशनल स्तर पर ऊंची कूद में स्वर्ण पदक प्राप्त कर देश का नाम रोशन किया है. उसे बधाई देते हुए एक पत्र लिखें। (5)

प्रश्न 14 - मिलन जूस कॉर्नर का एक आकर्षक विज्ञापन 25-50 शब्दों में बनायें ।

अथवा

आपके शहर में ऊनी कपड़ों की सेल लगी है । इसके लिए 25-50 शब्दों का एक विज्ञापन तैयार करें । (5)

****

आदर्श प्रश्न पत्र 2

कक्षा- दसवीं (X)

विषय - हिंदी (पाठ्यक्रम -'अ') कोड - 002

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

निर्देश :- **सामान्य निर्देश:**

- कृपया जाँच करें की इस प्रश्न पत्र में14 प्रश्न है |
- प्रश्न का उत्तर लिखने से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें|
- इस प्रश्न पत्र के चार खंड है- क, ख, ग, घ ।
- चारों खण्डों के प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है |
- प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय निर्धारित किया गया है ।
- यथा संभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए |

खंड- 'क'

प्रश्न 1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तरों के सही उत्तर लिखिए :- 8

हमारे देश के त्योहार चाहे धार्मिक दृष्टि से मनाए जा रहे हो या नए वर्ष के आगमन के रुप में फसल की कटाई एवं खलिहानों के भरने की खुशी में हों या महापुरुषों की याद में सभी अपनी विशेषताओ एवं क्षेत्रीय प्रभाव से युक्त होने के साथ ही देश की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता को मजबूती प्रदान करते हैं| ये त्योहार जहाँ जनमानस में उल्लास उमंग एवं खुशहाली भर देती है। वहीं हमारे अंदर देशभक्ति एवं गौरव की भावना के साथ-साथ विश्व बंधुत्व एवं समन्वय की भावना भी बढ़ती है। इनके द्वारा महापुरुषों के उपदेश हमें बार- बार इस बात की याद दिलाते हैं कि सद्भावना द्वारा ही हम प्रगति की और बढ़ सकते हैं। इन त्यौहारों के माध्यम से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि वास्तव में धर्मों के मूल लक्ष्य तक पहुँचने के तरीके अलग- अलग है।

प्रश्न

1) देश की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता को कौन मजबूती प्रदान करता है? 2

2) त्यौहारों से हमें क्या सीख मिलती है? 2

3) हम उन्न्ती की और किस प्रकार बढ़ रहे हैं? 2

4) 'हार' शब्द में उपसर्ग लगाकर एक शब्द बनाइए? 1

5) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । 1

प्रश्न 2 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

नर जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हो तेरे चरणों पर माँ
मेरे श्रम-संचित सब फल
जीवन के रथ पर चढ़कर
सदा मृत्यु पथ पर बढ़कर

महाकाल के खरतर शर सह
सकूँ मुझे तू कर दृढ़तर
जागे मेरे उर में तेरी
मूर्ति अश्रु जल धौत विमल
दृगजल से पा बल बलि कर दूँ
जननि जन्म-श्रम- संचित फल
बाधाएँ आये तन पर
देखूँ तुझे नयन भर
मुझे देख तू सजल दृगों से
अपलक उर के शतदल पर
क्लेद युक्त अपना तन दूँगा
मुक्त करूँगा तुझे अटल
तेरे चरणों पर देकर बलि
सकल श्रेय श्रम संचित फल

प्रश्न-

1 कवि माता के चरणों मे क्या अर्पित करना चाहता है? 2

2 कवि अपनी किस माता से दृढ होने की प्रार्थना करता है? 2

3 कवि अपने हृदय में माता की कैसी मूर्ति देखना चाहता है? 1

4 कवि अपनी माता को कैसे मुक्त करवाएगा? 1

5 काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । 1

खंड - 'ख'

प्रश्न3निर्देशानुसार वाक्य बदलिए:-

(क) बच्चे ने खाना खाया और सो गया । (सरल वाक्य) 1

(ख) जब सवेरा होता है तब सारा चराचर जाग उठता है । (संयुक्त वाक्य) 1

(ग) साहसी व्यक्ति के लिए कोई भी कार्य दुष्कर नहीं होता । (मिश्र वाक्य) 1

प्रश्न4 निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए :-

(क) अब मैं चल नहीं सकता (भाव वाच्य में) 1

(ख) मोहन सिनेमा नहीं देखता । (कर्म वाच्य में) 1

(ग) राम से पढ़ा नहीं जाता । (कर्तृ वाच्य में) 1

(घ) छात्र कक्षा में पढ़ते हैं । (वाच्य बताइए) 1

प्रश्न5 रेखांकित पदो का परिचय दीजिए:-

(क) इस संसार में सत्य की सदा जीत होती है । 2

हरचंद्रिकामेंछिपीएकरातकृष्णाहै ।
जोहैयथार्थकठिनउसकातूकरपूजन
छायामतछूनामनहोगादुखदूना ।

(क) मृगतृष्णाकाक्याअर्थहै? 2

(ख) यथार्थकेपूजनकाक्याअर्थहै? 2

(ग) कविऔरकविताकानामलिखिए । 1

प्रश्न10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :-

(क) 'छाया मत छूना' पाठ का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए । 2

(ख) गायकों को गायन के दौरान कौन- कौन सी कठिनाइयाँ आती हैं ? 2

(ग) यदि कवि की पत्नी माध्यम न बनी होती तो वह क्या नहीं देख पाता ? यह दंतुरित मुस्कान पाठ के आधार पर लिखिए । 2

(घ) लक्ष्मण की कटु बातें सुनकर परशुराम ने क्या प्रतिक्रिया की ? 2

प्रश्न 11. 'साना साना हाथ जोड़ि' - यात्रा वृतांत पाठ के आधार पर जितेन नार्गे की गाइड की भूमिका को ध्यान में रखते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुणहोते हैं ? 4

खंड - 'घ'

प्रश्न12. दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में एक निबंध लिखिए : - 10

(क) आतंकवाद : एक चुनौती

संकेत - बिंदु :-आतंकवाद विश्व की समस्या , यह निन्दनीय है , आतंकवाद का रूप, भारत में आतंकवाद ।

(ख) महँगाई की समस्या

संकेत - बिंदु :-वर्तमान समय में महँगाई, जीवन उपयोगी वस्तुएँ, महँगाई वृद्‌धि के कारण , इससे निपटने केउपाय ।

(ग) जीवन में व्यायाम का महत्त्व

संकेत - बिंदु :-शारीरिक स्वास्थ्य आवश्यक, व्यायाम की आवश्यकता, व्यायाम के लाभ, सुंदर स्वस्थ्य शरीर का स्वरूप, मन पर अनुकूल प्रभाव, समस्त आनंदों का स्रोत व्यायाम ।

प्रश्न 13. आपके निकट के अस्पताल में आवश्यक उपकरणों एवं औषधियों के अभाव के कारण रोगियों को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है । इस समस्या की ओर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए किसी समाचार पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए । 5

अथवा

ग्रीष्मावकाश में आपके पर्वतीय मित्र ने आपको आमंत्रित कर अनेक दर्शनीय स्थलों की सैर कराई । इसके लिए उसका आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद पत्र लिखिए ।

प्रश्न 14. बाजार में नया साबुन आया है -"सुगंध " | विज्ञापन तैयार कीजिए |5

अंक-योजना

विषय - हिंदी (पाठ्यक्रम -'अ') कोड - **002**

समय : ३ घंटे   पूर्णांक :80

प्रश्न 1

1 देश की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता को त्योहार मज़बूती प्रदान करता है । 2

2 त्योहारों से हमें निम्नलिखित लाभ है-

- त्योहार हमें महापुरुषों कि याद दिलाते है
- ये देश की एकता और अखंडता को मज़बूत करते है
- ये देशभक्ति की भावना को बढाते है

3 हम सद्विचारों एवं सद्भावना से उन्नती की ओर बढ़ सकते हैं 2

4 उपहार 1

5 त्योहारों का महत्त्व 1

प्रश्न 2.

1. कवि माता के चरणों में अपने जीवन के सभी स्वार्थ अर्पित करना चाहता है। 2

2. कवि अपने भारत माता से दृढ़ होने कि प्रार्थना करता है। 2

3. कवि अपने ह्रदय मे माता के अश्रु-जल धौत विमल जैसी मूर्ति देखना चाहता है 1

4. कवि अपनी माता को अपना जीवन बलिदान करके मुक्त कराएगा 1

5. मातृ-वंदना 1

खंड - 'ख'

प्रश्न3.(क) बच्चा खाना खाकर सो गया । 1

(ख) सवेरा होता है और सारा चराचर जाग उठता है । 1

(ग) जो व्यक्ति साहसी है, उसके लिए कोई भी कार्य दुष्कर नहीं है। 1

प्रश्न 4 वाच्य परिवर्तन

(क) मुझसे अब चला नहीं जाता । 1

(ख) मोहन से सिनेमा नहीं देखा जाता । 1

(ग) राम पढ़ नहीं सकता । 1

(घ) कर्तृ वाच्य 1

प्रश्न 5 पद परिचय

(क) इस- सार्वनामिक (संकेतवाचक) विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग1

जीत- भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक 1

(ख) परिश्रम- भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, करण कारक (धनप्राप्त होने का साधन) 1

धन- जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक 1

प्रश्न 6 (क)वीर रसः- उत्साह स्थायी भाव । जब विभाव, अनुभाव और संचारीभावों के सहायता से पुष्ट होकर आस्वादन के योग्य हो जाता है तब वीर रस निष्पन्न होता है । 1

(ख) श्रृंगार रस का स्थायी भाव है - रति । 1

(ग) करुण रस । 1

(घ) उदाहरण **-** सिर घोट **-** मोट पर चुटिया थी लहराती**,**
थी तोंद लटक घुटनों को छू **-** छाती ।
जब मटक **-** मटक कर चल रहे हँसी थी भारी**,**
हो गए लोट **-** पोट देख नर **-** नारी । 1

खंड - 'ग'

प्रश्न 7 (क)काशी के संकट मोचन मंदिर में हर वर्ष संगीत आयोजन होता है । इसमें शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन और वादन के कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं । इस कार्यक्रम में शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ अवश्य रहते हैं ।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ काशी से बाहर जाकर भी इन दोनों मंदिरों के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं । वे जिस भी मंच पर बैठते है शहनाई बजाने से पहले अपना मुँह इन दोनों मंदिरों की तरफ कर लेते हैं ।

(ग) पाठ का नाम **-** नौबतखाने में इबादत**,** लेखक **-** यतींद्र मिश्र ।

प्रश्न 8. (क)एक कहानी यह भी नामक आत्म कथा हमें यह संदेश देती है कि स्वतंत्रता और जन आंदोलन पर केवल पुरुषों का हीअधिकार नहं है स्त्रियाँ भी इसमें बराबर का हिस्सेदार होनीचाहिए । इसे पढ़कर लड़कियों और स्त्रियों को भी संघर्ष करनेकी प्रेरणा मिलती है । 2

(ख)महावीर प्रसाद द्विवेदी आधुनिक चेतना के सुधारवादी लेखक रहे हैं । उन्होंने परंपराओं को भी सवारने और बदलने की वकालत का है । वे स्पष्ट कहते है कि " मान लीजिए कि पुराने जमाने में

भारत के एक भी स्त्री पढ़ी-लिखी न थी । न सही, उस समय स्त्रियों को पढ़ाने की जरूरत न समझी गई होगी पर अब तो है । अतएव पढ़ना चाहिए । हमें सैकड़ों पुराने नियमों, आदेशों और प्रणालियों को तोड़ दिया है या नहीं ? तो, चलिए, स्त्रियों को अपढ़ रखने की इस पुरानी चाल को भी तोड़ दे । 2

(ग) लेखक विनाश की संस्कृति को संस्कृति नहीं, असंस्कृति कहता है । उसके अनुसार जिस खोज की प्रेरणा में कल्याण की भावना नहीं होता, वह असंस्कृति है । 2

(घ) बिस्मिल्ला खाँ ने संगीत की वर्णमाला का पहला अक्षर रसूलन बाई और बतूलन बाई नामक दो गायिका बहनों के गीतों को सुनकर सीखा । जब अमरुद्दीन शहनाई का रियाज़ करने के लिए बालाजी के मंदिर जाया करता था तो रास्ते में इन दोनों गायिकाओं के मधुर स्वर सुनने को मिलते थे । वही से उन्हे संगीत के प्रति रूचि हुई । 2

प्रश्न 9 (क) गर्मी की चिलचिलाती धूप में जब रेगिस्तान में या दूर सड़क पर पानीके होने का एहसास को मृगतृष्णा कहते है।मृगतृष्णा का अर्थ है -'मिथ्या का आभास होना ।'

(ख) यथार्थकेपूजनकाअर्थहै- जीवन के कठोर सत्य का सामना करना।अर्थात हमें वास्तविकता के कठोर धरातल पर रहना चाहिएन कि स्वप्न लोक में विचरण करना चाहिए ।

(ग) कवि- गिरिजा कुमार माथुर; कविताकानाम- छाया मत छूना।

प्रश्न 10 (क) छाया मत छूना कविता उद्‌देश्यपूर्ण है । कविता में कवि का संदेश यह है कि अप्राप्य के पीछे भागना व्यर्थ है । अच्छा तो यह है व्यक्ति अप्राप्य को भूलकर वर्तमान में जीए और भविष्य की सुधि ले । व्यक्ति को कठोर यथार्थ को स्वीकार करना चाहिए और पूरी कर्मठता के साथ जीवन संघर्ष में लग जाना चाहिए । 2

(ख) गायकों को गायन के दौरान अनेक कठिनाइयाँ आती है । कभी- कभी ऊँचा स्वर उठाते समय उनका गला बैठ जाता है, कभी गाने की शक्ति समाप्त हो जाती है, कभी उत्साह मंद पड़ जाता है, कभी स्वर टूटने लगता है, कभी अलाप करते-करते गायक मस्ती में इतना खो जाता है कि उसे गीत का मूल स्वर भूल जाता है । इस प्रकार वह भटक जाता है । 2

(ग)यदि कवि के पत्नी माध्यम न बनी होती तो वह बालक की मनमोहक मुसकान कभी नहीं देख पाता । 2

(घ)लक्ष्मण की कटु बातें सुनकर परशुरामअत्यंत क्रोधित होते हुए उन्होंने तुरंत अपना फरसा संभाल लिया । वे लक्ष्मण को मारने के लिए तत्पर हो गए । 2

प्रश्न 11 जितेन नार्गे एक ईमानदार एवं कुशल गाइड है। वह पर्यटकों से ताल-मेल रखता है । कुशल गाइड के ये प्रमुख गुण हैं:-

(i) उसे स्थानीय निवासी होना चाहिए जिससे वह उस क्षेत्र का भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थिति को जानता हो ।

(ii) उसे अनेक भाषाओं का ज्ञान हो

(iii) पर्यटकों की रुचि व इच्छाओं का सम्मान कर सकें एवं यात्रियों को रास्ते आने वाले दर्शनीय स्थलों की जानकारी देता रहे ।

(iv) सम्प्रेषण क्षमता एवं आत्मविश्वासी हो ।4

खंड - 'घ'

प्रश्न 12 निबंधलेखन-:	10
प्रस्तावना और उपसंहार--------	2+2=4
विषय वर्णन----------------------------	4
भाषा-शुद्‌धता	2
13 . पत्र-लेखन -:	5
प्रारंभ एवं अंत की औपचारिकताओं का निर्वाह---------–	2
विषयवस्तु व प्रस्तुति----------------------------	2
भाषा एवं प्रभावात्मकता-----------------------------	2
14 विज्ञापन	5
भाषा	1
विषयवस्तु	2
प्रस्तुतीकरण	2

SET-1

Series JMS/2

कोड नं.
Code No. **3/2/1**

रोल नं.
Roll No. ☐☐☐☐☐☐☐

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **7** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)
(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 80*

Time allowed : 3 hours *Maximum Marks : 80*

सामान्य निर्देश :

(i) *इस प्रश्न-पत्र में* ***चार*** *खण्ड हैं – क, ख, ग और घ ।*

(ii) *चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना* ***अनिवार्य*** *है ।*

(iii) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

दार्शनिक अरस्तू ने कहा है – "प्रत्येक व्यक्ति को उचित समय पर, उचित व्यक्ति से, उचित मात्रा में, उचित उद्देश्य के लिए, उचित ढंग से व्यवहार करना चाहिए ।" वास्तव में प्रत्येक प्राणी का संबंध एक-एक क्षण से रहता है, किन्तु व्यक्ति उसका महत्त्व नहीं समझता । अधिकतर व्यक्ति सोचते हैं कि कोई अच्छा समय आएगा तो काम करेंगे । इस दुविधा और उधेड़बुन में वे जीवन के अनेक अमूल्य क्षणों को खो देते हैं । किसी व्यक्ति को बिना हाथ-पाँव हिलाए संसार की बहुत बड़ी सम्पत्ति छप्पर फाड़कर कभी नहीं मिलती । समय उन्हीं के रथ के घोड़ों को हाँकता है, जो भाग्य के भरोसे बैठना पौरुष का अपमान समझते हैं । जो व्यक्ति श्रम और समय का पारखी होता है, लक्ष्मी भी उसी का वरण करती है । समय की कीमत न पहचानने वाले समय बीत जाने पर सिर धुनते रह जाते हैं । समय निरंतर गतिमान है । इसलिए हमें समय का मूल्य समझना चाहिए । साथ ही समयानुसार काम भी करना चाहिए । सफल जीवन की यही कुंजी है ।

(क) जीवन के अमूल्य क्षणों को किस प्रकार के व्यक्ति खो देते हैं ? *2*

(ख) भाग्य के भरोसे बैठना पौरुष का अपमान क्यों कहा गया है ? *2*

(ग) दार्शनिक अरस्तू के कथन का आशय लिखिए । *2*

(घ) लक्ष्मी किसे प्राप्त होती है ? *1*

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए । *1*

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

बहुत घुटन है बंद घरों में, खुली हवा तो आने दो,
संशय की खिड़कियाँ खोल, किरनों को मुस्काने दो ।

ऊँचे-ऊँचे भवन उठ रहे, पर आँगन का नाम नहीं,
चमक-दमक, आपा-धापी है, पर जीवन का नाम नहीं
लौट न जाए सूर्य द्वार से, नया संदेशा लाने दो ।

हर माँ अपना राम जोहती, कटता क्यों वनवास नहीं
मेहनत की सीता भी भूखी, रुकता क्यों उपवास नहीं ।
बाबा की सूनी आँखों में चुभता तिमिर भागने दो ।

हर उदास राखी गुहारती, भाई का वह प्यार कहाँ ?
डरे-डरे रिश्ते भी कहते, अपनों का संसार कहाँ ?
गुमसुम गलियों को मिलने दो, ख़ुशबू तो बिखराने दो ।

(क) 'ऊँचे-ऊँचे भवन उठ रहे, पर आँगन का नाम नहीं' – पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए । *2*

(ख) सूर्य द्वार से ही क्यों लौट जाएगा ? *2*

(ग) आज रिश्तों के डरे-डरे होने का कारण आप क्या मानते हैं ? *1*

(घ) 'तिमिर' शब्द का अर्थ लिखिए । *1*

(ङ) कवि ने क्या संदेश दिया है ? *1*

अथवा

मेरा माँझी मुझसे कहता रहता था
बिना बात तुम नहीं किसी से टकराना ।
पर जो बार-बार बाधा बन के आएँ,
उनके सिर को वहीं कुचल कर बढ़ जाना ।
जानबूझ कर जो मेरे पथ में आती हैं,
भवसागर की चलती-फिरती चट्टानें ।
मैं इनसे जितना ही बचकर चलता हूँ,
उतनी ही मिलती हैं, ये ग्रीवा ताने ।
रख अपनी पतवार, कुदाली को लेकर
तब मैं इनका उन्नत भाल झुकाता हूँ ।
राह बनाकर नाव चढ़ाए जाता हूँ,
जीवन की नैया का चतुर खिवैया मैं
भवसागर में नाव बढ़ाए जाता हूँ ।

(क) राह में आने वाली बाधाओं के साथ कवि कैसा व्यवहार करता है ? *2*

(ख) कवि ने हमें क्या प्रेरणा दी है ? स्पष्ट कीजिए । *2*

(ग) कवि ने अपना माँझी किसे कहा है ? *1*

(घ) 'उन्नत भाल' का क्या आशय है ? *1*

(ङ) 'जीवन की नैया का चतुर खिवैया' किसे कहा गया है ? *1*

खण्ड ख

3. निम्नलिखित में से ***किन्हीं तीन*** का निर्देशानुसार उत्तर लिखिए : *1×3=3*

(क) मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु के साथ ही फ़ादर के शब्दों से झरती शांति भी याद आ रही है । (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ख) रात हुई और आकाश में तारों के असंख्य दीप जल उठे । (सरल वाक्य में बदलिए)

(ग) माँ ने कहा कि शाम को जल्दी घर आ जाना । (रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए)

(घ) पान वाले के लिए यह मज़ेदार बात थी लेकिन हालदार साहब के लिए चकित कर देने वाली । (मिश्र वाक्य में बदलिए)

4. निम्नलिखित में से ***किन्हीं चार*** वाक्यों का निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए : *1×4=4*

(क) हालदार साहब ने पान खाया । (कर्मवाच्य में बदलिए)

(ख) दादा जी प्रतिदिन पार्क में टहलते हैं । (भाववाच्य में बदलिए)

(ग) गांधी जी द्वारा विश्व को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया गया । (कर्तृवाच्य में बदलिए)

(घ) पान कहीं आगे खा लेंगे । (कर्मवाच्य में बदलिए)

(ङ) खिलाड़ी दौड़ नहीं सका । (भाववाच्य में बदलिए)

5. निम्नलिखित वाक्यों में से ***किन्हीं चार*** रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए : *1×4=4*

(क) सुरभि विद्यालय से अभी-अभी आई है ।

(ख) उसने मेरी बातें ध्यानपूर्वक सुनी ।

(ग) शाबाश ! तुमने बहुत अच्छा काम किया ।

(घ) वहाँ दस छात्र बैठे हैं ।

(ङ) परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती ।

6. निम्नलिखित में से ***किन्हीं चार*** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *1×4=4*

(क) 'भयानक रस' का एक उदाहरण लिखिए ।

(ख) निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में रस पहचान कर लिखिए :

तनकर भाला यूँ बोल उठा
राणा ! मुझको विश्राम न दे ।
मुझको वैरी से हृदय-क्षोभ
तू तनिक मुझे आराम न दे ।

(ग) 'जुगुप्सा' किस रस का स्थायी भाव है ?

(घ) 'शांत' रस का स्थायी भाव क्या है ?

(ङ) किस रस को 'रसराज' भी कहा जाता है ?

खण्ड ग

7. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ । धरती से कुछ ज़्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें । पिता जी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना फ़र्ज़ समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे । उन्होंने ज़िंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं... केवल दिया ही दिया । हम भाई-बहिनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका... न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता ।

(क) माँ की उपमा धरती से क्यों की गई है ? *2*

(ख) लेखिका को माँ का कौन-सा रूप अच्छा नहीं लगता था ? क्यों ? *2*

(ग) लेखिका और उसके भाई-बहिनों की सहानुभूति किसके साथ थी ? *1*

8. निम्नलिखित में से ***किन्हीं चार*** प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : *2×4=8*

(क) बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ लिखिए ।

(ख) मन्नू भंडारी और उनके पिता के बीच मतभेद के दो कारण लिखिए ।

(ग) कैप्टन कौन था ? वह मूर्ति के चश्मे को बार-बार क्यों बदल दिया करता था ?

(घ) फ़ादर बुल्के को हिन्दी के बारे में क्या चिंता थी ?

(ङ) खीरा काटने में नवाब साहब की विशेषज्ञता का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए ।

9. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

लखन कहा हँसि हमरे जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ।।
का छति लाभु जून धनु तोरें । देखा राम नयन के भोरें ।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू । मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ।।
बोले चितै परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ।।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही । केवल मुनि जड़ जानहि मोहि ।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही ।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही । बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ।।

(क) परशुराम के क्रुद्ध होने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए ? *2*

(ख) प्रस्तुत काव्यांश के आधार पर लिखिए कि परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा । *2*

(ग) परशुराम के बारे में कौन-सी बात विश्व प्रसिद्ध थी ? *1*

10. निम्नलिखित में से ***किन्हीं चार*** प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : *2×4=8*

(क) 'सूरदास' के पद के आधार पर लिखिए कि गोपियों ने किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं ।

(ख) 'उत्साह' कविता में कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कहता है ? बादल से कवि की अन्य अपेक्षाएँ क्या हैं ?

(ग) 'छाया मत छूना' कविता में 'छाया' शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में हुआ है ? स्पष्ट करते हुए बताइए कि कविता क्या संदेश देती है ।

(घ) 'फ़सल' कविता में 'हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है ? अपने शब्दों में लिखिए ।

(ङ) 'संगतकार' किन-किन रूपों में मुख्य गायक की सहायता करता है ? कविता के आधार पर उसकी विशेष भूमिका को भी स्पष्ट कीजिए ।

11. 'माता का अंचल' नामक पाठ में लेखक ने तत्कालीन समाज के पारिवारिक परिवेश का जो चित्रण किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए । *4*

अथवा

जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता यहाँ तक की भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करता है ? आप इस बारे में क्या सोचते हैं ?

खण्ड घ

12. निम्नलिखित में से ***किसी एक*** विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए : *10*

(क) महानगरों में महिलाओं की सुरक्षा

- जीवन शैली
- कामकाजी महिलाओं की समस्या
- सुरक्षा में कमियों के कारण व सुझाव

(ख) मित्र की परख संकट में

- भले दिनों के मित्र
- बुरे दिनों के मित्र
- मित्र की परख

(ग) मेरी कल्पना का विद्यालय

- विद्यालय में क्या है अनावश्यक
- क्या-क्या है आवश्यक
- विद्यालय और परिवेश

13. आपके क्षेत्र में डेंगू फैल रहा है । स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर उपयुक्त चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए । *5*

अथवा

अपने प्रिय मित्र को पत्र लिखकर धन्यवाद दीजिए कि आड़े वक्त में उसने किस तरह आपका साथ दिया था ।

14. आपके शहर में एक नया वाटर पार्क खुला है, जिसमें पानी के खेल, रोमांचक झूलों, मनोरंजक खेलों और खान-पान की व्यवस्था है । इसके लिए एक विज्ञापन का आलेख लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए । *5*

अथवा

आपके पिताजी अपनी पुरानी कार बेचना चाहते हैं । इसके लिए पूरा विवरण देते हुए एक विज्ञापन का आलेख लगभग 50 शब्दों में तैयार कीजिए ।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016
Website : www.kvsangathan.nic.in
@KVSHQ @KVS_HQ

DESIGNED & PRINTED BY :
CHOUDHARY PRINTING PRESS, Near Mohanpur Devisthan, Punaichak, Patna-800 023
Mob. : 09430906087, 07903299242, T/F: 0612-2546751
E-mail - choudharyprintingpress@gmail.com, Website : www.choudharyprintingpress.com